CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5305

14.6

श्री जिनेन्द्र मुनीन्द्र पूजन संग्रह

5305

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5305

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

卐 श्री ऋषभ जिनेन्द्रायनमः 卐

5305

ॐ

श्री जिनेन्द्र मुनीन्द्र पूजन संग्रह

रचियता:—

भगवत्स्वरूप जैन "भगवत्"

सहायक मन्त्री—श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र ऋषभनगर

(मरसलगंज) मु० पो० फरिहा (मैनपुरी)

卐

प्रकाशक:—

श्री० सेठ सुनहरीलाल जी जैन

संचालक:—"लोकेश आइरन इण्डस्ट्रीज"

बेलनगंज, आगरा।

प्रथमबार=१०००] [मूल्य=नित्य पूजन प्रचार

पुस्तक प्राप्त होने का ठिकाना:—

श्री० सेठ दौलतराम सुनहरीलाल जी जैन

बेलनगंज, आगरा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन पूजा का फल

मेंडक ले मुख कमल दल, जिन पूजन को जात।
गजपगतल मरि स्वर्ग में, भयौ अमर शुभ गात॥
सुवा ले फल आम का, जिन सम्मुख धरि देत।
त्यागि योनि तिर्यंच की, शुभग देव पद लेत॥
भगवज्जिन पूजन करत, पशु पावें पद देव।
शिव पद पावे नर सुधी, करेज़ु नितजिन सेव॥
कोटि काम को छोड़कर, पूजौ जिन पद सार।
मन वच तन 'भगवत्' जजौ, जो होवो भव पार॥

श्री बनारसी प्रेस, जलेसर [एटा] में मुद्रित।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पण

5305

[छप्पय छन्द]

परम पूज्य गुरुवर्य,
संघनायक शुभ ध्यानी।
श्री महावीर सुकीर्ति,
विमलसागर जी ज्ञानीं॥
वड़वानीं चतुमास,
किया दोनों गुरु चेला।
क्षेत्र वन्दना हुई,
हुआ गुरु चरण सुमेला॥
उस स्मृति में ही लिखी,
जिन, मुनि पूजन सार।
सुगुरु कर कमल समर्पण,
"भगवत्" भक्ति सुधार॥

उभय आचार्य पादपद्म सेवकः—

भगवत्स्वरूप जैन 'भगवत्' फरिहा (मैंनपुरी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❁ अनुक्रमणिका ❁

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
१	श्री जिनेन्द्र स्तुति	१
२	विनयपाठ दोहाबली	३
३	स्वस्ति मंगल पाठ	५
४	श्री देवशास्त्र गुरु पूजन	१०
५	श्री विदेह क्षेत्र स्थिति बीस तीर्थंकर और कृत्याकृत्रिम चैत्यालय तथा श्री सिद्ध भगवान पूजा	१६
६	श्री १००८ आदिनाथ जी जिन पूजा	२३
७	श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजा	३०
८	श्री शान्तिनाथ जिन पूजा	३९
९	श्री मुनिसुव्रतनाथ जी पूजा	४७
१०	श्री नेमिनाथ जी जिन पूजा	५६
११	श्री पार्श्वनाथ जी जिन पूजा	६४
१२	श्रीं महावीर जी जिन पूजा	७९
१३	श्री त्रय जिनेन्द्र पूजन	८८
१४	श्रीमदाचार्य शान्तिसागर जी पूजा	९५
१५	श्रीमदाचार्य महावीरकीर्ति जी पूजा	१०४
१६	श्रीमदाचार्य विमलसागर जी पूजा	११०
१७	शान्ति पाठ विसर्जन आदि	११८
१८	आरती श्री ऋषभदेव जी की	१२१
१९	श्री ऋषभ चालीसा	१२२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विश्व वन्द्य चारित्र चक्रवर्ती

परमपूज्य श्री १०८ आचार्य शान्तिसागर जी (दक्षिण)

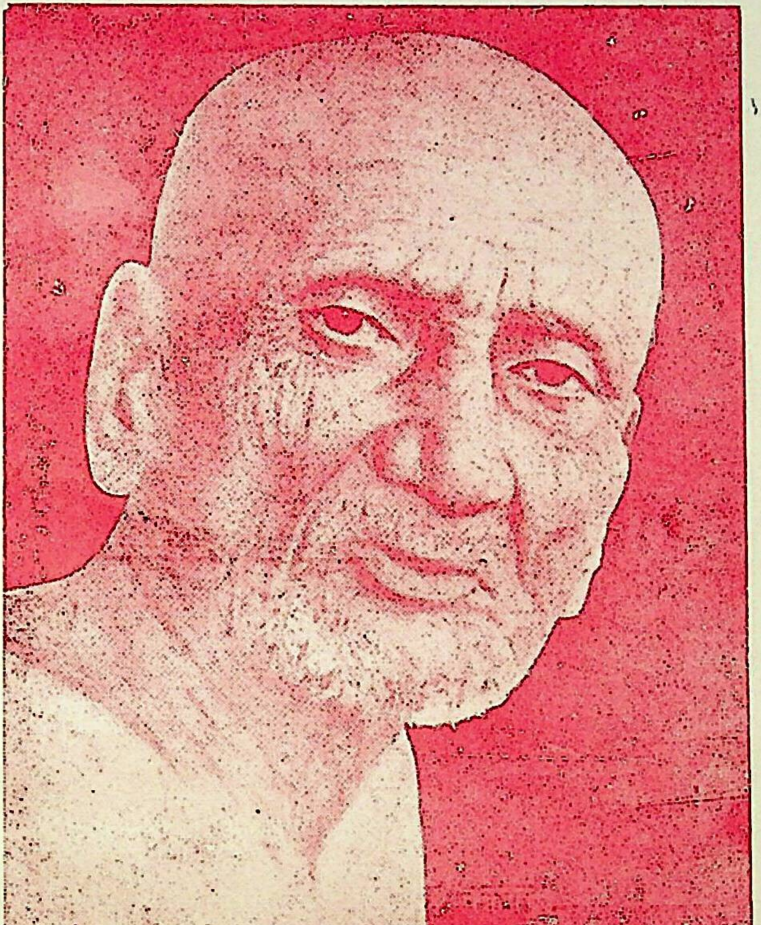

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परम पूज्य, पूज्याराध्य,

श्री १०८ आचार्य वीरसागर जी महाराज

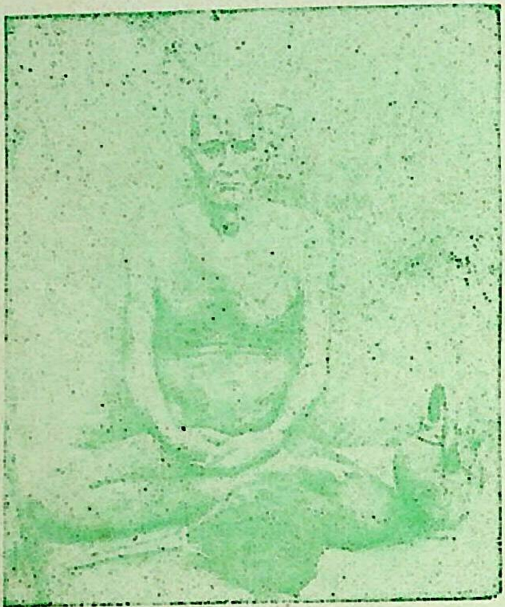

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi .

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
5305

प्रस्तावना

श्रद्धेय भगवत्स्वरूप जो "भगवत्" सहायक मन्त्री श्री ऋषभनगर दि० जैन अतिशय क्षेत्र ट्रस्ट कमेटी जैन समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं में से हैं जिनका सम्पूर्ण जीवन धार्मिक कार्यों में ही गुजारा है और धार्मिक भावना से ओत-प्रोत है उन्होंने धार्मिक साहित्य की वृद्धि भजन पूजन आदि रचनाओं द्वारा की है।

उक्त लेखक ने और भी अनेक धार्मिक रचनायें कविता रूप में की हैं। जैसे सुकमाल महामुनी चरित्र, लावनी संग्रह शतक, शाल महात्म, सुखानन्द मनोरमा जीवन चरित्र आदि। उनकी इच्छा उन्हें प्रकाशित करने की है लेकिन अपनी किसी भी रचना को विक्रय करने के लिये वह प्रकाशित नहीं करना चाहते कोई भी धार्मिक महानुभाव धर्म लाभ की दृष्टि से सर्व साधारण में वितरण हेतु प्रकाशन करना चाहें तो उनसे सम्पर्क स्थापित करें, वह सहर्ष देने को तैयार हैं।

ऐसे धार्मिक विद्वान द्वारा लिखित पुस्तक की प्रस्तावना मेरे द्वारा हो यह कुछ उपयुक्त सा नहीं लगता था लेकिन प्रेरणा-वश मैंने यह साहस किया है। भगवत्जी ने अपनी रचनाओं को स्वर्गीय महान कवि व जैन समाज के प्रमुख साहित्यिक विद्वान एत्मादपुर के भगवत जी से भिन्न रखने हेतु ताकि लोग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ्रम में न पड़े, प्रत्येक पूजन के अन्त में फरिहावास के नाम से छाप दे दी है और अन्य कोई भावना उसमें नहीं है। पंडित जी ख्याति लाभ आदि के न उपासक हैं और न उसकी चाहना उन्हें कभी रही है केवल कर्त्तव्य पालन का उन्हें चाव है। इस पुस्तक का प्रकाशन भी मेरी व अन्य बन्धुओं की प्रेरणा का फल है।

आज के युग में भौतिकवाद घर करता जा रहा है और आत्मिक शान्ति बहुत दूर होती जा रही हैं इसके लिए जिनेन्द्र और मुनीद्र पूजा ही मनुष्य जन्म को सफल बनाने में सहायक हो सकती है। देव पूजा श्रावक के षट कर्मों में प्रधान है और वीतरागता की ओर ले जाने वाली है।

इस पंचमकाल में सम्यक् प्राप्ति एवं श्रद्धा को ठीक बनाये रहने के लिए देव गुरु और शास्त्र पूजन ही एकमात्र सहायक है। विषयों से आशक्ति घटाने के लिये तथा निज स्वरूप के यथार्थ भान के लिए जिनेन्द्र पूजन और उपासना एकमात्र मार्ग है। भगवत् जी ने भक्ति रस से ओत-प्रोत होकर सरल और सुगम्य साधारण भाषा में इस संग्रह को लिखकर तथा प्रकाशित कर बड़ा उपकार किया है।

व्यवहार से अपनी इच्छाओं को रोकने हेतु अष्ट द्रव्य से पूजा का विधान जैनाचर्यों ने बतलाया है ताकि भव्य जीव भगवान की पूजाकर उनके गुणों जैसा अपने को गुण वाला बनावें। भगवान की मूर्ति और जैन साधुओं के साक्षात दर्शन से तत्क्षण शान्ति लाभ होती है। आकुलता न हो दुखः न हो वही शान्ति है पूजन से भावों में निर्मलता आती है इसलिए अपनी आत्मिक साधना एवं कल्याण निमित्त भगवान की पूजा हमें बड़े आनन्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से सब चिन्ताओं को छोड़कर कर करनी चाहिए।

इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रखते हुए भगवत जी ने यह पूजायें लिखी हैं रचना सर्वथा पूर्ण हैं एक ही पुस्तक से नित्य की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है।

श्री सेठ सुनहरीलाल जी जैन आगरा ने भी इस पूजन की पुस्तक को अपने द्रव्य से प्रकाशित कर कल्याणार्थी मुमुक्षु प्राणियों को विशेष लाभ पहुँचाया है उनका द्रव्य सार्थक है जो अनेक जीवों की भ्रम बुद्धि को नष्ट कर सच्चे मार्ग पर लगाने में समर्थ हो।

अन्त में मैं निवेदन करूंगा कि इस पूजन संग्रह से जैन धर्म उपासक लाभ उठावे और अपनी आत्मा को निर्मल बनावें। मन, वचन, काय को शुद्ध कर भगवान के गुणों का स्मरण करते हुए पूजन करें अपने विषय कषायों को नष्ट करें ताकि उनके भावों में स्वयं धर्म रुचि उत्पन्न हो, सत असत का विवेक उत्पन्न हो और वासनाओं की कमी हो:—

भेद विज्ञान जग्यो जिनके घट, शीतल चित्त भयौ जिम चन्दन।
केलि करें शिव मारग में, जगमाहिं जिनेश्वर के लघु नन्दन॥
सत्य स्वरूप सदा जिनके, प्रगटो अवदात मिथ्यात निकन्दन।
शांत दशा जिनकी पहिचान, करे कर जोरिवनारसिवन्दन॥

जिनेन्द्र चरण सेवक—
(रा० सा० डा०) नेमीचन्द्र जैन
जलेसर (एटा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो शब्द

मैं न तो कवि ही हूं न पण्डित, भक्तिवश कुछ तुकबन्दी कभी २ जोड़ लेता हूं। प्रस्तुत पूजनों के अतिरिक्त मेरे द्वारा लिखी हुई कई धार्मिक रचनायें हैं यथा—"श्री जिनवाणी माहात्म" (श्री सेठि सुकमाल जी चरित्र) जो आधुनिक शैली में तीन संधियों में है पद्यमय ही है। "श्री भगवत् लामनी शतक" एक सौ धार्मिक लामनीं का संग्रह जिसमें अनेक पूज्य पुरुषों का जीवन महात्म है "श्री शील माहात्म" (श्री सुखानन्द जी मनोरमा सती का चरित्र) जो स्टेज पर खेलने योग्य है महान् शिक्षाप्रद है। "भगवत् भजन संग्रह" शिक्षाप्रद धार्मिक भजनावली—आदि २। मेरा विचार सदैव से यह रहा रहा है कि—जो धार्मिक सज्जन निज द्रव्य लगा कर धर्म प्रचारार्थ पुस्तकें बटबाना चाहेंगे उन्हें ही मैं अपनी कृति दूंगा बिक्रय करने के लिय नहीं। दूसरे मैं अपनी लिखी हुई कविता के प्रकाशन के लिए किसी से कहता भी नहीं हूँ, जबकि श्री ऋषभनगर मरसलगंज क्षेत्रोद्धार के लिये मैं हर प्रकार का जोर लगा कर दातार तैयार करता हूं यही कारण है कि—मेरा लिखा हुआ साहित्य अप्रकाशित है। अभी इसी विक्रम सं० २०२१ के आसौज मास में श्री ऋषभनगर (मरसलगंज) क्षेत्र ट्रस्ट कमेटी के सुयोग्य अध्यक्ष श्री० सेठ सुनहरीलाल जी जैन आगरा वालों के साथ २ मुझे श्री बड़वानी सिद्ध क्षेत्र की वन्दना का सुयोग मिला—वहाँ परमपूज्य श्री १०८ आचार्यवर्य महावीरकीर्ति जी महाराज तथा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनके सुयोग्य शिष्य परमपूज्य श्री १०८ आचार्य विमलसागर जी महाराज ससंघ विराजमान रहे थे। सेठसाहब अपनी कार से गये थे, इस १० दिन की तीर्थ यात्रा में विशेष २ धर्म लाभ हुआ। श्री १००८ बावनगजा जी महाराज के समक्ष आदि प्रभु की पूजन की, सेठ साहब ने पूजन पसन्द की—जब मैंने बड़वानी यात्रा की यादगार में पूजन प्रकाशन कराने का प्रस्ताव रक्खा तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया, यहां तक कि—धीरे २ मेरे द्वारा लिखे सभी साहित्य प्रकाशित कराने की भी अनुमति दी। वास्तव में श्री० सेठ सुनहरीलाल जी एक धार्मिक उदार पुरुष हैं। आपकी भावना धर्म प्रचार, समाज सुधार और जात्योद्धार की है, और आप इसके लिए कार्यरत भी हैं। आप वैभवशाली धार्मिक धनिक हैं, लक्ष्मी प्राप्त करना और उसको सदुपयोग में लगाना अभिमान रहित रहना, यह धर्मात्मा सत्पुरुषों का लक्षण है। वर्तमान में उक्त सेठ साहब में सभी गुण विद्यमान हैं। वैसे अनेक विद्वान कवियों की बनाई हुई पूजायें मौजूद हैं उनके आगे यह न कुछ के बराबर हैं, परन्तु जिस क्षेत्र का मैं सेवक हूँ वहां की वेदियों में मूल प्रतिमा जी जो बिराजमान हैं उनकी भक्तिवश आधुनिक शैली में यह रचना मैंने की है, और यह रचना श्री बड़वानी सिद्ध क्षेत्र बन्दना की यादगार में सेठजी ने प्रकाशित कराई है। इसके प्रथम श्री १००८ भगवान पार्श्वनाथ जी की मेरी लिखी पूजन स्वर्गीय श्री० भाई लक्ष्मणप्रसाद जी जैन इसौली (एटा) वालों ने प्रकाशित कराई थी जो कि—सभी बट चुकी हैं। इस पूजन की जैमाल में पार्श्वनाथ जी भगवान के पूर्व भवों का वर्णन है, इससे यह जैमाल बड़ी हो गई है। यह पूजा ऐसी पूजा है कि निराकुलता से शान्त चित्त हो भगवान के समक्ष करै तो उसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साक्षात्पार्श्वनाथ जीवन चरित्र का भान होगा, देर जरूर लगेगी, परन्तु परिणामों में विशेष आनन्द अनुभव होगा, और विशेष २ पुण्य बन्ध होगा। प्रस्तुत पूजनों में एक पूजन श्री १००८ चन्द्रा-प्रभूजी श्री १००८ शान्तिनाथ जी श्री १००८ महावीर जी की है जो कि—एक नई चीज है, यह मैंने रायसाहब श्री० बाबू नेमीचन्द्र जी जैन जलेसर की प्रेरणा पर लिखी थी, और जिसे श्री० बाबू जी ने "पूजन संग्रह" पुस्तक में प्रकाशित भी करा दिया है। मैं सदैव से धार्मिक विद्वानों, सद्धर्म सदाचार पोषक त्यागी वर्ग का सेवक हूं। मेरी भावना आर्ष मार्ग प्रचार की निरन्तर रहती है। मैं धार्मिक बन्धुओं से अनुरोध पूर्वक निवेदन करूंगा कि—वह सदैव सदाचार सन्मार्ग पोषक त्यागी वर्ग की सेवा में संलग्न रहें, और निरन्तर श्रावकोचित जिनेन्द्र पूजन गुरु सेवा, स्वा-ध्याय, संयम, तप, दान करने में तत्पर रहें धर्म प्रभावना करना प्रत्येक पुरुष का परम कर्तव्य है, प्रस्तुत पूजनों की पुस्तक इसी भावना की प्रतीक है।

मैं सम्माननीय श्री० पं० बिहारीलाल जी जैन शास्त्री प्रधा-नाध्यापक श्री १०८ आचार्य विमलसागर जी पाठशाला जलेसर तथा सम्माननीय रायसाहब बाबू नेमीचन्द्र जी जैन रईस जलेसर का भी आभारी हूं जिन्होंने इस पुस्तक के छपने में प्रूफ संशोधन आदि की पूरी २ सहायता दी।

सेवक—

भगवत्स्वरूप जैन "भगवत्"

फरिहा (मैनपुरी)

श्री शुभ मिती माघ शुक्ला पंचमी वीराब्द २४६१]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5305

॥ श्री जिनेन्द्र-स्तुति ॥

(हरि गीता छन्द)

०००

श्री मज्जिनेन्द्र सुचन्द्र आनन्द कन्द तारण तरण जी ।
दश आठ दोष विमुक्त, मंगल करन पातिग हरण जी ॥
चतु तीस अतिशय युक्त, सुख बल दर्श ज्ञान अनन्त जी ।
चालीस षटगुण शुभग लक्षण, श्री अर्हन्त महन्त जी ॥१॥

दुख हरण शिव सुख करण, प्रभु तुम पतित पावन नाम हैं ।
अमरेश नर नागेश तुम पद, जपत आठौ याम हैं ॥
भव सिन्धु अगम अपार में, चिरकाल भ्रमण कराइयौ ।
अज्ञानता परमाद बस, वसु कर्म फन्द फसाइयौ ॥२॥

गत चार लख चौरासि में, धर २ अनन्ते भव सही ।
वहु नृत्य नटवत किये दुखमय, कर्म त्रास वहाँ लही ॥
जल अग्नि पवन वनस्पती, भू त्रस विकल षट काय में ।
जलचर पवन थलचर द्व इन्द्री, आदि वहु पर्याय में ॥३॥

दुख सहे नाना भांति, सुख कहुँ रंचमात्र मिलौ नहीं ।
सुख की लगन में निश दिनाँ, बहु निन्द्य कर्म किये तहीं ॥
पर बास्तविक सुख नहिं मिलौ, पुनि रुलौ मैं जग कीचमें ।
चहुँ ओर कर्म कराल व्याल सु, परौ यम मुख बीचमें ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहु पुण्य योग सु पाय निर्मल, जन्म मानुष कौ लहौ।
उत्तम सुकुल नीरोग तन पा, विषय तृष्णा में दहौ॥
पूजे कुदेव त्रिविधि प्रकार, न बोध उर रंचक रहौ।
भटकत फिरौ सुख चाह में, शुभ श्रेय मार्ग नहीं गहौ॥५॥
धन धन्य यह दिन वार, धन मम जन्म नेत्र सफल भये।
परमात्म श्रीजिन चन्द्र पद लखि, सकल पातिग नश गये॥
लखि वीतरागी छवि मनोहर, ज्ञान ज्योति प्रकाशिनी।
शुभ सौम्य शान्ति सुनग्न मुद्रा, भवाताप विनाशिनी॥६॥
मो हृदय निश्चय भयौ यह, तुमहीं गरीव निवाज हौ।
दुस्तर भवार्णव डूबते, अवलम्ब ज्ञान जिहाज हौ॥
राखौ शरण में नाथ अपने, मोहि दुखिया जानि के।
मतिहीन बालक चर्ण सेवक, दास अपनों मानि के॥७॥
माँगू यही बरदान प्रभु! भव भव रहूँ तुम शरण में।
यहाँ रहूं चाहें कहीं जाऊं, मन रहे जिन चरण में॥
कर जोरि शीश नवाय, बारम्बार यह बिनती करूं।
'भगवत्' सदाँ जिन सेव रत, पुनि अन्तमें शिव तिय बरूं॥८॥

* सोरठा *

सुनिये दया निधान, यही प्रार्थना आपसे।
"भगवत्" सेवक जान, सदाँ शरण में राखियो॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❁ विनय पाठ ❁

[दोहावली]

श्री जिनेन्द्र पद पूजने, धरि मन शुद्ध विचार।
जिन चैत्यालय जायके, जिनवर बिम्ब अगार ॥१॥
कर युग जोरि नवाय शिर, करै वीनती सार।
हे जिनेन्द्र अशरण शरण, करौ मोहि भव पार ॥२॥
काल अनादि भ्रमों जगत, पर में निज करि भ्रान्ति।
दुख अनन्त चतुगति सहे, मिली न इक क्षण शान्ति ॥३॥
कहाँ तक मैं वह दुख कहूँ, जो पाये जिनराज।
कठिन कठिन करि यहाँ तलक, आ पाया हूं आज ॥४॥
मैं भटक्यौ संसार में, धरि धरि नाना भेष।
नर, पशु, नारक योनि में, पाई महा किलेश ॥५॥
राग आग में झुलसियौ, विषय कूप पडि देव।
घोर पतन मेरौ भयौ, लहौ न दुख कौ छेव ॥६॥
परी भनक मेरे श्रवण, जिनवर दीन दयाल।
काटि देत भव फन्द को, मेंटें जग जंजाल ॥७॥
यह सुनि आयो शरण में, धरि मन में विश्वास।
श्री जिनेन्द्र परसाद से, होगा भव दुख नाश ॥८॥
मैं पापी हूँ अति अधम, तुम प्रभु अधम उधार।
दीन जान बेड़ा मेरा, नाथ लगाओ पार ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शरण गहो तुम चरण की, यह मन निश्चय लाय।
श्री जिनेन्द्र भव सिन्धु से, देंगे पार लगाय ॥१०॥
स्वाँन, सिंह, कपि, अज, नवल, दीन पशू अज्ञान।
तार दिये भववार से, किया आपका ध्यान ॥११॥
अंजन चोर महा अधम, किया निरंजन नाथ।
मुझ दुखिया का दुख हरौ, चर्णा नवाऊं माथ ॥१२॥
चहूं नहीं धन सम्पदा, चहूँ न सुत परिवार।
चहूं यही भव दुख मिटै, पाऊं शिव पद सार ॥१३॥
अष्ट द्रव्य से पद जजों, अष्ट कर्म हों नष्ट।
अष्ट सुगुण धारी बनूँ, मिटैं सकल भव कष्ट ॥१४॥
शिव पद पावन पद जजूँ, गुण अनन्त जिन देव।
'भगवत्' नाम हृदय भजूं, करूँ सदाँ पद सेव ॥१५॥

(सोरठा)

ऋषभ आदि जिनराज, महावीर लों बीस चतु ॥
अर्घ चढ़ाऊं आज, पद अनर्घ के हेतु मैं ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावोर पर्यन्त चतुबीस बर्तमान जिनेन्द्रभ्यो नमः अर्घं।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❀ स्वस्ति मंगल पाठ ❀

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

ॐ जय, जय, जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु,
णमो अरहंताणम्, णमो सिद्धाणम्,
णमो आयरियाणम्। णमो उवज्झायाणम्,
णमो लोये सव्वसाहूणम् ॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन मूल मंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षिपेत)

(गीता छन्द)

चारि मंगल रूप जग में, श्री अर्हन्त सु मंगलम्।
श्री सिद्धि मंगल, साहु मंगल, जैन धर्म सु मंगलम् ॥
हैं चारि लोकोत्तम श्री, अर्हन्त लोकोत्तम सही।
श्री सिद्धि उत्तम, साधु उत्तम, धर्म जिन उत्तम कही ॥
जग में शरण भी चार हैं, अर्हन्त शरण सु सार है।
श्री सिद्धि शरण सु साधु शरणाँ, धर्म शरण सु धार है ॥
यह चार ही मंगल जगत में, चार ही उत्तम शरण।
इन चार को ही जजौ नित प्रति, मिटै जन्म, जरा, मरण ॥

(परि पुष्पाँजलि क्षिपेत्)

[दुर्मिल छन्द—राधेश्याम रामायण]

शुद्ध होय अथवा अशुद्ध, सुस्थित होवै कोई।
ध्यावत ही पंच सु नवोकार, तत्काल पाप सब क्षय होई ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होवै अशुद्ध या शुद्ध होय, हो किसी अवस्था में भाई।
सुमिरत ही परमातमा पंच, वाह्याभ्यन्तर शुचि हो जाई॥
है यह अपराजित महामंत्र, विघनों का नाश करन हारा।
सब मंगल में मंगल प्रधान, मंगल समुदाय कहा भारा॥
नवकार मंत्र से पाप नशें, हों मंगल नित २ जाप जपें।
अर्हं अच्चर है बृह्म रूप, परमेष्ठी जपते पाप कपें॥
श्री सिद्धि चक्र सद्बीज है ये, मैं नमूँ सदाँ उर में ध्याऊँ।
आठों कर्मों से मुक्त होंउ, मैं शिव थल जाकर बस जाऊँ॥
बहु भाव युक्त नमि सिद्धि चक्र, शुभ समकितादि बसु गुणधारी।
इन गुण पूजन सुमिरन करिये, ये हैं जग में भव दुख हारी॥
जिनराज नाम के ध्यान करें, सब विघन समूह नशाते हैं।
शांकिनीं डाकिनीं भूत और, विषधर के विष गल जाते हैं॥
श्रीमज्जिनेन्द्र पद नित्य जजों, यह त्रय जग ईश कहाते हैं।
यह सुगुण अनन्त चतुष्ट धरें, इनको नित मुनिगण ध्याते हैं॥
इनकी वाणी स्याद्वाद जजों, जो द्वादशांग अज्ञान हरै।
पूजों जिनगुरु भव दुख हर्ता, इनका पूजन भव पार करै॥

ॐ ह्रीं श्री जिनदेवेभ्यो: जिनशास्त्रेभ्यो: नमः पुष्पांजलिं चिपेत्।

(दोहा)

श्री जिनेन्द्र भगवान के, नाम शहस अरु आठ।
जजों अर्घ लेकर विषें, करूं सदाँ इन पाठ॥

ॐ ह्रीं श्री जिन सहस्रनामेभ्यो, अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छप्पय छन्द)

नमो श्री अर्हन्त, सिद्धि आचारज स्वामीं।
उपाध्याय जी नमों, जगत जिन साधु नमामीं॥
नमों त्रजग जिन चैत्य, और चैत्यालय जेते।
जिनवाणी को नमों, धर्म जिन नमि सुख लेते॥
यही कहे नव देवता, मंगल, शरण, सहाय।
करों वन्दनाँ भक्तियुत, पूजों अर्घ चढ़ाय॥
ॐ ह्रीं श्रो जैन नवदेवताभ्यो नमः अर्घं।

(दुर्मिल छन्द)

त्रैलोक्य जिते हैं जैन गुरू, पुंगव सबको हो स्वस्ति सदाँ।
जो निज स्वभाव में लीन रहें, उनको भी होवै स्वस्ति सदाँ॥
हो स्वस्ति सभी सद्दृष्टि सहज, आतम प्रकाश मय जो भवि हैं।
हो स्वस्ति सभी वैभवशाली, जो अद्भुत पुण्य मयी छवि हैं॥
जा निर्मल बोध सुधामृत नित, पीवें सेवें हों स्वस्ति उन्हें।
हो स्वस्ति जो निजपर भाव लखें, निज पर स्वरूपका ज्ञान जिन्हें॥
त्रैलोक्य सच्चिदानंद धवल, आतम को स्वस्ति सदाँ होवै।
तिहुँ काल व्याप्त आतमाँ शुद्ध, हो स्वस्ति सकल कल्मष धोवै॥
करि द्रव्य शुद्धता यथा रीति, करता हूँ भाव शुद्धि भारी।
अवलंवन शुद्ध स्वरूप का ले, करता हूं जिन पूजा जारी॥
जो महापुरुष हैं जगत पूज्य, उत्तम अर्हन्त कहाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनकी बाणी है कल्याणी, ध्यावै वह भव तरि जाते हैं ॥
बहु भाँति वस्तु करमें लेकर, बहु भक्ति भाव से पद पूजों ।
गुण गाऊं हे केवल ज्ञानी, महा दिव्य न तुम सम जग दूजों ॥
सम्पूर्ण विभवयुत चित्त लगा, मैं पूजा करूं तुम्हारी है ।
मन, वच, तन, बसुविधि जजूं नाथ, भव बाधा मिटै हमारी है॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय श्रीजिन प्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(छप्पय छन्द)

ऋषभनाथ जी स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितनाथ जी ।
श्री संभव जी स्वस्ति, स्वस्ति अभिनन्द नाथ जी ॥
सुमतिनाथ जी जिन स्वस्ति, स्वस्ति श्री पदमप्रभू जिन ।
श्री सुपार्श्व जिन स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभू गिन ॥
पुष्पदंत जिन स्वस्ति कर, शीतल जिनवर स्वस्ति वर ।
स्वस्ति करौ श्रेयाँस जिन, बाँस पूज्य जी स्वस्ति धर ॥
विमलनाथ जिन स्वस्ति, स्वस्ति करता अनन्त प्रभु ।
धर्मनाथ करौ स्वस्ति, शान्ति जिन स्वस्ति करौ विभु ॥
कुन्थ जिनेश्वर स्वस्ति, स्वस्ति कर अरह सुजिन जी ।
मल्लिनाथ करौ स्वस्ति, स्वस्ति मुनिसुव्रत गिन जी ॥
स्वस्ति करौ नमिनाथ जी, नेमिनाथ जी स्वस्ति कर ।
स्वस्ति पार्श्व प्रभु करि सदाँ, बर्धमान जी स्वस्ति कर ॥

इति स्वस्ति मंगल विधानं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(नोट—अब रिद्धिधारी मुनियों का स्तवन किया जाता है अतः यहां कल्याणकर्ता शब्द आते ही पुष्प क्षेपण करें।)

(छप्पय छन्द)

श्री केवलज्ञानी महामुनीं, जो मन पर्यय शुभ ज्ञान धरें।
श्री अवधि सुज्ञानी जिते मुनीं, सब परम ऋषी कल्याण करें॥
हैं श्रोत्र सु पदानुसार भिन्न, हैं कोष्ट बीजरिधि के धारी।
हैं चतुविधि बुद्धि बली रिषि जो, कल्याण करौ हमको भारी॥
सस्पर्शन, श्रवण, विलोकन औ, दूरास्वादन हैं घ्राण जिसी।
हैं दिव्य सुधारी मतिज्ञान, कल्याण करौ सब परम रिषी॥
दश सर्व पूर्व प्रत्येक बुद्धि, बसु अंग निमित्त प्रधानीं हैं।
हैं प्रज्ञावादी श्रवण रिषी, कल्याण करहु गुरु ज्ञानीं हैं॥
जंघावलि, फल औ फूल तंतु, जल बीजांकुर नभ मान धरौ।
श्रेणीगति रिद्धि महाधारी, हे परम ऋषी कल्याण करौ॥
अणिमाँ, महिमाँ, लघिमाँ, गरिमाँ, रिधिधारी हैंगे जिते मुनी।
मन, बच, तन, बलधर रिद्धिधार, कल्याण करौ हे महागुणी॥
जो कामरूप वश गुणधारें, ईशिता प्रकाम्य अन्तर्धानी।
प्राप्ता अप्रति घाती रिधधर, कल्याण करौ गुरुबर ज्ञानी॥
जो दीप्त तप्त महा उग्रतपी, जो घोर पराक्रम रिधधारी।
महा घोर रिधि बृह्मा कीजै, कल्याण सुगुरु भव दुखहारी॥
आमर्ण सर्व औषधी आशि, दृष्टी विष हान रिद्धिधारे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो क्ष्वेल, जल्ल, विडमल्लरिद्धि, धारी कल्याण करौ म्हारें ॥
क्षीरामृत, मधुघृत स्रवी और, अक्षीणालय रिधि धरें ऋषी ।
ते सब मुझको कल्याण करहु, मैं वन्दों पूजों अह निसी ॥
दोहा—जिते रिद्धिधारी मुनी, तपधारी गुणवान ।
मैं पूजों शुभ भाव सों करौ मेरा कल्याण ॥
इति स्वस्तिः क्रिया परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यो ॥

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

(दुर्मिल छन्द राधेश्याम रामायण)

जिन कर्म घातिया नष्ट किये, तप बल केवल रवि उदय हुआ ।
प्रगटी अनन्त चतु शक्ति महा, सर्वज्ञ लोक का अन्त हुआ ।
जिनकी निर अक्षर मय वाणी, स्याद्वाद तत्व दर्शाती है ।
जिन भोग त्यागकर योग धरा, निर्ग्रन्थ दशा मन भाती है ।

दोहा—एसे देवागम गुरू, पूजों मन वच काय ।
नष्ट करन भव कष्ट को, जगमें यही उपाय ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनदेव जिनशास्त्र जिनगुरुभ्यो नमः अत्र अवतर अवतर सवौंषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो नमः अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो नमः अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधोकरणम् ।। स्थापना ।।

(अष्टक)

हो गया अनन्तानन्तकाल, भटकत मुझको इस भव वन में ।
सुर, नर, नारक, पशु, बाल, वृद्ध, इस जनम जरामृत उलझनमें ।
इक क्षणको शान्ति न मिली मुझे, मैं दुखिया शरण लही थारी ।
देवागम गुरू जजों जल से, मेंटौ हे नाथ व्यथा म्हारी ।

ॐ ह्रीं श्री जिनदेव शास्त्र गुरुभ्यो नमः जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं ।

भवदाह जलाती है मुझको, मैं राग द्वेष करि जलता हूं ।
अपने ही आप पाप कर के, दुख भोगि २ कर मलता हूं ।।
चिरकाल हुआ न मिली साता, अब पाकर अवसर आया हूं ।
भवताप बिनाशन को चंदन, देवागम गुरुतल लाया हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं ।

मेरा अक्षय गुण था अनन्त, मैंने ही उसे भुलाया है ।
झूँठे को साचा समझ मैंने, रुचि २ पर को अपनाया है ।।
यह भूल मेरी चिरकाल की है, पा भान शरण में आया हूँ ।
अक्षय निधि पाने ले अक्षित, देवागम गुरु पद धाया हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं ।

मन वाणी और क्रिया तन की, तीनों में भेद रहा भारी ।
इन्द्रिय मन विषय भोगने को, कीनीं यह मक्कारी सारी ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कामातुर होय अनर्थ किये, पापों की पोट लिए फिरता।
श्री देवागम गुरु पुष्पों से, पूजों पाऊं जिससे थिरता॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो कामवाण विनाशनाय पुष्पं।

यह क्षुधा भयानक रोग मुझे, कितनीं पीड़ा पहुँचाता है।
जितना इसका करता इलाज, उतना ही बढ़ता जाता है॥
इच्छा का गर्त न भर पाया, अगणित द्रव्यों से भरा इसे।
नैवेद्य चढ़ा कर पद पूजूं, निज समरस प्रापति होय जिसे॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं।

मैं मोह अन्ध में भूल गया, कित जाऊँ कितको जाना है।
अज्ञान दशा में किये मैंने, दुख मय अघ संचय नाना हैं॥
देवागम गुरु की ज्ञान जोति, पाई जड़ अंध मिटाऊंगा।
पाऊंगा निज में प्रकाश, दीपक प्रभु चरण चढ़ाऊंगा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेदेव शास्त्र गुरुभ्यो नमः महा मोहान्धकार नाश-
नाय दीपं।

दुष्टाष्ट कर्म जग दुख दाता, मैं हीं तो नित्य बनाता हूं।
पर परणति में करि राग द्वेष, अपना संसार बढ़ाता हूँ॥
युग युग बीते चिरकाल हुआ, ले अनिल गंध को खेऊं मैं।
जल जाय मेरा यह कर्म कांष्ट, देवागम गुरुपद सेऊं मैं॥

ॐ ह्रीं श्री जिनदेव शास्त्र गुरुभ्यो दुष्टाष्ट कर्म विनाशनाय
धूपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्कृष्ट मिष्ट फल लेकर मैं, श्री देव शास्त्र पद पूजों।
मिल जावै शिव फल यही भाव, हे नाथ मैं तुम सम ही हूजों॥
यह मोह अंध मिट जाय मेरा, झूंठा जग से नाता टूटै।
मैं जाय बसूं शिव मन्दिर में, मेरा संसार भ्रमण छूटै॥

ॐ ह्रीं श्री जिनदेवशास्त्रगुरुभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं।

मैं निज स्वरूप में रम जाऊं, निज रस का ही नित पान करूं।
ले निज स्वभाव जल मिथ्यामल, धोऊं निज आतम ध्यान करूं॥
निजमें निजके लय होने से, पर परणति भाव मिटें मेरे।
शुद्धातम रूप प्रगट होवै, हो जाऊँ नाथ सदृश तेरे॥
शुभ अर्घ चढ़ाऊँ चरणों में, निज गुणमय पद अनर्घ पाऊँ।
देवागम गुरु की करि पूजा, उनके सुगुणों को नित ध्याऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री परमब्रह्मणे अनन्तानन्तशक्तिभ्यो अष्टादश दोष रहिताय षट् चत्वारिंशतगुणसहिताय जिनदेवेभ्यो अर्घं।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोत्पन्न द्वादशांगवाणी स्याद्वादनयगर्भित प्रथमानु योगादि सहिताय अर्घं।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रय गुणविभूषिताय आचार्य उपाध्याय साधु श्री जैन गुरुभ्यो अर्घं।

(दोहा)

देव शास्त्र गुरु पद जजों, बसु विधि द्रव्य सँजोय।
गुणमाला कहूँ भक्ति युत, बुद्धि शक्ति दो मोय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तप बल से कर्म खिपाय जीव, जब हो जाता केवल ज्ञानी।
तब सकल ज्ञेय ज्ञायक होता, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी ध्यानी ।।
पर परणति के हट जाने से, शुभ दर्शन ज्ञान प्रभा चमकै।
घट २ की परगट लखै सर्व, चतुरानन तन आभा झमकै।१।
अष्टादश दोष विनष्ट होंय, प्रगटै अनन्त चतु शक्ति महा।
अनुपम अनन्त गुण भण्डारी, शुद्धातम को अर्हन्त कहा ।।
जिनकर्म घातिया चूर किये, पूरण निर्मल पद पाया है।
जो समोशर्ण में अन्त रीछ, राजें जिन देव कहाया है।२।
जिनमें न दोष का लेश कोई, जो गुण अनन्त के धारी हैं।
जो राग द्वेष से वर्जित हैं, जग तारण जग हितकारी हैं।।
ऐसे सर्वज्ञ, वीतरागी, नित हित उप देशी गुण गाऊं।
पूजूं इनके पद भक्ति युक्त, इनका ही ध्यान हृदय ध्याऊं।३।
इनकी वाणी जग कल्याणी, शुभ अनेकान्तमय कहलाती।
जिसको गुरु गणधर से ज्ञानी, बतलाते हैं भव दुख घाती।
यह ऐसी पावन नौका है, इस पर चढ़ि भव दधि तर जाते।
यह ऐसी निर्मल ज्ञान जोति, इससे निज रूप समझ पाते।४।
यह मोह महामद विष मर्दन, है सुधारूप शिव सुखदाता।
यह भव आताप मिटावन को, चंदन सम शीतल जगत्राता।।
जड़वाद पहाड़ को चूर करन, यह वज्र दंड सम गुणधारी।
अज्ञान अंध को दूर करन, यह सूरज किरण प्रभा भारी।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस वाणी में ऐसा जादू, जिसके शिर यह चढ़ जाता है।
वह पुन्यवन्त नर जगत पूज्य, बन जाता शिवपद पाता है॥
दश अष्ट महा भाषा स्वरूप, लघु भाषा सात शतक जानों।
यह सप्त भंग है विमल गंग, इसमें नहाकर भव मल हानों।६।
जिन गुरु की महिमा अगम महा, सुगुरु नहिं पार लहाते हैं।
थकि भक्ति युक्त गुरु चरणों में, कर जोरें शीश झुकाते हैं॥
यह भव, तन, भोग, विरागी हैं, तोड़ा है इन जग से नाता।
यह आतम ध्यान लौ लागी हैं, यह भव दुखहारी जग त्राता।७।
यह नग्न दिगम्बर वीतराग, क्रोधादि कषायों के त्यागी।
इन बुझा दई सब राग आग, यह स्वातम चिन्तन लौ लागी॥
इनका स्वरूप लखि जग नश्वर, प्रत्यक्ष दिखाई देता है।
इस रूप से ही पद अविनश्वर, प्राणी जग से पा लेता है।८।
मन इन्द्रिय विषय बिजेता यह नित धर्म रु शुक्ल ध्यान ध्याता।
शिव मग दर्शावन नेता यह, जग इन चरणों में शिरनाता॥
अरि, मित्र, काँच, मणि, तृण, कंचन, सब में यह समभावी हैं।
यह तारण तरण जिहाजरूप, यह मोक्ष लोक की चाबी हैं।९।
जिनदेव, जिनागम, जैनगुरु, तीनों ही शिव पद दाता हैं।
यह ही हैं जग में मंगलमय, लोकोत्तम शरण विधाता हैं॥
जो इनका दृढ़ श्रद्धान करै, वह नर सम्यक दृष्टी जानों।
जो पूजै, ध्यावै गुण गावै, भवपार होय निश्चय मानों।१०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम पूजें पद बहु भक्ति धार, वसु द्रव्य लेय गुण गा गाके ।
भवदधि से पार लगा दीजै, हम तो तुम शरण लई आके ॥
मिट जावै भव का भ्रमण नाथ, बस यह दास अरदास करै ।
'भगवत्' पावै अपनां स्वरूप, शिद्धालय जाय निवास करै ।११।

(घत्ता—दोहा)

तुम दाता जग के धनीं, मैं दुखिया संसार ।
शरण लही मैं आपकी, मुझे दीजिये तार ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनदेव जिनशास्त्र जिनगुरुभ्यो नमः महार्घं ॥

[सोरठा]

पूजूं पद त्रयकाल, भक्ति भाव उर धारि के ॥
"भगवत्" करौ निहाल, फरिहा नगरी बास है ॥

(इत्याशीर्वाद)

पुष्पांजलि क्षिपेत्

विदेह क्षेत्र स्थित बीस तीर्थंकर और कृत्याकृत्रिम चैत्यालय तथा सिद्धि भगवान पूजा

(दुर्मिल छन्द राधेश्याम रामायण)

(दोहा)

हैं ढाई दीप विदेह पांच, जहां श्री मंदिर आदिक स्वामीं ।
है अन्तिमनाम सु अजित वीर्य, यह बीस जिनेश्वर गुण धामीं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सास्वते सदां ही विद्यमान, जो धर्म प्रभा को चमकाते।
केवली, रिद्धिधारी मुनिगण, पद पूज हृदय हम हर्षाते।१।
हैं कृत्याकृत्रिम जिन मंदिर, जिन प्रतिमा तीन लोक राजें।
हम उन सबके पद को पूजें, जिससे सब रोग शोक भाजें॥
हैं सिद्धालय सु विराजमान. श्री सिद्ध प्रभू मंगलकारी।
मैं पूजों उन सबके पद को, वसु द्रव्य सजाकर भर थारी।२।

(दोहा)

जजों विदेह सु बीस जिन, जिन प्रतिमा जिन भोंन।
जजों सिद्ध भगवान को, उन गुण प्रापति होंन॥

ॐ ह्रीं बीस तीर्थंकर विद्यमान, कृत्याकृत्रिम चैत्यालय चैत्य श्रीसिद्ध भगवान् अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं॥
अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ठः स्थापनम्।
अत्रमम सन्निहितो भव२ वषट् सन्निधीकरणं परि पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(अथाष्टक) तर्ज—राधेश्याम रामायण

प्रासुक जल कंचन झारी में, भरि लाया चरण चढ़ाने को।
दुख जन्म जरामृत मेंटन को, अपना निज रूप बढ़ाने को॥
श्री बीस जिनेश्वर विद्यमान, श्री कृत्याकृत्रिम चैत्यालय।
मैं पूजों निश दिन भक्ति सहित, श्री सिद्ध प्रभू जो सिद्धालय॥

ॐ ह्रीं बीस तीर्थंकर त्रैलोक्य चैत्यचैत्यालय श्रीसिद्ध भगवान जन्म जरामरण विनाशनाय जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चंदन केशर कर्पूर मिला, जल बहु सुगंध भरि झारी में।
भवाताप मिटावन को पूजों, जिन प्रभु पद भव दुखहारी मैं॥
श्री बीस जिनेश्वर विद्यमान, श्री कृत्याकृत्रिम चैत्यालय।
मैं पूजों निश दिन भक्ति सहित, श्री सिद्ध प्रभू जो सिद्धालय॥

ऊपर की ॐ ह्रीं बोल कर—भवाताप विनाशनाय चंदनं।

बहु स्वच्छ सुगंधित अच्छत ले, कंचन के भाजन भरि लाता।
संसार भ्रमण मेंटो मेरा, अक्षय पद पाऊं सुखदाता॥
श्री बीस जिनेश्वर विद्यमान, श्री कृत्याकृत्रिम चैत्यालय।
मैं पूजों निश दिन भक्ति सहित, श्री सिद्ध प्रभू जो सिद्धालय॥

ॐ ह्रीं बीस तीर्थंकर त्रैलोक्य चैत्यालय सिद्ध भगवान अक्षतं।

बहु पुष्प सुभाषित चुन २ कर, लाया हूँ चरण चढ़ाऊंगा।
मेंटो सब काम व्यथा मेरी, जिससे अनुपम सुख पाऊंगा॥
श्री बीस तीर्थंकर विद्यमान, श्री कृत्याकृत्रिम चैत्यालय।
मैं पूजों निश दिन भक्ति सहित, श्री सिद्ध प्रभू जो सिद्धालय॥

ॐ ह्रीं बीस तीर्थंकर त्रैलोक्य चैत्यालय सिद्ध भगवान पुष्पं।

लाया नैवेद्य सजा थाली, उत्तम घृत युक्त सु शुद्ध बना।
मेंटन को क्षुधा रोग खाली, प्रभु चर्ण चढ़ाऊं हर्ष मना॥
श्री बीस जिनेश्वर विद्यमान, श्री कृत्याकृत्रिम चैत्यालय।
मैं पूजों निश दिन भक्ति सहित, श्री सिद्ध प्रभू जो सिद्धालय॥

ॐ ह्रीं बीस तीर्थंकर त्रैलोक्य चैत्यालय सिद्ध भगवान नैवेद्यं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाँशन को मोह महातम को, दीपक से पूज रचाऊँ मैं।
अज्ञान अंध मिट जाय मेरा, जो निज स्वरूप को पाऊं मैं॥
श्री बीस जिनेश्वर विद्यमान, श्री कृत्याकृत्रिम चैत्यालय।
मैं पूजों निश दिन भक्ति सहित, श्री सिद्ध प्रभू जो सिद्धालय॥
ॐ ह्रो ... . महामोहांधकार नाशनाय दीप।

यह अष्ट दुष्ट बहु कष्ट देंहिं, इन नष्ट करन को इष्ट यही।
पावक में धूप चढ़ाय जजों, मिट जाय करम का कष्ट सही॥
श्री बीस जिनेश्वर विद्यमान, श्री कृत्याकृत्रिम चैत्यालय।
मैं पूजों निश दिन भक्ति सहित, श्री सिद्ध प्रभू जो सिद्धालय॥
ॐ ह्रीं ... . दुष्टाष्ट कर्म नाशनाय धूपं।

फल प्रासुक उत्तम स्वाद युक्त, सुन्दर लेकर के थाल सजूं।
शिव फल पाऊं यह आस मुझे, मैं भक्ति सहित जिनराज जजूं॥
श्री बीस जिनेश्वर विद्यमान, श्री कृत्याकृत्रिम चैत्यालय।
मैं पूजों निश दिन भक्ति सहित, श्री सिद्ध प्रभू जो सिद्धालय॥
ॐ ह्रीं ... . महामोक्षफल प्राप्ताय फलं।

सब द्रव्य मिला कर अर्घ बना, मैं करूं भाव से प्रभु पूजा।
निश्चय अनर्घ पद पाऊंगा, पूजा सम पुण्य नहीं दूजा॥
श्री बीस जिनेश्वर विद्यमान, श्री कृत्याकृत्रिम चैत्यालय।
मैं पूजों निश दिन भक्ति सहित, श्री सिद्धप्रभू जो सिद्धालय॥
ॐ ह्रीं ... . अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छप्पय छन्द)

बीस जिनेश्वर जजों, सास्वते जो विदेह में।
कृत्याकृत्रिम भवन जजों, जिन विम्बगेह में॥
सिद्धशिला पर सिद्ध, अनन्तानन्त विराजें।
इन पद पूजा करों, दोष मेरे सब भाजें॥
भक्तिभाव युत द्रव्य ले, जजों चरण मंगल करन।
करों हृदय में ध्यान नित, दुखमय भवसागर तरन॥

(महार्घ) (दोहा)

बीस जिनेश विदेह के, सिद्धालय के सिद्ध।
कृत्य अकृत्रिम जिन भवन, सुनि जैमाल विशुद्ध॥
श्रीमंदिर, जुगमंदिर जिनेश, श्रीबाहु सुबाहु नमों स्वामी।
संजातक, श्रीजिन स्वयं प्रभो, ऋषभानन, अनन्त वीर्य नामी॥
सूरप्रभुजी सु विशालकीर्ति, वज्राधर जी चन्द्रानन हैं।
श्री चंद्रवाहु भुजंगम जी, ईश्वर जी नेमिप्रभू जिन हैं।१।
श्री वीरसेन जी महाभद्र, श्री देव यशोधर ध्यान करू।
वन्दों जिन अजित वीर्य स्वामी, बीसों पद अर्घ समान धरू॥
वन्दों श्री केवलि श्रुत केवलि, रिधि धारी जिते मुनीश्वर हैं।
सबके पद वन्दों भाव युक्त, ये तीन लोक के ईश्वर हैं।२।
पाताल मध्य औ ऊर्ध लोक, में हैं जितने जिन धाम जजों।
अकृत्रिम या जो हैं कृत्रिम, सबको ही नित निष्काम भजों॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजों जिन चैत्य सु चैत्यालय, सबका ही ध्यान हृदय लाके।
बसु द्रव्य चढ़ाऊं भाव युक्त, जिन चैत्य जिनालय गुण गाके।३।
है लोक अन्त में सिद्ध शिला, योजन में पैंतालीस लाख की है।
तिस पर हैं अनन्तानन्त सिद्ध, यह बात सु आगम साख की है॥
इक सिद्ध में सिद्ध अनन्ते हैं, अपनी २ सत्ता धारें।
मैं वन्दों मन वच काय नित्य, कर जोरि प्रभू भव दुख टारें।४।
हैं नित्य निरंजन अजर अमर, अशरीर अनोपम राजे हैं।
इनका शुभ नामोच्चार करत, दुखमय अनिष्ट सब भाजे हैं॥
व्यवहार से वसुगुण युक्त हैं ये, निश्चय अनन्त गुण भण्डारी।
श्री सिद्ध नाम सर्वदा जपौ, 'भगवत्' यह भव संकट हारी।५।

(अडिल्ल छन्द) घत्ता

पूजों बीस जिनेश, विदेहन के सही।
पूजों जिनवर भौनविम्ब जो त्रयमही॥
पूजों सिद्ध समूह, सदाँ मन लायकें।
जिनके पूजत जाँय, सु पाप पलायकें॥

महार्घ (गीता छन्द)

जो करै पूजा शुद्ध मन सों, द्रव्य कर में धारिके।
जो करै स्तुति, भक्ति, विनती, शुद्ध पाठ उचारिके॥
वह होय नरपति, खगपती, सुरपती, शिव आवास है।
'भगवत्' सदाँ इन चर्ण सेवक, नगर फरिहा बास है॥

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छप्पय छन्द)

ढाई दीप में पांच, भरत शुभ क्षेत्र बताये।
ऐरावत हैं पांच, जहाँ जिनवर उपजाये॥
भूतकाल चौबीस, बीसचतुवर्तमान के।
और भविष्यत काल, होंय चौबीस जान के॥
तीन काल की तीस यह, चौबीसी पूजूं सदाँ।
सप्त सैकरा बीस जिन, भक्तिसहित नमि सर्वदाँ॥

ॐ ह्रीं श्री भूत, भविष्यत, बर्तमान, तीनकाल की दश क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी सातसौ बीस जिनेन्द्र भगवान के चर्ण कमल कूँ अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री १००८ आदिनाथ जी जिन पूजा

—०—

(हरि गीता छन्द)

शुभ नगर अवधपुरी रची, द्वादश औ नव योजन धनद ।
दसपंचेमास रतन सुवर्षा, नाभिराय गृहे सुखद ।।
सर्वार्थसिद्ध विमान से चय, मात मरुदेवी उरें ।
कंचन समान सरीर धारी, ऋषभदेव सु अवतरें ।।
पूरब चौरासीलाख आयु, सु लही आदि जिनेशने ।
गिरि शीशपै ले जाय करि, अभिषेक किया सुरेशने ।।
पुनि राज्य पाय करी सु रचना, कर्मभूमि तनीं सकल ।
तप धारि केवलबोध पा, फिर प्राप्त कीना पद अचल ।।

सोरठा—आदीश्बर जिनराय, विघन हरन, मंगल करन ।
यहाँ बिराजहु आय, पूजों पद शिव प्राप्ति हित ।।

ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्र अत्र अवतर २ संवोषट् आह्वाननं
ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधी करणम् ।

(दुर्मिल छन्द) तर्ज राधेश्याम रामायण

मिथ्या मत से हो रही लिप्त, यह गुण अनन्त आतम मोरी ।
बीता है अनन्तानन्त काल, बिपरीति हुई मम बुधि भोरी ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जड़ से ममत्व करि फिरा जगत, मरि २ नाना विधि तन धारे।
चरणों में चढ़ाऊं निर्मल जल, मम जन्म जरामृत्यु निरवारे॥
ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं।
भवसागर में उछरत बूढ़त, सब समय व्यतीत हुआ मेरा।
वसु कर्मों ने मम आतम पर, डाला है विकट जाल घेरा॥
संसार ताप से तप्तमान, मेंटन यह ताप शरण आया।
केशर कर्पूर मिला चन्दन, पद बंदन पूजन को लाया॥
ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं।
है शक्ति अनन्त निजातम की, पर दबी बादलों में शशि ज्यों।
चिरकाल व्यतीत हुआ ऐसे, भूला था निज को खोजूँ क्यों॥
अब काललब्धि पा भान हुआ, अच्छित ले पूज रचाऊंगा।
तुम हो अनन्त चतु शक्ति रूप, निश्चय अक्षय पद पाऊंगा॥
ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं।
जग में जितने हैं जीव सभी, फस रहे काम के फन्दा में।
है मोह महा बलवान सुभट, सब डाल दिए भव खन्दा में॥
मन से कुछ वच से कुछ करते, तन से यह संसृत जारी है।
मिट जावै काम व्यथा मेरी, बहु पुष्प भेंट पद धारी है॥
ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं।
तृष्णा डाँयन मम शिर चढ़ कर, नाना कुकृत्य करवाये हैं।
बहु खाद्य अखाद्य पदार्थ मैंने, तन पोषण हेतु सुखाये हैं॥
पर क्षुधा तृप्त नाँ हुई नाथ, नैवेद्य धरी तुम पद आगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिट जाय क्षुधा का रोग मेरा, अनुपम मम आतम बल जागे ॥
ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं ।
थी दर्शन ज्ञान शक्ति मेरी वह मोह अन्ध में नष्ट हुई ।
अज्ञान अँधेरी में भटका, लटका भव में बुधि भृष्ट हुई ॥
कुछ पा प्रकाश आया यहाँ तक, दीपक से पूज रचाऊँ मैं ।
मिल जावे मेरी शक्ति मुझे चरणों में शीश झुकाऊं मैं ॥
ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय महामोह अंधविनाशनाय दीपं ।
इन दुष्ट अष्ट कर्मों ने ही, मुझको जग नाँच नचाया है ।
हर्षित हो हो मैं किये कर्म, सुख दुख फल उनका पाया है ॥
पाई सुर की सम्पति मैंने, जा नर्क निगोदों मैं रोया ।
ले धूप दशाँगी अनिल दहूं, मिल जावै मम पद जो खोया ॥
ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय दुष्टाष्ट कर्म विनाशनाय धूप ।
माया ममता के चक्कर में, मैं निज स्वरूप को भूल गया ।
पर को ही अपना मान लिया, इन्द्रिय विषयों में झूल गया ॥
बोकर बबूल फल आम चहा, यह मिथ्या बुद्धि रही भारी ।
फल उत्तम ले पूजूं पद को, शिव पद पावन इच्छा म्हारी ॥
ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं ।
मिट जावै जन्म जरामृत भय, भव ताप मिटै अक्षय पद हो ।
हो नष्ट कामकीव्यथा सकल, स्वात्मीक सुधारस का स्वद हो ॥
हो ज्ञान ज्योति का घट प्रकाश, दुष्टाष्ट कर्म जलि जांय सभी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्कृष्ट थान पाऊं अविचल, साथक भगवन् पूजा हो तभी ॥
मैं पद अनर्घ के पाने को, यह अर्घ आदि जिन भेंट धरूं ।
मेंटौ हे नाथ व्यथा मेरी, कर जोरि नवा शिर चरण परूं ॥
ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं ।

* पंचकल्याणक अर्घ *

(दुर्मिल छन्द—तर्ज राधेश्याम)

जब भोग भूंमिका अंत हुआ, चौदह कुलकर जग मान्य हुये ।
श्री नाभिराय मरु देवि मात, देवों करिके सम्मान्य हुये ॥
सर्वार्थ सिद्धि से चय स्वामीं, माता के गर्भ पधारे हैं ।
आषाढ़ वदी द्वतीया तिथि को, हम यहाँ पर अर्घ उतारे हैं ॥

दोहा—रत्न रासि नभ वरषत्ती, सुरदेवी करें सेव ।
मात उदर नभ मांस लों, निराबाध जिनदेव ॥

ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय आषाढ़ वदी दौज गर्भ मंगलाय अर्घं ।

शुभ चैत्र वदी नवमीं दिनको, भया प्रगट मात उरसे लाला ।
है स्वर्ण समान शरीर दीप्ति, ज्यों पूरव उदय अर्क वाला ॥
प्रच्छन्न सची लाई प्रभुको, लखि रूप सुरेन्द्र न तृप्त भया ।
लोचन हजार करि नमस्कार, गिरि शीश जाय अभिषेक ठया ।

दोहा—सहस अठतर कलश जल, क्षीरो दधि से लाय ।
शीश धार जगदीश के दीनीं मन हर्षाय ॥

ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय चैत्र वदी नवमीं जन्म मंगलाय अर्घं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूरब सु तिरासी लाख वर्ष, भोंगे जग भोगऋषभ स्वामीं।
असि, मिस, कृषि आदि क्रिया सारी, बतलाई हैं अंतर्यामीं॥
लखि मृत्यु सुरी वैराग्ञ हुआ, लौकान्तिक सुर जै नाद करें।
है चैत्र बदी नवमीं तप दिन, तजि गृन्थ रूप निर्ग्रन्थ धरें॥

दोहा—धरा योग षट मास का, कायोत्सर्ग सुध्यान।
मानो मेरु अचल खड़ा, नमत सुरासुर आन॥

ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय चैत्रवदीं नवमीं तपमंगलप्राप्तयअर्घं।

षट मास तलक हुए अन्तराय, श्रीयाँस इक्षु रसदान दिया।
हुये पंचाश्चर्य सुरत्न वृष्टि, सुर नर मिल जैजै नाद किया॥
शुभ फाल्गुण वदि एकादशिको, तप बल से केवल पद पाया।
फिर खिरी दिव्य ध्वनि समोशर्ण, सुरनर मिल चर्ण शीश नाया॥

दोहा—मुनि श्रावक पद की क्रिया, दशलाक्षण मय धर्म।
सप्त तत्व षट द्रव्य का, बतलाया सब मर्म॥

ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय फागुन वदी एकादशी ज्ञान मंगलाय अर्घं।

जग को शिव मारग दर्शा के, कैलाश शिखर पर आये है।
सब योग निरोध बने ध्यानीं, चतुकर्म अघाति नशाये हैं॥
है चौदश बदी माघ महीना, आदीश्वर पद निर्वाण लिया।
चक्री सुर नर मिलकर सबने, पूजन निर्वाण कल्याण किया॥

दोहा—गुण अनन्त धारी विमल, सिद्धि निरंजन नाथ।
सब दर्शी सर्वज्ञ जिन, चरण नवाऊँ माथ॥

ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जिनेन्द्राय माघवदी चौदशनिर्वाण प्राप्तायअर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* जयमाल *

दोहा—मरुदेवी के लाड़ले नाभिराय के लाल।
भरत चक्रपति के पिता, बर्णूं गुण जयमाल॥

(तर्ज—राधेश्याम रामायण)

आदीश्वर गुण महिमा अपार, सुर गुरु नहिं कहत पार पावें।
हम अल्प बुद्धि किम वर्ण करें, बहु भक्ति युक्त पद शिर नावें॥
है धन्य भाग्य शुभ आज मेरा, मैं पाये अनुपम सुखदाता।
लखि वीतराग मय शान्ति रूप, मो हृदय आज पाई साता॥
मैं दीनानाथ दयानिधि लखि, चरणों में शीश झुकाता हूँ।
जो दुख इस जीवन में पाये, हे नाथ मैं उन्हें सुनाता हूं॥
ससार महावन में भटकत, नहिं अब तक लगा ठिकाना है।
चतुगति में भ्रमत रहा भगवन, धरि २ कर भेष जु नाना है॥
पी मोह महामद को भूला, मैं अपना और बिगाना है।
पर को ही अपना मान लिया, पर में मन खूब लुभाना है॥
मन इन्द्रिय विषयों में रम कर, मैंने हे नाथ कुकृत्य किये।
दुख कर फल मैं भोगा उनका, जग में बहु नट वत नृत्य किये॥
तृष्णा की दौड़ रही भारी, पाई न एक क्षण को साता।
सुर, नर, नारक, पशु योनि माँहिं, जोड़ा मैंने सब से नाता॥
अब काल लब्धि का पेरा मैं, चरणों की शरण सु आया हूँ।
मेंटो हे नाथ व्यथा मेरी, मैं भव बन में भटकाया हूँ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम बड़े गरीब निवाज प्रभो, मैं दुखिया दास तुम्हारा हूं ।
नहिं लगा ठिकाना कहीं मेरा, मैं फिरता दर २ मारा हूं ॥
ना स्वर्ग सम्पदा चहूँ नाथ, ना चाह मुझे अब सुत धन की ।
मिल जावै मेरा रूप मुझे, मिट जाय असाता मो मन की ।
मैं वारम्वार पुकार करूँ, मोको भव दधि से पार करो ।
मैं सेवक तुम चरणों का हूँ, मेरा जग से उद्धार करो ॥
'भगवत्' की करुण प्रार्थना पर, भगवन् दो ध्यान दया कीजै ।
मिल जावै सत्य सु शिव स्वरूप, संसार भ्रमण मेरा छीजै ॥

घत्ता—आदीश्वर ध्याऊँ, पूज रचाऊँ,
वहु प्रकार गुण को गाके ।
मैं दास तुम्हारा, चर्ण सहारा,
"भगवत्" लीना है आके ॥

ॐ ह्रीं श्री आदीश्वर जि० महार्घं ।

[सोरठा]

मन, वच, तन, करि शुद्ध, जो पूजै आदीश पद ।
सुर, नर पद अविरुद्ध, अन्तिम शिव पद को लहै ॥
मरसलगंज सु धाम, बिम्ब विशाल सु पूजिये ।
भगवत् फरिहा ग्राम, सेवक ऋषभ जिनेन्द्र पद ॥

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चन्द्र प्रभू जिन पूजा

—o—

(गीता छन्द)

शुभ नगर चन्दपुरी मनोहर, रचा धनपति सार है।
धन, धान्य, जन, कनपूर्ण, जहाँ, वहै नदी गंगा धार है॥
महासेंन भूपित हैं प्रतापी, लक्ष्मणा रानीं महा।
तिन गेह में प्रगटे प्रभाधर, चन्द्र चिन्ह चरण लहा॥
प्रभु नाम 'चन्द्रप्रभू' सुसार्थक चन्द्र सम तन श्वेत है।
धारें अनन्त चतुष्ट गुण, भवताप को हर लेत है॥
तीर्थेश अष्टम चन्द्र जिन, आवौ यहाँ पूजूं चरण।
स्थापना करि पद जजूं, मिट जाय सब भव का भ्रमण॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्र अत्र अवतर २ ०।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ०।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितौ०।

(अडिल्ल छन्द)

गंगा प्राशुक नीर, कनक भाजन भरूं।
प्रभु चरणण के तीर, जाय धारा करूं॥
चन्द प्रभु जिनराय, जन्म, मृत्यु, दुख हरौ।
भवदधि पार लगाय, मुझे निज समकरौ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय जन्म जरा मरण विनाशनाय जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्वेत, सुगन्धित सार, सु चन्दन लीजियै ।
केशर श्रौ घनसार, युक्त पद दीजियै ॥
मिट जावै भवताप, मिलै साता मुझे ।
चन्द प्रभू हरौ पाप, गंध पूजों तुझे ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं ।

चन्द्र समान सुश्वेत, अखंडित लाइये ।
धारि हृदय उम्मेद, सु चरण चढ़ाइये ॥
अक्षय पद की चांह, पुंज अक्षत दिये ।
भक्ति भाव मन माँह, चन्द जिन पूजिये ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अर्घं ।

भरि कंचन के वासन, पुष्प चढ़ाइये ।
काम दाह के नाशन, प्रभु ढिंग आइये ॥
भव २ में दुखदाय, मिटै बाधा मेरी ।
पूजों पुष्प चढ़ाय, शरण लीनी तेरी ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय कामवाण विनाँशनाय पुष्पं ।

क्षुधा महादुख रूप, जगत जन ग्रस्त हैं ।
सुर, नर, पशु उर रूप, भरन को पस्त हैं ॥
क्षुधा असाता मेंटन, प्रभु चरणन परूँ ।
थाल रचा नैवेद्य, सुजिन पूजा करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय क्षुधारोग बिनाशनाय नैवेद्यं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाऊँ दीप संजोय, सु थाल भरायकें।
घृत में बाती बोय, कपूर जलायकें ॥
चन्द प्रभू पद पूजों, मोह तिमर नसै।
ज्ञान जोति मम हूजौ, निज पद ज्यों लसै ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं।

अष्ट कर्म हों नष्ट, हृदय यह आश है।
अष्ट प्रकार विशिष्ट, सु धूप सुवास है।
अष्टम श्री जिनराय चरण तल तल खेव हूँ ॥
अष्ट सुगुण शिव दाय, मिलें पद सेव हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय दुष्टाष्टकर्म विनाशनाय धूपं।

फल उत्कृष्ट अपार, थार भरि लीजिये।
चन्द प्रभू पद सार, गाय गुण दीजिये ॥
मिट जावै भव भार, सार फल पाइये।
नित प्रति फल सों पूजि, चन्द प्रभु ध्याइये ॥

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं।

(तर्ज—राधेश्याम रामायण दुर्मिल छन्द)

भरि लिया है उज्वल गंगा जल, चंदन अक्षत भरि लाया हूं।
बहु पुष्प, लेय नैवेद्य, दीपं, फल, धूप लेय करि आया हूँ ॥
सबको मिला कर अर्घ किया, चन्दा प्रभू चर्ण चढ़ाऊंगा।
गुण गाऊंगा, हर्षाऊंगा, मैं पद अनर्घ को पाऊंगा ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचकल्याण

है वदी पंचमीं चैत्र मास, भगवान गरभ में आये हैं।
लच्छमणा मात सोलह सुपने, देखे फल उत्तम पाये हैं॥
सुरपति की आज्ञा से धनपति, रचिनगर रत्न बर्षाते हैं।
उन पूजा कीनीं बहु विधि सों, हम प्रभु पद अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय चैत्र वदी पंचमीं गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घं।

जन्म चन्द्र प्रभु हुआ शोर, चतु देवों के बाजे बाजे।
प्रभु के तनकी निर्मल सुजोति, लखि कोटि चन्द्र की दुति लाजे।
गिरि शीश किया अभिषेक इन्द्र, पुनि तांडव नृत्य रचाया है।
वदि ग्यारसि पूस है जन्म तिथी, हम प्रभु पद अर्घ चढ़ाया है॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रायपूस वदी ग्यारस जन्म मंगलप्राप्ताय अर्घं।

चिरकाल भोग भोगे जग के, पुनि जानि अनित्य सुत्यागे हैं।
सब त्यागि विभव परिवार ग्रन्थ, शुद्धातम ध्यान में लागे हैं॥
है पूस वदी ग्यारस शुभ दिन, कच लुंच किया ता जाकर वन।
सुर,नर,खग, मिल पूजा कीनीं,मैं पूजों मुख कहि धन,धन,धन।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूस वदी ग्यारस तप मंगल प्राप्ताय अर्घं।

फागुन की वदी सप्तमीं को, घातिया घाति केवल पाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आसन कंपे हैं देवों के, सुर नर मुनि मिल मंगल गाया ॥
राजे हैं समवशरण स्वामीं, चतुरानन दर्शन पाते हैं।
वहाँ पूजैं सुर, खग, नागपती, हम यहाँ पद अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय फागुन कृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घं।

खिरती निरअक्षरमय वाणी, ज्ञानीं गणधर समझाते हैं।
है अतिशय वाणी ऐसा, सुर, नर, पशु सब मन भाते हैं॥
पुनि योग निरोध लिया शिवथल, फागुन वदि सप्तम गाई है।
मैं पूजों श्री जिन चन्द्र प्रभू, ले अर्घ हृदय हर्षाई है॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्णा सप्तम्यां मोक्ष मंगलाय अर्घं।

(दोहा)

चन्द्र प्रभू के विमल गुण, हैं अनन्त विशाल।
अल्प बुद्धि पर भक्ति बहु, गाऊँ गुण जैमाल॥

(त्रिभंगी छन्द)

चन्द्र प्रभु स्वामीं, अन्तर्यामीं, शिवगामीं, भव दुख हारी।
तुमको मैं ध्याऊं शीश नवाऊं, गुण गाऊं मंगलकारी॥
तुम अशरण शरणां, भव दुख हरणाँ, पूजों चरणाँ थारे।
बस यह मैं चाऊं, कर्म नशाऊं, हो जाऊं, भवदधि पारे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(लक्ष्मीवर्ती छन्द)

चन्द्र प्रभू आपके, गुण का क्या पार है।
भक्ति युत दास करता, नमस्कार है॥
आपही हैं भवोदधि से, तारण तरण।
यह समझ मैं लही आपकी पद शरण।१।

आपने दीन पशु भी, दिए तार हैं।
पापी जन का भी किया बेड़ा पार है॥
स्वान, वानर, अजा, सिंह तारे सही।
बैल, नौला, सरप, भेक आदिक कही।२।

जो शरण में गया पार उसको किया।
इसलिए ही मैंने नाथ शरण लिया॥
मैं भ्रमा चारि गति में, सहे दुख घने।
कौन समरथ प्रभू, सामने जो भने।३।

आपने चोर अंजन, किया पार है।
जोकि था सप्त विषनी दिया तार है।
तो मुझे भी उबारो, करो देर ना।
मैं शरण में तुम्हारी हूँ, कुछ फेर ना।४।

आपका नाम जपि, सिन्धु मझधार है।
नाथ श्रीपाल को, कर दिया मझधार है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुष्ट मेंटा है मेंटा औ भव रोग को।
जाय सिद्धालय भोगै अतुल भोग को।५।
पांडवा जल रहे थे, ग्रहे लाख के।
नाम सुमिरत ही निकले, सुरंग नाखिके॥
नाम जपि कृष्ण, कालीदहे कूदिया।
नाग को जाय कर के, वहाँ वस किया।६।
दुष्ट रानी कहे, भूप शूली दई।
नाम सुमिरत वो, शूली सिंहासन भई॥
प्रभु सुदर्शन का, सब कष्ट तत्क्षण हरा।
अन्तमें शिव महल में, उसे ले धरा।७।
सती सीता से राघव ने, ली धीज है।
अग्नि के कुण्ड धसि यदि सती चीज है॥
नाम ले आपका, सिया धसि जात है।
कर दिया जल अथल, कमल लहलहात है।८।
द्रोपती का सभा में, हरा चीर है।
केश खींचे न, मन में करी पीर है॥
सती कीना प्रभू, आपका ध्यान है।
चीर बढ़ता गया, चूर अभिमान है।९।
अंजना सती, गिर गुफा पर शेर है।
आपके नाम की, सती की टेर है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूर कीना उपद्रव, सती का सही।
शेर भागा सती सुक्ख साता लही ।१०।
सती सोमा का पति, दुष्ट बदकार है।
नाग लाया बताया कि गलहार है ॥
नाम जपि आपका, लीना उसबार है।
महा विषधर सरप हुआ मणिहार है।११।
कहाँ तक मैं कहूं, जबकि अणगनित हैं।
तार दीने प्रभू, आपने पतित हैं ॥
कष्ट मेंटा दिया, सबको शुभ धाम है।
जिसने लीना प्रभू, आपका नाम है।१२।
मैं पड़ा हूँ शरण में, लगी आश है।
तार दोगे मुझे पूर्ण विश्वास है ॥
ना चहूँ नाथ सुत, धन, सुरग सम्पदा।
मेंटि दीजै प्रभू, मेरी भव आपदा ।१३।
मैं तुम्हें छोड़ कर नाथ जाऊं नहीं।
ना ठिकाना मेरा, अन्य जग में कहीं ॥
बनके चींटा, चरण में चिपट जाऊंगा।
नाम हर दम तुम्हारा ही, रट पाऊंगा ।१४।
नाथ भवदधि किनारे, लगा दीजिये।
ज्ञान की जोति मो घट जगा दीजिये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दास 'भगवत्' को तुम नाम आधार है।
क्यों कर दोगे फिर, उसको भव पार है।१५।

(घत्ता—त्रिभंगी छन्द)

चन्दा प्रभु देवा, की पद सेवा, पूजों मेवा भरि थाली।
वसु द्रव्य मिलाके, अर्घ बनाके, शीश झुकाके गुण गाली ॥
प्रभु अधम उधारा, सुयश तुम्हारा, सुन कर भारी की पूजा।
भव दुख मिट जावै, करम नशावै, शिव पद होवै हा पूजा ॥

॥ महार्घं ॥

(गीता छन्द)

चन्द्र प्रभू जिनराज पूजा, जो करै मन लाय है।
वह भोग सुर पद भोगि के, पुनि शिव नगर को जाय है॥
धन, धान्य, सुत औ सम्पदा, यहाँ लहै जो प्रभु दास है।
सेवक प्रभू पद पद्म 'भगवत्', नगर फरिहा वास है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री शान्तिनाथ जिन पूजा

(गीता छन्द)

शुभ नगर नागपुरी महा, उपनाम है हथिनांपुरी।
नृप अश्वसैन प्रतापधारी, नाम सुनि कांपें अरी॥
एरावती शुभ सती जिनके, नारि सद्गुण धाम है।
उन उदर से उत्पन्न प्रभु जी, शान्तिनाथ सुनाम है।
हैं शान्तिदाता जगत को, दुख दरिद नांशन देव हैं।
सुर असुर नरपति, खगपती,, मुनिगण करें पद सेव हैं॥
पद चक्रवर्ती महान विक्रम, रूप पद सु अनंग है।
तीर्थेस षोडस में प्रतापी, करौ भव दुख भंग है॥

सोरठा—पद पूजों मैं नाथ, आवौ तिष्ठौ मम हृदय।
आह्वानन विधि साथ, अष्ट द्रव्य ले पूज हूं॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव २ व षट् सन्निधीकरणं॥

[त्रिभंगी छन्द]

शीतल प्राशुक जल, ढोंकि कमल दल, चरणण तल दूं त्रयधारा।
ममजन्म मरण मल, धुलि हो निर्मल, प्रगटै कुसल आत्मा म्हारा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाऊँ मैं साता, मेंटि असाता, हे जग त्राता, सुखदाता।
मैं शरण तुम्हारी, ली सुखकारी, हे भवहारी दुखघाता॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं।

केशरि कश्मीरी, चंदन सीरी, संग कर्पूरी मिला लिया।
कंचन सुकटोरा, भरि मुँह जोरा, श्री जिन घोरा, धार दिया॥
भव ताप मिटावन, शिव सुखपावन, मो मन भावन, भावठया।
पूजों सोलम जिन, करि शुध तनमन, है यह शुभ दिन भाग्य जया॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं।

भव सागर खारी, अति दुखकारी, चतुगति नदी बहै भारी।
चारौ दुख, थिर न रहाई, भय उपजाई, त्तय कारी॥
मैं त्तय दुख नाशन, शिव सुख भासन, अत्तत बासन, भरि पूजों।
अत्तय पद दीजै, निज सम कीजै, भव दुख छीजै गुण हूँजों॥

ॐ ह्रीं श्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अत्तयपद प्राप्ताय अत्ततं।

भट काम प्रबल है, नवदल बल है, मोंटा खल है, झकझोरै।
सुर, नर, पशु, दंडे, हर हरि खंडे, मन्मथ भंडे, बहु जोरै॥
मिट जावै मन्मथ मिलै मुक्ति पथ, स्वात्म सुगुण कथ के गाऊं।
जिन शान्ति सुध्याऊँ पुष्प चढ़ाऊँ, काम नसाऊँ सुख पाऊं॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाँशनाय पुष्पं।

यह त्तुधा वेदनां, हृदय छेदनां, रखै भेदनां, जग लागै।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब होय भोर, तब लगै जोर. तन मन मरोर.इत उत भागैं ॥
यह दुख बहु भारा. मिटैं हमारा. नेवज थारा. चरण धरूं ।
बहु गुण मुख भाखूं यह अभिलाखूं .शिव रस चाखूं चर्ण परूं ॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।
अज्ञान अंधेरा, छया घनेरा, निज पर मेरा सूझ नहीं ।
भूला मैं भारी, बुद्धि बिगारी, जड़ अंधियारी, बूझ नहीं ॥
दीपक ले आया, घृत भरवाया, जोति जलाया सुखदाई ।
पूजों पद थारे, प्रभू हमारे, गुण गण सारे प्रगटाई ॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं ।
वसु कर्म प्रतापी. थिति निज थापी, मो पर पापी छाये हैं ।
मैंने मन चाया, योग चलाया, इन्हें बुलाया आये हैं ॥
देते दुख भारी, पड़े पिछारी, नाथ तुम्हारी ली शरणाँ ।
इन दुष्टन दंडौं, अग्नि प्रचंडौं, धूप सु मडौं तुम चरणाँ ॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय दुष्टाष्टकर्म विनाशनाय धूपं ।
फल महा मनोहर, थाली में भरि, प्राशुक कर पद भेंट धरूं ।
गाऊं गुण गाथा, नाऊं माथा श्रीजिन नाथा पाँय परूं ॥
फल चहूं जिनेश्वर, हे परमेश्वर, दया निधेश्वर शिव दीजै ।
मैं सेवक थारा, लिया सहारा, भवदधि पारा प्रभु कीजै ॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं ।
सब द्रव्य मिला कर. अर्घ उतारौं, नाथ सहारौ तुम पाऊं ।
बहु थुति उच्चारौं, अर्घ उतारौं, नाथ सहारौ तुम पाऊं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो अर्घ चढ़ावै, प्रभु गुण गावै, मन वच ध्यावै पद अरचै ।
सुर शिव पद पावै, कर्म नसावै, सिद्ध कहावै पद परचै ॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घं ।

(पचकल्याण) तर्ज—राधेश्याम रामायण

श्री शान्ति प्रभू अवतार होय, सुरपति ने यह आज्ञा दीनीं ।
बर्षावौ पन्द्रह मास रतन रचि नगर रतन बर्षा कीनीं ॥
ऐरादेवी सपने सोलह, देखे फल भूपति बतलाया ।
भादों बदि सप्तमि दिन सुन्दर, सुर चय माता के उर आया ॥

(दोहा)

गरभ कल्याण नियोग लखि, सुरपति पूज रचाय ।
मैं पूजों यहां भक्ति युत, बसु विधि अर्घ चढ़ाय ॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय भादों कृष्णा सप्तम्यां गर्भ मंगलाय अर्घं

छप्पनकुमारिका पट देवी, नब मास करी माता सेवा ।
नव बारह योजन के प्रमाण, मन मोहक नगर रचा देवा ॥
है चतुर्दशी वदि जेठ प्रभू, जन्मे जगने साता पाई ।
गिर पर अभिषेक किया सुरपति धरि नाम शांतिजिन सुखदाई ।

(दोहा)

अनहद बाजे नभ बजें, सुर नर जै जैकार ।
पूजें पद युग शान्तिजिन, मैं पूजों पद सार ॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जेठ कृष्णा चतुर्दश्यां जन्म मंगलाय अर्घं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पा युवा अवस्था राज्य किया, छह खण्ड भूमि के स्वामी हैं।
हैं चक्रवर्ति औ कामदेव, तीर्थंकर शिवपुर गामी हैं॥
या कारण जानि अनित्य जगत, सब राज पाट को तज दीना।
वदि चौदस जेठ प्रभू वन में, हो नग्न दिगम्बर तप कीना॥

(दोहा)

तप कल्याण तनीं करी, पूजा सुरपति देव।
मैं पूजों वसु द्रव्य ले, करूँ शान्ति जिन सेव॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जेठ कृष्णा चतुर्दश्यां तप मंगलाय अर्घं।

दुद्धर तप तपि मन इन्द्रिय कें, सब विषय चीण कर डाले हैं।
थे कर्म घातिया दुखदाता, ध्यानाग्नि माँहि सब जाले हैं॥
था पौष शुक्ल दशमी शुभ दिन, प्रभु केवलज्ञानी पद पाया।
सुर, नर, खग, मुनि प्रभु चरणों में, बहु भक्तियुक्त मस्तक नाया॥

[दोहा]

समव शरण रचना करी, पूजा करी सुरेश।
मैं पूजों यहाँ भाव युत, हरौ नाथ मम क्लेश॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय पूस शुक्ला दशम्यां केवलज्ञान मंगलाय अर्घं।

धर्मोपदेश दीना हितकर, करि २ विहार बहु देशों में।
श्रावक, मुनि का आचार महा, पालन कीजै दो भेषों में॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभ तिथी जेठ की बदि चौदस, सम्मेद शैल निर्वाण लिया।
है कूट मनोहर शान्ति प्रभु, जहाँ से शिव नगर पयाण किया ॥

[दोहा]

नौ लख नौ कोडा कोडी, नौ हजार शत नोय।
मुनि निन्यानवै शिव गये, पूजों पद शुध होय ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जेठ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्ष मंगलाय अर्घं।

[सोरठा]

शान्तिनाथ जिनराय, नाम लेत संकट मिटैं।
चरणन शीश नवाय लिखूं सुगुण जयमाल अब ॥

(तज—राधे० रामा० दुर्मिल छन्द)

प्रभु गुण गाथा को कवि गावें, सुरगुरु नहिं पार लहाते हैं।
चतु ज्ञान धरें गणधर स्वामी, गुण वर्ण करत थक जाते हैं ॥
पद चक्रवर्ति की जो विभूति, संक्षेप रूप बतलाई है।
छह खंड मही का अटल राज, नवनिधि जिन घर सुखदाई।१।
हैं चौदह रतन सुक्ख दाता, चेतन औ अचेतन दो भाँती।
छिनवै हजार रानी सुन्दर, सुत हैं सहस्र बहु हैं नाती ॥
अष्टादश कोड़ि कहे घोड़ा, अरु चौरासी लख हैं हाथी।
हैं मुकुट बंध बत्तीस हजार, भूपति चक्री के संग साथी।२।
इत्यादि विभूति चक्र पद की, प्रभु ने सब ही ठुकराई है।
करने को स्वपर कल्याण नाथ, मन बारह भावन भाई है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लौकान्तिक सुर धरि पुष्प भेंट, वैराग्य वृद्धि बोले वाणीं।
शिबका चढ़ि बन को चले नाथ, तप करने की मनमें ठाणीं॥
कचलुंच, मुंच सब ग्रन्थ भार, बन गये दिगम्बर सुखदाता।
श्रीशान्ति महामुनि चरणों में, बहु भक्ति युक्त जग शिरनाता॥
ज्ञानावर्णी, दरशनावर्णी, जो अन्तराय मोंहनीं कहा।
प्रभु ध्यान अग्निमें तप बल से, चारौ ही घातिया कर्म दहा।४।
अब समवशरण में अन्तरिक्ष, कमलासन नाथ खिरैं वाणी।
सुर, नर, पशु निज २ भाषा में, समझें प्रभु वाणी कल्याणी।
पुनि योग निरोध ध्यान रत हो, चतुकर्म अघाती नाश दिया।
सम्मेदशिखिरसे शान्तिप्रभू, निर्वाण होय शिव वास किया।५।

[सोहनीं छन्द]

श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र जग में, महा मंगल रूप हैं।
सब कष्ट हरता, शान्ति करता, शिवनगर के भूप हैं॥
जिन नाम लेते ही हृदय में, बहै शीतल श्रोत है।
मिट जात जड़ अज्ञान सारा, होत ज्ञान उद्योत है।६।
सब विघन जाँय पलाय सुमिरत, शान्तिप्रभु का नाम है।
ध्यावै सदाँ जो शुद्ध मन वच, लहै उत्तम धाम है॥
भव ताप मेंटन शान्ति जिन, समरथ न कोई और है।
त्रैलोक्य भूषणनाथ यह, देखा मैंने कर गौर है।७।
निज शरण आये की प्रभू, रखते सदाँ ही लाज है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह बिरद सुनकर के ही मैं, प्रभु की शरण ली आज है॥
मिट जाय भव का भ्रमण मेरा, बर मुझे यह दीजिये।
मिल जाय मेरा रूप मुझको, नाथ कृपा कीजिये।८।
अशरण शरण तारण तरण, यह सुयश जग विख्यात है।
कपि, स्वाँन, सिंह, पशु तलक, तारे सुनीं यह बात है॥
सुनिकर सुयश आया शरण, अब तो लगा दो पार है।
'भगवत्' भंवरमें फसगई, नैया मेरी मझधार है।९।

[घत्ता—सादूर्ल विक्रीडित छन्द]

पूजों श्रीजिन शान्तिनाथ प्रभु को, ध्याऊं सदा नामको।
गाऊं गुण बहु भक्ति धारि मन में, पाऊं जो शिव वामको।
मिटजावे सब कष्ट, अष्ट अरिका, वसु गुण प्रगट हों मेरे।
मन, वच, काय, विशुद्ध होय करके, पूजूं प्रभू पद तेरे॥

॥ महार्घं ॥

अडिल्ल छन्द

जो नर मन, वच, काय, शान्ति पूजा करै॥
आपद कष्ट नशाय, सुक्ख बहु संचरै।
स्वर्ग सम्पदा लहै, मिलै शिव जास है।
श्री जिन सेवक 'भगवत्', फरिहा वास है॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥ परिपुष्पांजलिदद्यात्॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री मुनिसुव्रतनाथ जी पूजा

(छप्पय छन्द)

—०—

मुनि सुव्रत जिन नाथ, चरण में शीश झुकाऊं।
भक्ति भाव शुभ धारि, प्रभू की पूज रचाऊं॥
भूप सुमंत जु पिता, मात श्यामा सुखकारी।
श्याम शरीर उतंग, बीस धनु मंगलकारी॥
कछवा शरीर सु चरण में, शुभ लक्षण सु विशाल।
वर्ष सहस्र सु तीस थित, आवौ यहाँ गुणमाल॥

सोरठा—भव दुख भंजनहार, शिव सुख दाता प्रगट जग।
प्रभु यहाँ जाहु पधार, पूजों पद मैं भाव युत॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर २ संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधीकरणं॥

(कुसमलता छन्द)

जन्म, जरा, मृत, मल अनादि का, लगा मेरी आतम के साथ।
उसे मिटावन जल ले आया, पूजों पद सु तुम्हरे नाथ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनि सुव्रत सद्व्रत के दाता, मेंटौ जन्म, मरण, दुखदाय।
प्राशुक शीतल जल त्रय धारा, नाथ चढ़ाऊं थारे पांय॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म, जरा,मरण, विनाशनाय जलं।

झुलस रही मम आत्मशक्ति सब, भयानीक भव ज्वाला में।
पड़ै चैन दिन रैन मुझे, ना ध्यान लगै प्रभु माला में॥
ले सुगंधयुत चंदन चरचों, मुनिसुव्रत साता कीजै।
मिटैं मेरा भवताप दयानिधि, मांगू यह दाता दीजै॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं।

एक २ आतम प्रदेश पर, जमे अनन्त कर्म दुखदाय।
ज्ञान शक्ति मेरी को हनने, मुनिसुव्रत जी लिया दबाय॥
खंड २ कर दिया मेरा बल, चय कर डाली शक्ति अपार।
अक्षय पद के प्राप्त हेतु मैं, अक्षत पूजूँ भरि २ थार॥

ॐ ह्रीं श्रीं मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं।

काम महा बलवान प्रतापी, इसने सबको कीना जेर।
तुम्हें छोड़ कर बचा न कोई, जो न बन्द हो इसके घेर॥
विषय लम्पटी बन कर मैंने, नाना पाप कमाया है।
काम नशावन पुष्प थाल भरि, सेवक पूजन आया है॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं।

क्षुधा वेदना जग को लागी, सुर, नर, पशु, नारक भव में।
दुख दाता यह रोग भयानक, फैल रहा है यह सब में॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इधर भरा उत होना खाली, भरते भरते हो खाली।
क्षुधा मिटै नैवेद्य चढ़ाऊँ, प्रभु पद आगे भरि थाली॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगनांशनाय नैवेद्यं।

महा मोहनीं अंध छा गया, ज्ञान दशा अज्ञान छया।
भूल गया कर्तव्य आपनां, पर है मेरा भाव भया॥
दीपक जला करूं पद पूजा, अंध मोहनी मिट जावै।
मुनिसुव्रत प्रभु तुम प्रशाद से, ज्ञानप्रभा घट चमकावै॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीप।

धूपायन लेकर कंचन का, उसमें अग्नि जलाता हूं।
अष्ट करम को नष्ट करन, वसु अंगी धूप चढ़ाता हूँ॥
यह दुखदाता करम जलें वसु, यही भावना भाता हूं।
मुनिसुव्रत वस कर्म मिटावौ, तुम पद शीश झुकाता हूँ॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय दुष्टाष्ट कर्म विनाशनाय धूपं।

शिव फल पावन की धरि इच्छा, फल सों पूजों पद थारे।
मिलें मुझे मन वाँछित फल प्रभु, मिटें करम सब दुखकारे॥
उत्तम फल चुन चुनकर लाया, मुनिसुव्रत पद भेंट धरूं।
शिव पद पाऊं, सिद्धि कहाऊं, भक्तिभाव से पूज करूं॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं।

जल चंदन, अक्षत सु पहुपले, नेवज, दीप लिया कर में।
धूप और फल मिला अर्घकर, पूजों पद पाऊं वर में॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिलै अनर्घ महापद मुझको, फेर न जग में मैं आऊं।
मुनिसुव्रत पद जजों भाव सों, जिससे अविचल थल पाऊं॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं।

(पंचकल्याण—हरि गीता छन्द)

श्रावण वदी दुतिया सुभग, दिवलोक तजि माता उदर।
आये हैं मुनिसुव्रत प्रभू, पद पूजते सुर, असुर नर॥
नगरी रचाई धनदने, रतनों की वर्षा अतिकरी।
मैं जजों अर्घ चढ़ाय पद, शुभ कल्याणक घरी॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय श्रावण वदी दुतिया गर्भ मंगलाय अर्घं।

जन्मे प्रभू ज्यों पूर्व दिश से, होय उदय प्रभाकरं।
चतु देवलोक बजे सुबाजे, करें जै जै नर घर॥
वैसाख वदि दशमीं, बधाई भूप के घर बज रही।
सुर पूजते गिर शीश पद, मैं यहाँ पद पूजों सही।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय वैसाख कृष्णा दशम्यां जन्म मंगलाय अर्घं।

शुभ भोग भोगे जगत के, किया राज काज महान है,
इक दिन यकायक ही प्रभूको, हुआ तप का ध्यान है॥
तजि भोग योग लिया सुवन, कच लुंच अंबर त्याग के।
वैसाख वदि दशमीं जजें, सुर पद जजूं बड़ भाग के॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय वैसाख वदी दशमीं तप मंगललाय अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तप तपा दुद्धर ध्यान अविचल, ज्ञान केवल पा लिया ।
उपदेश हितकर दिया प्रभु, उद्धार भवि जन का किया ॥
शुभ कीर्ति फैली जगत में, प्रभू के सु निर्मल ज्ञान की ।
वैशाख वदि नवमीं शुभग, पूजा करों भगवान की ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृष्णा नवमीं ज्ञान मंगलाय अर्घं ।

फागुन वदी है द्वादशी, सब योग प्रभु सु निरोध कर ।
शुभ ध्यान शुक्ल किया अचल, आकर प्रभू सम्मेद गिर ॥
दामिन समान सु तन खिरा, शिवनगर आतम बास है ।
सुर पूज कीनीं भक्तियुत, ले अर्घं पूजै दास है ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय फागुन बदी द्वादशी महामोक्ष मंगलाय अर्घं ।

[सोरठा]

मुनिसुव्रत जिनराय, विघन हरन मंगल करन ।
मोकों करौ सहाय, भाषूँ गुण जैमाल अब ॥

(त्रिभंगी छन्द)

श्री मुनिसुव्रत पद, जजों हो निर्मद, जग की हद जासों पावों ।
मिटजाय करम कद, है जो अतिबद, गद भद प्रभूपदको ध्यावों ॥
पाऊँ मैं शिव सुख, उज्वल हो मुख, मिटै सकल दुख जग केरा ।
अविचल पद मंडों, भव भय खंडों, जग को छंडों शिव डेरा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(कामिनी मोहन छन्द)

जै जै श्यामा के नंदा, जजों तुम चरण ।
कौन समरथ करैं, नाथ तुम गुण वरण ॥
थके गणधर गुणीं, ज्ञान धारी सभी ।
बाल बुद्धी अलप है, मेरी प्रभु अभी ।१।

ज्यों गहै बाल जल में, पड़े बिम्ब कों ।
ज्यों चढ़ौ चाहें पंगुल शिखिर शृंग कों ॥
त्यों ही मैं भी करूं, नाथ गुणगान हैं ।
देख कर के हंसेंगे, जो विद्वान हैं ।२।

ख्याति ना चाँह है, कुछ मुझे नाम की ।
भक्ति हैं सो हृदय में, शु शुभ काम की ॥
मैं हूँ सेवक प्रभू, नित जजूँ तुम चरण ।
जिससे मिट जाय मेरा, यह जन्मन मरण ।३।

दीन दुखिया हूं, पेरा हुआ कर्म का ।
भावना होय कारज, कोई धर्म का ॥
जिससे मिट जाय, मेरा यह भव बास है ।
इसी आधार पर, शरण में दास है ।४।

आप की श्याम छबि है, मनोहर अहा ।
कोटि रवि चन्द्र लाजें, कहें औ कहा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप अनुपम हैं, उपमा को ना कुछ सही।
दास मस्तक झुकावै, चरणमें सही ।५।
आपने ध्यानबल से, करम सब हते।
आप हैं विमल ज्ञानीं, सुगुण मणि छते॥
आपका बहु विभवयुक्त दरबार है।
नाम जिसका समोशर्ण, सुखकार है।६।
बैठने की सभा जहाँ, द्वादश महा।
देव, सुर, नर, पशु, मुनि सभीथित लहा॥
जिसने दे ध्यान, सुन ली प्रभू तुम गिरा।
जीव वह भव समुद से, हैं निश्चय तरा।७।
आपकी बाणी कल्याणी प्रख्यात है।
आप सम होय, वह भी जो हिरदै धरै॥
भोग बहु भोगि जग, जाय शिवतियवरै।८।
आपका नाम जपते, टलें ग्रह सभी।
आपका नाम जपते, न हो दुख कभी॥
आपका नाम जपते, करम सब भजें।
आपका नाम जपते, सुरग सुर जजें।९।
आपके नाम में, यह चमत्कार है।
आप सम ही बनें, जीव गुणधार है॥
जो करै भाव से, आप पूजा सदां।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूर भागें तत्त्वण सभी आपदां ।१०।
सम्पदा जेती जग में, वनें वह धनीं ।
इन्द्र पद, चक्र पद आदि संज्ञा भनीं ॥
अन्त में नाश भव जाल, शिव बास है ।
सिद्ध पद को लहै, जो कि पद खास है ।११।
मैंने लीनीं है शरणां, प्रभू आपकी ।
छोर आजायगी, अब मेरे पाप की ॥
मुझे मिल जाय मेरा, जो निज रूप है ।
कर्म दुष्टों ने डाला, जो भव कूप है ।१२।
मैं न संसार सुख नाथ, कुछ भी चहूं ।
चाहता हूँ सदाँ, प्रभु शरण में रहूँ ॥
या रहूं या कहीं, रहूं प्रभू पास में ।
मुझे सेवक समझ, लो प्रभू खास में ।१३।
मुझे अपना समझ कर, उबारो प्रभो ।
मुझे दिलवाय दो, जो मेरी निज विभो ॥
नाथ मेरी यह कर, जोरि अरदास है ।
दास 'भगवत्' का मिट जाय, भववास है ।१४।

(घत्ता छप्पय छन्द)

मुनिसुव्रत गुणमाल, पढ़ै जो मन वच काई ।
वह नर भाग्य विशाल, जजै पद द्रव्य चढ़ाई ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिट जावै गृह चाल, जपै जो नाम निरंतर।
पद पावै सु विशाल, सिद्ध थल लहै न अंतर॥
मुनिसुव्रत भगवान का, नाम जगत में सार है।
सदा काल सुमिरन करौ, जो चाहौ भव पार है॥

॥ महार्घं ॥

मुनिसुव्रत जिनराय, सदाँ मंगल के दाता।
जो पूजै मनलाय, लहै वह बहु सुख साता॥
सुर, नर, चक्री होय, फिर तीरथ करता।
शिव थल पावै योय, बनें भव दुख का हरता॥
जो पूजै वह जग पुजै, करै कर्म का नाश है।
'भगवत्' सेवक पद जजै, फरिहा नगरी बास है॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नेमिनाथ जी जिन पूजा

(द्रुमिल छन्द—या राधे० रामा०)

—०—

यदुवंश शिरोमणि समुदविजय, भूपती द्वारिका रजधानी।
शौरीपुर छोड़ि वसे यहाँ आ, थी शिवदेवी निजग्रह रानी॥
उन उदर मांहि निवसे आकर, सुरलोक छोड़ि जिनवर ज्ञानी।
नगरी में वरसी रतन रासि, जिम अम्बर से वरसै पानी॥

(दोहा)

शुभ मुहूर्त शुभ योग में, जन्मे नेमिकुमार।
सुरपति लेजा गिर शिखिर, दई शीश जल धार॥
व्याह समय पशु बंदि लखि, गिरनारी धरि ध्यान।
शिव रमणी के कंथ जिन, यहाँ बिराजो आन॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधीकरणं॥

भव महाविकट वन में स्वामी, भटका कीने बहु जन्म मरण।
लख चौरासी योनियों माँहि, नहिं मिला किसी का मुझे शरण॥
पाकर जिनदेव तुम्हें मुझको, मिली शांति शरण में आता हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिट जावै जन्म जरा मृत्यु दुख. निर्मल जल चरण चढ़ाता हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म, जरा मृत्यु, विनाशनाय जलं ।

यह इष्ट वियोग अनिष्ट योग, मुझ मन को सदाँ जलाता है।
मिलता है राग द्वेष निमित, सारा कर्त्तव्य भुलाता है ।।
है अर्द्धमृतक सम दशा मेरी, मैं चाँह दाह में दुख पाया ।
भवताप निवारन को स्वामी, चंदन ले चरण शरण आया ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं ।

वहु दुख निगोदमें मैं पाये, इक स्वाँस में जन्म अठारह थे।
थे शरण इते ही अनन्त काल, थावर असंख्य तन धारे थे ।।
त्रस काय के दुख को कहूं नाथ, या मानुप दुख को गाऊँ मैं।
चरणों में चढ़ाता हूं अक्षत, बस अक्षय पद को पाऊं मैं ।।

ॐ ह्रीं श्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षत ।

मैं ही क्या जितने जग प्राणी, भटकाय जड़े जंजीरों से ।
हर, हरि, चक्री, ब्रह्मा, महेश, सब बिंधे काम के तीरों से ।।
तुमने ही इस प्रचंड भट को, जय कर शिव पद को पाय लिया।
मैं पुष्प चढ़ाऊं चरणों में, मिट जाय काम मो त्रास दिया ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं ।

यह क्षुधा वेदना जीवों से, नाना कुकृत्य करवाती है ।
इसके कारण ही अधम काम, दुनियाँ करते न डराती है ।।
भर भर कर होय पेट रीता, फिर भरौ व्यथा यह भारी है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नैवेद्य चढ़ाऊं चरणों में, मिट जावै क्षुधा हमारी है ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।

अघ मोह अन्ध फैला जग में, मम ज्ञान दृष्टिपर छाया है।
पर को ही अपना मान लिया, अपना पन सभी भुलाया है ॥
इस महा भूल के कारण ही, भव सिन्धु में गोते खाता हूँ ।
मिट जावै मोह अंधकार मेरा, चरणों में दीप चढ़ाता हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीपं ।

इन दुष्ट अष्ट कर्मों के वस, चारौ गतियों मैं दुख पाये ।
करता हूं मैं ही हस हंसकर, रोता हूँ जब जु उदय आये ॥
इस महा वेदना को मैंटन, ले धूप अनिल मैं खेऊं मैं ।
हों नष्ट अष्ट अरि कर्मनाथ, तुम चरणों को ही सेऊं मैं ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय दुष्टाष्ट कर्म विनाशनाय धूपं ।

फल उत्तम पाने की इच्छा रखकर आया शरण थारी ।
तुम दाता अशरण शरणनाथ, मिट जावै भवबाधा म्हारी ॥
फल से पूजूं मैं चरण प्रभो, शिव फल पाऊं यह वर दीजे ।
भव बन्धन मोरि तोड़ि सकल, निज सम ही मुझको कर लीजै ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं ।

जल, चंदन, अक्षत, पुष्प मिला, नेवज औ दीप जलाया है ।
ले धूप दशाङ्ग फल उत्तम, इन सबका अर्घ बनाया है ॥
तुम पद अनर्घ के दाता हौ, यह सुनकर बना भिखारी हूं ।
मेंटौ प्रभु भव बाधा मेरी, मैं अब तो शरण तुम्हारी हूँ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा

अर्घ चढ़ाऊं चरण तल, पद अनर्घ के हेत।
और नहीं कुछ चाँह मन, मिलै मुझे शिव खेत ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं।

(पंचकल्याण)

नेमीश्वर गर्भ पधारेंगे, सुरपति आदेश किया जारी।
दश पंच मास वहु रत्नों की, नगरी में वर्षा हो भारी ॥
माता सोलह स्वप्नां देखे, भूपति शुभ फल बतलाया है।
कार्तिक की शुक्लाषष्टी को, शुभ गर्भ कल्याण बताया है॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक शुक्लाषष्टी गर्भमंगलाय अर्घं।

लीनां अवतार नेमिप्रभू, जी, घर २ में वजत बधाई है।
छप्पन करोड़ जादव हर्षे, नारकी भी साता पाई है॥
सुरपति अभिषेक किया गिरवर, छप्पन कुमारि माता सेवें।
सित श्रावणषष्टी जन्म दिवस, हम अर्घ लेय कर यहाँ देवें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ला छटि जन्म मंगलाय अर्घं।

हरि करी परीक्षा प्रभू वल की, अँगुली पर हरी नचाये हैं।
इन छतें न राज्य होय मेरा, भूनाँगढ़ पशु घिरवाये हैं॥
दूल्हा वनि पहुँचे दरवाजे, पशु बन्दी गृह से छोड़े हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रावण सितषष्टी तप धारा, शिर मुकट औ कंकण तोड़े हैं ॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ला छटि तप मंगलाय अर्घं ।

राजुलिने जव यह वात सुनीं, प्रभु योग लिया गिरि गिरनारी ।
विह्वल हो पहुँची नाथ ज़हाँ, वन गई आर्यिका सुखकारी ॥
तप वल से कर्म घातिया चतु, प्रभु ने करि नष्ट बोध पाया ।
है क्वार सुदी पड़िवा शुभ दिन, केवल पद पूजों सुखदाया ॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय आसौज शुक्ला एकम ज्ञान मंगलाय अर्घं ।

वहु देशों में कीनां विहार, धर्मोपदेश दीनां भारी ।
पुनियोग निरोध अघातिया चतु, करि नष्ट वरी जा शिवनारी ।
आपाढ़ शुक्लाषष्टमीं दिवस, गिरनारी से शिव धाम लिया ।
दीजै हे नाथ मुझे शिव पद, मैं तुम चरणों में अर्घ दिया ॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ़ सुदी छटि मोक्ष मंगलाय अर्घं ।

(दोहा)

वाल ब्रह्मचारी प्रभू, नेमिचन्द्र गुणमाल ।
अल्प वुद्धि वहु भक्ति युत, वर्णूं गुण जैमाल ॥

(तर्ज—उपरोक्त)

वन्दों बाबीस में तीर्थनाथ, जदुकुल भूषण जग हितकारी ।
जिन भोग छोड़िकर योगधरा, तजि राजमती सुन्दर नारी ॥
लखवल अनन्त जिनकाहरि ने, छल वलकर ब्याह रचाया है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैराग्य भावना लखि प्रभू की, लौकान्तिक सुर जैनाद किया।
सम्बाद सुना रजमती नारि, मूर्छित हो हृदय विषाद किया॥
गिरनारी गिरि पर जाय प्रभु, कचलुंच दिगम्बर पद धारा।
पीछे पहुँची रजमति रानी, प्रभु आगे निज दुःख उच्चारा।४।
नौ भव में साथ रही स्वामी, अब छोड़ि मुझे कहाँ जाते हो।
क्यों निश्चल ध्यान लगा बैठे, हो मौनी क्यों न बताते हो॥
ना उत्तर दीना प्रभु दृढ़ थे, रोती है बहु दुखियाती है।
लाचार होय भव दुख मेंटन, प्रभु रूप हृदय में ध्याती है।५।
नारी की है पर्याय बुरी, जीवनभर पराधीनता है।
धिक्कार मुझे जो घर जाऊँ, घर दुखमय सदाँ चीणता है॥
कचलुंच परिग्रह तज सारी, आर्यिका महाव्रत धारे हैं।
दोनों ही बाल ब्रह्मचारी, तप करि अरि कर्म पछारे हैं।६।
छप्पन दिन तक छद्मस्थ दशा, पाया फिर केवल ज्ञान प्रभो।
निर अक्षर वाणी खिरै जहाँ, जहाँ समोशर्ण है अतुल विभो॥
बलभद्र, हरी, वन्दन आये, द्वारिका कुटम का प्रश्न किया।
बतलाया दीपायन द्वारा, बुझ जावेगा तुम वंस दिया।७।
लागैगी अग्नि द्वारिका में, बलभद्र हरी दो बच जावें।
बाकी जितने परिजन, पुरजन, उस महा अग्नि में पच जावें॥
प्रभु वच सुनि गज, प्रद्युम्न, संबु, अनुरुद्ध आदि तप धारा है।
रुक्मिणी, जामवति, सतभामा, आर्यिका महापद धारा है।८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गिरनारी से ही मोक्ष गये, मुनि कोड़ि बहत्तर सात लाख।
मन, वच, तन बन्दों शीशनाय, मैं गिरनारी नित, मास पाख॥
है पावन परम पुनीत थान, बंदत सब पाप पलाते हैं।
सुर, नर, मुनि, श्रावक भक्ति सहित, गिरवरकी धोक लगाते हैं।६।
मैं भी बन्दत हूँ बार २, श्री नेमिनाथ गिरनारि थान।
मैं सेवक नाथ तुम्हारा हूं, मेरा भी रखना प्रभु ध्यान॥
ज्यों तोड़े बन्धन पशुओं के, मेरा भी भव बन्धन तोड़ो।
मुझ पापी का उद्धार करो, शिवकामिन से नाता जोड़ो।१०।
यद्यपि तुम रागादिक वर्जित, अविकारी चिन्मूरति स्वामी।
पर भक्ति आपकी भक्तों को, कर देती है अन्तर्यामी॥
मैं तो अब शरण तुम्हारी हूँ, 'भगवत्' भव पार लगा दीजै।
मिटजावै मेरा जन्म मरण, दुखमय संसार भ्रमण छीजै।११।

[दोहा]

नेमिनाथ जिनराज जी, तारण तरण जिहाज।
'भगवत्' चरण शरण लई, रखना सेवक लाज॥

(घत्ता)

नेमि ज़िन बन्दों, पाप निकन्दों, भव दुखहारी सुखकारी।
मैं दास तुम्हारा, देहु सहारा, भव बाधा मेंटो सारी॥

॥ महार्घं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(गीता छन्द)

जो करै पूजा नेमि जिन की, भक्ति भाव सम्हारि कें।
वह लहै सुख सम्पति अतुल बल, अष्टकर्म बिदारि कें॥
वह पुण्य वन्त सु भाग्यशाली, जो जिनेश्वर दास है।
श्री नेमि जिन का दास 'भगवत्' ग्राम फरिहा वास है॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥ परिपुष्पांजलिंक्षिपेत् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री पार्श्वनाथ जी जिन पूजा

(छन्द हरिगीता)

—०—

नदी गंगा तीर शुभ नगरी, बनारस नाम है।
पितु अश्वसेन सुमात, बामादेवि सद्गुण धाम है॥
त्याग प्रानत स्वर्ग तहं, प्रभू जन्म लीना आयके।
वपु श्याम उन्नत हाथ नव, आयु बरष शत पायके॥
शुभ सुभग लच्छण चिन्ह अहि, सुन्दर मनोहर रूप है।
मद मदन भंजन बाल यति, दृढ़ धीर वीर अनूप है॥
निःशंक निर्भय शान्ति चित, त्रय लोक ज्ञायक नाथ हैं।
सुर असुर नर पूजत सदा, कर जोर नावत माथ हैं॥

(दोहा)

श्री प्रभु पारसनाथ जी, जगत बन्धु जगपाल।
आह्वानन करियत प्रभो, आवहु हे गुणमाल॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर २ संबौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधीकरणं॥

शुचि निर्मल प्रासुक नीर, भाजन में धारौ।
त्रय धार देत पद तीर, भव भय निर्वारौ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाय पारसनाथ जिनेश, तुम गुण को गावे।
सब नाश होत भव क्लेश, जो तुम पद ध्यावे॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं

मलियागिरि अगर कपूर, केशर घिस लाया।
भवताप प्रभु कर चूर, मन वच शिर नाया॥
जय पारसनाथ जिनेश, तुम गुण को गावे।
सब नाश होत भव क्लेश, जो तुम पद ध्यावे॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं।

मोती सम तन्दुल स्वच्छ, कंचन थाल भरों।
कर प्रभु पद हृदय सु लक्ष, वहु विधि पुंज धरों॥
जय पारसनाथ जिनेश, तुम गुण को गावे।
सब नाश होत भव क्लेश, जो तुम पद ध्यावे॥
अक्षतं

वेला केतुकी गुलाब, सुमन सुगन्ध धरें।
पूजों पद करि शुभ भाव, काम कलंक हरें॥
जय पारसनाथ जिनेश, तुम गुण को गावे।
सब नाश होत भव क्लेश, जो तुम पद ध्यावे॥
पुष्पं

षटरस युत व्यंजन सार, नाना विधि लाऊं।
प्रभु पारस पद सुखकार, पूजत सुख पाऊं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय पारसनाथ जिनेश, तुम गुण को गावे।
सब नाश होत भव क्लेश, जो तुम पद ध्यावे ॥
व्यञ्जनम्

कंचन का दीप बिशाल, वर्ति कपूर करी।
सब नाश होत तम जाल, सन्मुख भेंट धरी ॥
जय पारसनाथ जिनेश, तुम गुण को गावे।
सब नाश होत भव क्लेश, जो तुम पद ध्यावे ॥
दीपं

दश गन्ध सुगन्ध अपार, पावक खेवत हूँ।
वसु कर्म दुष्ट करि चार, तुम पद सेवत हूँ ॥
जय पारसनाथ जिनेश. तुम गुण को ध्यावे।
सब नाश होत भव क्लेश, जो तुम पद ध्यावे ॥
धूपं

पिस्ता लवंग बादाम नेंनन को प्यारे।
फल चाहत अविचल धाम, प्रभु आगे धारे।
जय पारसनाथ जिनेश, तुम गुण को गावे।
सब नाश होत भव क्लेश, जो तुम पद ध्यावे ॥
फलं

जल फल वसु दर्व सम्भार, अर्घ बनाय जजों।
मोहि भवसागर से तार, तेरो नाम भजों ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय पारसनाथ जिनेश तुम गुण को गावे।
सब नाश होत भव क्लेश जो तुम पद ध्यावे॥

अर्घं

(चढ़ावनी में नैवेद्यम् की जगह व्यंजन भी बोलते हैं)

—०—

(तर्ज—राधेश्याम)

षट मास प्रथम पितु मात ग्रहे हुई रतन वृष्टि नभ से भारी।
नव द्वादस योजन धनद स्वयं रचना की नगरी की सारी॥
छप्पन कुमारिका षट देवी माता वामा पद सेव करें।
दुन्दभी बजे नभ पुष्प गिरें अरु जै जै नाद सु देव करें॥

(दोहा)

दौज कृष्ण वैसाख की तजि प्रभु स्वर्ग विमान।
माता वामादेवि उर लीन आय स्थान॥
गर्भ कल्याण तनी करें पूजा सुर हर्षाय।
हम पूजत वसु द्रव्य ले आनन्द मंगल गाय॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृष्णा द्वितीया गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घं।

माता निशि पिछले पहरे में देखे शुभ स्वप्न सुखकारी।
निजपति मुख सुनि फलइष्ट महा मन में आनन्द लहाभारी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करि पूर्ण मासनव प्रगट किया माता शुभ सुन्दर एक लाला ।
ऐरापति सजि सुर इन्द्र आय प्रभु को ले सुरगिर को चाला ॥

देखि रूप प्रभु बाल तन लोचन कीन हजार ।
करि प्रणाम बहु थुति करी, जन्मोत्सव सुखकार ॥
पूस कृष्ण एकादशी ता दिन जन्म जिनेश ।
मन वच तन वसुविधि जजों हरो प्रभू भव क्लेश ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूष कृष्णा एकादश्यां जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घं ।

एक दिवस प्रभु हो गजारूढ़ पुर बाहिज गमन किया भाई ।
देखा निज नाना को वन में पंचाग्नि तपे शठ दुखदाई ॥
लकड़ी में युगल सर्प प्रभु ने, निज अवधि ज्ञान से बतलाये ।
नवकार मन्त्र दीना स्वामी, अहि मरि नागेश्वर कहलाये ॥

[दोहा]

काम सुभट को चूर कर, बाल ब्रह्म पद धार ।
एकादशि बदि पूस की, तजा परिग्रह भार ॥
केशलुंच तन नग्न बन, किया ध्यान गम्भीर ।
जजों पार्श्व प्रभु पद कमल, हरौ नाथ भव पीर ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूष कृष्णा एकादश्यां तप मंगल प्राप्ताय अर्घं ।

वह तपसी नाना कुतप योग तज प्राण नीच सुर पद पाया ।
पूरव भव वैर चितार हृदय प्रभु पर उपसर्ग करन धाया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहु अग्नि पवन तृण धूलि आदि वर्षा घनघोर करी भारी।
तब सर्प जीव धरणेन्द्र और पद्मावति की रचा सारी॥

दोहा

चैत्र चतुर्थी कृष्ण पख जीत उपद्रव घोर।
मोह मिथ्यात अंधेर निशि प्रगटा केवल भोर॥
सकल चराचर प्रगटने कोटि भानु सम ज्ञान।
सुर सुरेन्द्र पूजन सकल मैं पूजूँ तजि मान॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्णा चतुर्थ्यां ज्ञान मंगलाय प्राप्ताय अर्घं।

करि बहु विहार चउ संघ सार भवि जीव भवोदधि से तारे।
धर्मोपदेश जग हरी क्लेश जिन प्रभु वचनामृत उरधारे॥
जिन धर्म सूर संसार पूर सम्मेदाचल थित आन गही।
करि कर्मनाशतजिजगतफांस अविचल शुभ पंचम गतिसुलही।

* दोहा *

श्रावण शुक्ला सप्तमी शिखिर शीश हनि कर्म।
भये निरंजन जगतपती गुण अनन्त शिव शर्म॥
पार्श्वनाथ भव भय हरण नाम लेत अघ जाय।
त्रिविधि योगकर पूजहूं चरणकमल शिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ला सप्तम्यां मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* दोहा *

श्री प्रभु पारसनाथ जी मंगल मूल विशाल।
बुद्धि हीन बहु भक्ति युत वर्णत गुण जयमाल ॥

(तर्ज—ते गुरु मम हिरदै बसौ)

पार्श्वनाथ मंगल करो हरो सकल दुख जाल, पार्श्वनाथ मंगल करो।

टेक प्रथम प्रभु मरुभूति भव. कमठ दुष्ट बड़ भ्रात।
अनुजवधू संग रति करे, सुनी नृपति यह बात ॥
पार्श्वनाथ मंगल करो। हरो सकल दुख जाल। पा०
खर चढ़ाय प्रभु काढ़ियो भ्रमों बहुत दुख पाय।
तापस संग कुतप तपै ऊरध शिला उठाय। पा०
भ्रात दशा मरुभूति सुनि हृदय दुखित अति होय।
राजा वर्जत ही रहौ चलौ मिलन को सोय। पा०
पहुँचौ जहाँ तापस बसें कमठशिला दोऊ हाथ।
धरें बिलोक सुधी अनुज चरण नवायौ माथ। पा०
दुष्ट दुराचारी कमठ निर्दय चित्त अपार।
करि कषाय मरुभूति शिर दीनों पाथर डार। पा०
शिला खण्ड के लगत ही प्राण तजे तत्काल।
सघन सल्लकी वन विसें भयौ गजेन्द्र विशाल। पा०
एक समय अरिविन्द मुनि संघ सहित तहँ आय।
उसही वनमें थिति लही गज लखि क्रोध लहाय। पा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विघ्न कियो सब संघ को गर्ज तर्ज घनघोर।
मारे बहु नर पशु तहाँ पुनि धायो मुनि ओर। पा०
मुनि पद्मासन योग थिर हृदय चिन्ह श्री वृत्त।
देखत पूरव भव सकल बात लखी प्रत्यत्त। पा०
शान्ति होय गुरु पद नवो नैंनन नीर बहाय।
मुनि उपदेश दियो महा सुनों सकल मन लाय। पा०
अणुव्रत पांच सु आदरे गुणव्रत धारे तीन।
चतु शित्ताव्रत उर धरे कर कषाय सब त्तीण। पा०
सूखे तृण पल्लव भखे पीवे प्रासुक नीर।
एक समय जल पीवने गयो नदी के तीर। पा०
पीवन जल उद्यम कियो फसो कीच में जाय।
जानों मरण सुधी तभी व्रत सल्लेखना धाय। पा०
अन्न पान सब त्यागियो उधर कमठ तजि देह।
उसही थल अहि ऊपजो डस्यो आन कर येह। पा०
मरण कियो शुभ भाव सों गज निज आतम ध्याय।
स्वर्ग बारहे सुर भयो धर्म तनों फल पाय। पा०
शशि प्रभ देव सु नाम लहि भोगत सुक्ख अपार।
अवधि ज्ञान से जानियों धर्म तनों फल सार। पा०
सोलह सागर आयु तहं धर्म करत वसु याम।
चय विद्याधर सुत भयो अग्निवेग तसु नाम। पा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जोवन वय वैराग्य धरि करी तपस्या घोर।
द्वादशाँग श्रुत धारियो तन की ममता छोर पा०
कमठ जीव अहि मरि गयौ पंचम नर्क मझार।
महा कठिन दुख तन सहो छेदन भेद न अपार। पा०
आयु पूर्ण करि के मरो अजगर उपजो आय।
पूरव वैर विरोध सों निगली मुनि की काय। पा०
मुनि स्वध्यान युत देह तजि स्वर्ग सोलहे वास।
पायो सुतप प्रभाव सों अतुल सुक्ख की रास। पा०
उदधि बीस द्वि आयु लहि अवनि पंच गति ज्ञान।
तीन हाथ काया लही करे धर्म अमलान। पा०
चय करि अच्युत स्वर्ग सों वज्रनाभि चक्रीश।
राज्य करो छह खंड महि नमत सकल नर ईश। पा०
वहु विभूति वर्णन कहा चक्रपती का होय।
नव निधिं चौदह रत्न सब पुण्य तनों फल सोय। पा०
एक दिवस शुभ योग वश क्षेमंकर मुनिराय।
करी बन्दना चक्रपति मन बच शीश नवाय। पा०
सुनों तत्व उपदेश पुनि मुनि मुख अमृत बैन।
हटो सकल अज्ञान मन खुले हृदय के नैन। पा०
धरि वैराग्य सुतप करौ दुद्धर संयम धार।
कमठ जीव अजगर उधर परो नरक दुखकार। पा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाइस सागर दुख सहे नरक छट्टमे जान ।
भयौ भील तहाँ से निकर उसही वन में आन । पा०
देखत मुनि को ध्यान युत पूरव बर चितार ।
तीर कमान चढ़ाय के पापी दीनों मार । पा०
मुनि तन त्यागो सुर भये मध्यम ग्रीवक जाय ।
पद अहमेन्द्र सुधर्म युत भोगे भोग अघाय । पा०
भील त्यागि निज देह कों सप्तम नर्क सु लेय ।
पावे वहु दुख पाप फल को कवि कथन करेय । पा०
भोगे सो जाने सही या जाने भगवान ।
नर्क नाम सुनि भय लगे तजौ पाप बुधिमान । पा०
मध्यम ग्रीवक तें चयौ वह अहमिन्द्र सु सार ।
वज्र बाहु भूपति तनुज नाम अनन्द कुमार । पा०
मण्डलीक पद पाइयो राज काज सुख साज ।
श्वेतकेश लखि त्यागियो परिग्रह सकल समाज । पा०
दृढ़ वैराग्य बधावने बारह भावन भाय ।
भये दिगम्बर भूपती निज आतम को ध्याय । पा०
निशि दिन द्वादश तप तपें सहें परीषह जोर ।
रत्नत्रय व्रत आचरें फांसी ममता तोर । पा०
भावत षोडस भावना मुनि आनन्द महान ।
तीर्थंकर पद प्राप्त कों ये ही साधन जान । पा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक दिवस वन खण्ड में दियौ योग मुनिराज।
करत कोप विकराल अति आयो केहरि गाज। पा०
कमठ जीव थिति नर्क की पूरी कर वन आय।
हिंसक क्रूर कुनिन्द्य अति धरी सिंह पर्याय। पा०
मुनि विलोकि धायौ अधम खायौ तन मुनिनाथ।
धीर वीर निश्चल सुगुरु नमों जोरि कर माथ। पा०
प्रानत स्वर्ग सुहावनों पहुँचे मुनि आनन्द।
सुर देवी सेवत सदा पद पायो तहां इन्द्र। पा०
भोगत सुक्ख अपार तहां को कवि पावे पार।
पूर्ण आयु करके चयो प्रानत इन्द्र सु सार। पा०
नगर बनारस भूपती अश्वसेन महाराज।
वामा देवी के उदर आयौ चय सुरराज। पा०
दौज कृष्ण वैशाख की गर्भ कल्याण सुजान।
सुरपति अति उत्सव करौ नगर बनारस आन। पा०
माता सुखदाता जनों प्राची दिशि ज्यों अर्क।
तेज प्रताप अखण्ड सुख बल अनन्त तन गर्क। पा०
मेरु शीश ले जाय सुर पांडुक शिल पै थाप।
सहस अठोतर कलश जल धारदई शिर आप। पा०
तांडव नृत्य रचाय पुनि भक्ति करी मन लाय।
पूष कृष्ण एकादशी जन्म लयो सुखदाय। पा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योवन वन्त भये प्रभु मात पिता हठ कीन।
व्याह करौ जगरीति यह प्रभु 'नहिं' उत्तर दीन। पा०
बाल ब्रह्मचारी रहे धनि २ पार्श्वकुमार।
कमठ जीव केहरि जु मरि पंचम नरक सिधार। पा०
सत्रह सागर दुख भुगति भ्रमों जु तजि निज काय।
त्रस थावर काया धरी धारी पशु पर्याय। पा०
तीन उदधि लों जगत में धर धर नाना भेष।
कछुक पुण्य महीपाल पुर भयो महीपाल नरेश। पा०
वामादेवी कौ पिता नाना पार्श्वकुमार।
तिय वियोग तापस तपत कुतप अघकार। पा०
नगर बनारस वन विसें पंचागिन को जाल।
तपत मूर्ख अज्ञान तप उधर प्रभू गुणमाल। पा०
वय समान सँग ले सखा गज चढ़ि तिस ही थान।
आये, बोलो तापसी क्रोधित भृकुटी तान। पा०
रे बालक! मैं तापसी दूजे नाना तोय।
पूजनीय दोनों तरह नमन न कीनों मोय। पा०
पुनि चीरन लकड़ी लगो हाथ कुल्हाड़ी लेय।
धीर वीर गम्भीर प्रभु तब यह वचन कहेय। पा०
युगल नाग इस काठ में हे नाना मत चीर।
महा पाप हिंसा तनों पर को देहु न पीर। पा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलत अग्नि लकड़ी विसें उठत जु धूम अपार।
अग्नि ताप अरु धूम सों मरि हैं नाग कुमार। पा०
अमृत मय वच दुष्ट को लागे विष उनमान।
करि कषाय पुनि गारियो चोट कुल्हाड़ी तान। पा०
लगत चोट लकड़ी फटी कटे युगल वह नाग।
प्रभु शठ पुनि सम्बोधियो कर मन धर्मानुराग। पा०
नाग नागिनी को दयौ मन्त्र पंच नवकार।
पद्मावति धरणेन्द्र वह भये भुवन पति सार। पा०
तपसी मरि सुर ज्योतिषी उपजो कुतप कुयोग।
तीस वरस गृह वास पुनि तजे प्रभू सब भोग। पा०
मन वैराग्य विशेष तब लौकान्तिक सुर आय।
बहु विधि थुति वैराग्य वच कहे महा सुखदाय। पा०
जन्म मास तिथि जन्म की पंच मुष्टि कचलुंच।
धरो योग जिनराज जी परिग्रह तृष्णा मुंच। पा०
धरें ध्यान वन एकदा, कमठ ज्योतिषी देव।
नभ विमान अटको लहौ अवधिज्ञान सब भेव। पा०
क्रोध युक्त लोचन किये कीयौ चहुँ दिशि अन्ध।
गर्ज २ घन बर्षियो मूसलाधार अवन्ध। पा०
झन्झा वायु झकारहीं टूटे गिरि तरु जाल।
हा हा कार जगत मचो भयो शब्द विकराल। पा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुष्ट उपद्रव अति करौ प्रभु चित्त निश्चत ध्यान।
रंच चिगे नहिं मेरु सम माणिक दीप समान। पा०
आसन कप्यौ फणीन्द्र को प्रभु उपकार चितार।
आयौ पद्मावति सहित फण रचा की सार। पा०
लखि नागेन्द्र सु जोतिषी भागो शंका मान।
प्रभू स्वध्यान प्रताप से पायौ केवलज्ञान। पा०
बिहरत नाना देश प्रभू देत सत्य उपदेश।
दिव्यध्वनि वाणी खिरे हरन जगत की क्लेश। पा०
तारण तरण दयाल प्रभु धर्मामृत वर्षाय।
श्री सम्मेदशिखिर महा तहां सों शिव पद पाय। पा०
नाशि अघाती कर्म चतु पायौ अन्तिम लोक।
अव्याबाध अनन्त गुण सिद्ध सदा पद धोक। पा०
इन्द्रादिक पद पूजते मैं पूजों मैं पद सार।
भवदधि दुखकारी प्रभू डूबत कीजे पार। पा०
नाम जपत अघ नाशते दर्शत दुक्ख नशाय।
ध्यान करत शिव पद लहै ऐसे श्री जिनराय। पा०
चरण शरण 'भगवत्' गही तारौ दीन दयाल।
पार्श्वनाथ भव भय हरौ सेवक नावत भाल। पा०
नाग नागिनी तारिये तारो अञ्जन चोर।
श्वान सिंह कपि तारियो मेरी ओर निहोर। पा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहा चूकि मो ऊपरें एती कीनी वार ।
भव सागर से तारियो 'भगवत्' करत पुकार ।
पार्श्वनाथ मंगल करौ, हरौ सकल दुख जाल । पा०

(घत्ता)

दोह–प्रभु गुण गाथा अगम है, थकत सेस बुध गाय ।
शक्ति हीन हम किम कहैं, नमत सुपद शिर नाय ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय महार्घं ।

सोरठा

मन बच तन शुध होय, जो पूजे प्रभु पार्श्व पद ।
सुर नर पद सुख होय, अन्तिम शिव पद को लहै ॥

॥ इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

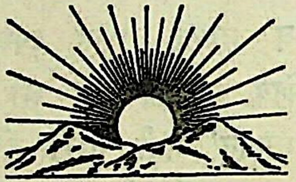

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री महावीर जी जिन पूजा

—०—

(छप्पय छन्द)

महावीर भगवान, जगत में मंगलकारी।
सिद्धारथ प्रभु पिता, नाम त्रिसला महतारी॥
सुरग लोक से आय, लिया अन्तिम अवतारा।
डूब रहे भव सिन्धु उन्हें प्रभु पार उतारा॥
हाहाकार जगत मचा, प्रगटे तब जिनदेव।
पाई साता जगत ने, पूजें पद नर देव॥

(सोरठा)

भव दुख हर्ता नाथ, शिव सुखदाता जगत को।
पूजों पद झुकि माथ, आवौ तिष्ठौ मम हृदय॥
मैं दुखिया संसार, डूब रहा मंझधार में।
नाथ लगाबो पार, भक्ति सहित पद पूज हूं॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र अत्र अवतर २ संवौषट् इत्याह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ२ ठः ठः मम हृदय स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधीकरणं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दुर्मिल छन्द—या राधे० राम०)

छा रहा कर्म मल आतम पर, दुखमय अति ही काला काला।
मैं कौन कहाँ क्या है स्वरूप, यह सब ही ज्ञान भुला डाला॥
बीता है काल अनादि यों ही, भव धरि २ मरि २ दुखपाया।
मैंटौ मम जन्म, जरा, मृत्यु दुख, जल ले प्रभु पद पूजन आया॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

दुर्लंघ भयानक भव बन में, भटका बहु उलझन में अटका।
चिरकाल हुआ भ्रमते २, पर मिटा भ्रमणका नाँ खटका॥
विषयों की अग्नि लगी चहुँ दिश, मैं भव आताप सताया हूँ।
भवताप हरन सुनि तुम्हें नाथ, पद पूजन चंदन लाया हूं॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय भवातापं विनाशनाय चन्दनं।

मेरी अक्षय निधि जो अखंड, वह खंड २ कर डाली है।
जड़ रूप बुद्धि होगई मेरी, कर्तव्य किये मैं जाली है॥
मैं पड़ा भुलावे में ऐसा, सुत, धन, वनिता में भरमाया।
मिल जावै अक्षय पद मुझको, अक्षत ले पूजन को आया॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं।

मन, वाणी, औ कर्तव्य प्रथक, कथनीं करनी में भेद रहा।
स्वारथ में लीन विकट तृष्णा, मृग दौड़ रही बहु खेद रहा॥
कामाँतुर होय कुकृत्य किये, जीवन निर्गन्ध रहा मेरा।
ले फूल सुभाषित पद पूजों, मिट जाय काम का दुख घेरा॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भोगे बहु भोग न तृप्ति हुई, सागर लों सुरग बसा जाके।
कितना अन्न जल पय घृत खाया, साता नहिं मिली सुधा खाके॥
अतएव मैंटने क्षुधा रोग, नेवज भरि थारी लाता हूँ।
हे वीरनाथ तुम चरणों में, बहु भक्ति समेत चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग बिनाशनाय नैवेद्यं।

बलवान मोहनीं कर्म महा, अज्ञान अँधेरा छाया है।
इस अंध द्वन्द में फंसा जीव, भव बन में बहु भटकाया है॥
ना सत्पथ अब तक मिला मुझे, दुख पाता भव भटकाया हूँ।
हो घट में ज्ञान प्रभा प्रकाश, दीपक ले पूजन आया हूं॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीपं।

ले धूप दशाङ्ग अग्नि दहूँ, जिस धूम करम जल जाँय मेरे।
इन कर्म अरिन का नाँश चहूँ, इस कारण प्रभु पद जजूँ तेरे॥
तुमरे सिवाय त्रैलोक्य मांहि, नहिं कोई ऐसा बलशाली।
जो कर्म अरी चकचूर करैं, करवादे मम प्रदेश खाली॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय दुष्टाष्टकर्म विनाशनाय धूपं।

मन, इन्द्रिय, विषय भोग भोगूं, निशदिन रही नईरइच्छा।
इच्छा के मुताबिक नाथ कभी, नहिं मिली भिखारी को भिक्षा॥
इच्छा की पूर्ति हेतु मैंने, नाना विधि पाप कमाये हैं।
अब शरण तुम्हारी आया हूं, शिवफल हित फल सुचढ़ाये हैं॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसु गुण युत हो अन्तर्यामीं वसु द्रव्य चढ़ाऊं इसीलिये ।
वसुगुण मुझको मिल जाय नाथ, नशि जाँय मेरे वसु कर्म किये ॥
तुम पद अनर्घ के हो दाता, मैं अर्घ चढ़ाकर पद पूजों ।
मिल जावें पद सुअनर्घ मुझे, हे नाथ मैं तुम सम ही हूजों ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं ।

(पंचकल्याण–तर्ज जोगीरासा)

षट् महीना आगे से सुरने रतन नगर वर्षाये ।
करी नगर रचना सुखकारी, तब प्रभु गर्भ सु आये ॥
तजि पुष्पोत्तर सुर विमान को, त्रिसला उर किया बासा ।
सुदि अषाढ़ की षष्टी पूजों, गर्भ कल्याण खासा ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अषाढ़ शुक्लाषष्टी गर्भ मंगलाय अर्घं ।

चैत्र सुदी तेरस के दिन प्रभु, जन्म लिया सुखदाता ।
सुर, नर, खग, सब हर्षित हूवे, लही नारि की साता ॥
सहस अठोतर कलश चीर जल, प्रभु शिर सुर ने ढारे ।
जन्म कल्याण करी पूजा पुनि, मैं पूजों पद थारे ॥

ॐ ह्रींश्री महावीर जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ला त्रयोदश्याँ जन्म मंगलाय अर्घं ।

फैला हाहाकार जगत में, धर्म नाम अघ होता ।
मूंक पशु यज्ञों में होमें, था यह मारग थोता ॥
देखि दशा जग अथिर पाप मय, प्रभु बन गये सुविरागी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मगसिर की दशमीं अंधियारी, तप धारौ बड़ भागी ॥
ॐ ह्रींश्री महावीर जिनेन्द्राय मगशिर कृष्णा दशम्यां तप मंगलाय अर्घं ।

योग लिया भव भोग बिडारे, शुद्धातम को ध्याया ।
नष्ट किए चतुकर्म घातिया, केवल बोध लहाया ॥
दशमी है वैशाख सुदी की, समवशरण सुर ठाना ।
'सत्य', 'अहिंसा', परम धरम है, दिया उपदेश महाना ॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय वैसाख शुक्ला दशम्यां केवलज्ञान मंगलाय अर्घं ।

गौतम गणधर मुख्य प्रवक्ता, वाणी को समझाते ।
जो सुन पाते हैं प्रभु वाणी, भव का क्लेश मिटाते ॥
भारत मध्य विहार देश में, पावापुर से स्वामी ।
कार्तिक श्याम अमावस के दिन, हूवे अन्तर्यामी ॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कार्तिक कृष्णा अमावश्यां महामोक्ष मंगलाय अर्घं ।

(जयमाल)

दोहा—गाऊं गुण जयमालिका, भक्ति सहित महावीर ।
पढ़ें, सुनें, हृदये धरें, मिट जावै भव पीर ॥

(त्रभंगी छन्द)

श्री वीर तुम्हारी, कीर्ति अपारी, बुद्धि हमारी है थोरी ।
किम तुम गुण गावें, पार लहावें, शीश नवावें कर जोरी ॥
सन्मति मतिदाता, जगत विधाता, जो पद ध्याता सुख पावै।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं शरण तुम्हारी, ली सुखकारी, पीर हमारी मिट जावै ॥

(तर्ज—नन्दीश्वर श्री जिन धाम बावन पुंज करों)

श्री बर्द्धमान जिनराय, तुम गण की गाथा ।
गाऊं मैं मन वच काय, चरणन धरि माथा ॥
सुर 'वीरनाम' धरि गात, बहु स्तुति कीनीं ।
'श्री वर्द्धमान' पितु यात, सुत संज्ञा दीनीं ।१।
मुनि मन को सन्मति दीन, 'सन्मति' नाम पड़ा ।
तुम देखत संशय क्षीण, यह आश्चर्य बड़ा ॥
इक देव नाग धरि भेष, तरु पर घेर लिया ।
निर्भय चित रंचन क्लेश, सिर पर पैर दिया ।२।
लखि विक्रम अतुल अनूप, चरणन शिर नाया ।
हो प्रगट धारि निज रूप, बहु विधि गुण गाया ॥
धरि 'महावीर' शुभ नाम, सुर पुर गमन किया ।
तुम जीत लिया भटकाम, गृह तजि योग लिया ।३।
जग अथिर अनित्य स्वरूप, तृणवत तजि दीना ।
धरि लिया दिगम्बर रूप, वन में तप कीना ॥
तप बल से केवल पाय, शुभ उपदेश दिया ।
भव दधि से तरण उपाय, दो विधि भेद किया ।४।
तुम समवशरण में नाथ, आया जो प्राणीं ।
लखि तुमको हुआ सनाथ, भव बाधा हाणीं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम सुमिरत पंगु महान, गिर पर चढ़ जावै।
गूंगा वच मधुरी भाखि तुम गुण को गावै ।५।
तुम नाम हृदय में धारि, मेंढ़क चलि आवै।
गज पग तल मरि सुखकार, सुर पद को पावै ॥
वह अंजन अधम जु चोर, सुमिरत नाम अहा।
काटी फांसी भय छोर, अद्भुत रिद्धि लहा ।६।
सागर में पड़ि श्रीपाल, नाम उचारा है।
तुम भुजबल दिया विशाल, सागर तारा है ॥
सूली पै सेठिकुमार, नाम सुमिरि लीनाँ।
सूली सिंहासन सार, तत्क्षण रचि दीनाँ ।७।
चंदना सती का नाथ, बंधन तुरत कटा।
भोजन दे नाया माथ, प्रगटी धर्म छटा ॥
तुम नाम लेत श्री वीर, सब ही पीर हटी।
सोंमा को दीनां धीर, पति की व्याधि कटी ।८।
करि दिया नाग का हार, पति को डसि लीनां।
सती करी सुकरुण पुकार, वह जीवत कीनां ॥
सुत डसा सेठि का नाग, सेठानीं रोवै।
निकलै मुख से बहु झाग, धीरज को खोवै ।९।
किया सेठि तुम्हारा ध्यान, बालक जहर गया।
यह अद्भुत महिमा जान, जग में शोर भया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनि मानतुंग के नाथ, बंधन कटि जाते।
राजा ने खाई मात, मुनि तुमको ध्याते।१०।
कोढ़ी तन हैं मुनिराय, राजा सुनि पावै।
देखेंगे कल हम जाय, ऐसे वच गावै॥
श्रावक का आग्रह मान, मुनि तुमको ध्याते।
कंचन की प्रभा समान, सब तन को पाते।११।
तुम नाम सुमिरि अकलंक, तारा को जीता।
किया अग्नि कुण्ड जल पंक, नाम सुमिरि सीता॥
मुनि समंतभद्र ने नाथ, पिंडी फाड़ी है।
चन्द्रप्रभु को नमि माथ, वृष ध्वज गाड़ी है।१२।
वह जोधराज दीवान, ध्यान हृदय करता।
चूके सब तोप निशान, तुम संकट हरता॥
कहाँ तलक गिनाऊं नाम, अगणित जन तारे।
अब शरण लही निष्काम, मेंटो दुख म्हारे।१३।
मिट जावै भव का फन्द, जन्म रु मरण मिटै।
मिट जाय करम का द्वन्द, निज में निज सु भिटै॥
बस यही दीजिये मोहि, मैं चरणन चेरा।
मिट जावै मेरा नाथ, भव २ का फेरा।१४।
तुम बड़े गरीब निवाज, सुर, नर, पसु तारे।
राखौ सेवक की लाज, शरणा में थारे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'भगवत्' का भव भय नाश, सब आताप हरौ।
है तुम चरणों का दास, शीघ्र उद्धार करौ।१५।

[घत्ता]

श्री वीर मनाऊं, निश दिन ध्याऊं, अष्ट द्रव्य पूजों चरणां।
मैं सेवक थारा, लिया सहारा, मेरा भव भय दुख हरणां॥

॥ महार्घं ॥

[गीता छन्द]

श्री वीरनाथ जिनेश की, जैमाल गावै चाव सों।
वसु द्रव्य ले वहु भक्तियुत, पूजा करै मन भाव सों॥
पुनि नाम की माला जपै, थिर चित्त ही धरै ध्यान है।
वह सुधी नर लहै सुक्ख साता, लहै शिवपुर थान है॥

[सोरठा]

वीरनाथ का वास, घट घट में परघट करौ।
'भगवत्' प्रभुपद दास, फरिहा नगरी वास है॥

॥ इत्याशीर्वाद परिपुष्पांजलि क्षिपेत्॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्री त्रय जिनेन्द्र पूजन ॥

(छप्पय छन्द)

श्री चन्दाप्रभु नमों अष्टमे जो तीर्थंकर ।
नमों शान्ति जिननाथ, मदन चक्रीत्रय पद धर ॥
बर्द्धमान जिनराय, चरण को शीश नवाऊं ।
भक्ति हृदय में धारि, अष्ट विधि पूज रचाऊँ ॥
आह्वानन, स्थापना, और सन्निधीकरण करि ।
पूजों पद जिनदेव के, नाथ मेरी भवताप हरि ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्दाप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राः अत्र अवतरत २ संवौषट् इत्याह्वाननं ।

ॐ ह्रीं श्री चन्दाप्रभु शान्तिथाथ महावीर जिनेन्द्राः अत्र तिष्ठत २ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं श्री चन्दाप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राः अत्र मम सन्निहिता भवत २ वषट् सन्निधोकरणं ॥

* जोगी रासा *

प्रासुक जल कंचन झारी में, भरि प्रभु पद सु चढ़ाऊं ।
जन्मजरामृत्यु नाश हेतु मैं, श्रीजिन गुण मन ध्याऊं ॥
अष्टम तीर्थंकर चन्दाप्रभु, शान्तिनाथ जिनराई ।
महावीर भव पीर हरन हित, पूजों मन वचकाई ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरामृत विनाशनाय जलं।

काश्मीर केशिर कपूर औ, घिसि मलियागिर चन्दन।
भव आताप मिटावन कारण, करों जिनेश्वर बन्दन॥
अष्टम तीर्थंकर चन्द्राप्रभ, शान्तिनाथ जिनराई।
महावीर भव पीर हरन हित, पूजों मन वचकाई॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्राप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं।

मुक्ताफल समस्वच्छ अखंडित, तन्दुल लेकर माहीं।
करि त्रयोग को शुद्ध जजूं पद, पाऊं अक्षय ठाहीं॥
अष्टम तीर्थंकर चन्द्राप्रभु, शान्तिनाथ जिनराई।
महावीर भव पीर हरन हित, पूजों मन वचकाई॥

ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्राप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं।

नानावरण सुगन्धित चुनि चुनि, पुष्प मनोहर लाया।
काम व्यथा के नष्ट करने को, चरण शरण में आया॥
अष्टम तीर्थंकर चन्द्राप्रभु शान्तिनाथ जिनराई।
महावीर भव पीर हरन हित, पूजों मन वचकाई॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्राप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय काम व्यथा विनाशनाय पुष्पं।

मिष्ट और स्वादिष्ट सुधासम, नेवज हाथ सम्हारा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजों युग पद श्री जिनेन्द्र के, मिटे क्षुधा दुख म्हारा ।
अष्टम तीर्थंकर चन्दाप्रभु, शान्तिनाथ जिनराई ।
महावीर भव पीर हरन हित, पूजों मन वचकाई ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्दाप्रभु शान्तिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।

घृत कपूर का दीप जलाकर, प्रभु चरणों में धारूं ।
मोह अन्ध जो अनन्त काल का लगा उसे निरवारूं ॥
अष्ठम तीर्थंकर चन्दाप्रभु, शान्तिनाथ जिनराई ।
महावीर भव पीर हरन हित, पूजों मन वचकाई ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्दाप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय महामोह अंध विनाशनाय दीपं ।

लेय दशाँगी धूप अगिन में, खेऊं प्रभु पद आगे ।
धूम घटा बहु जोर उठै मिस, अष्ट करम मम भागे ॥
अष्टम तीर्थंकर चन्दाप्रभु, शान्तिनाथ जिनराई ।
महावीर भव पीर हरन हित, पूजों मन वचकाई ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्दाप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय दुष्टाष्ट कर्म विनाशनाय धूपं ।

रसना नेत्र लगें जो सुन्दर, मिष्ट इष्ट फल भारी ।
महामोक्ष फल प्राप्ति हेतु जिन, पद पूजों भरि थारी ॥
अष्टम तीर्थंकर चन्दाप्रभु, शान्तिनाथ जिनराई ।
महावीर भव पीर हरन हित, पूजों मन वचकाई ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्री चन्द्राप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं ।

(गीता छन्द)

जलगंध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप सुफल मिला ।
करि अर्घ पद सुअनर्घ पावन, को लगाया सिलसिला ॥
चन्दा प्रभू पद जजों पूजों, शान्तिनाथ जिनेश जी ।
सन्मति चरण की करौं पूजा, मिटै भव की क्लेश जी ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्राप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं ।

* पंचकल्याणक अर्घ *

(दुर्मिल छन्द—या राधे० राम०)

वदि चैत्र पंचमीं सुखकारी, चन्दाप्रभु गर्भ पधारे हैं ।
भादों वदि सप्तमि शान्तिनाथ, माता सुउदर में धारे हैं ॥
शुक्ला अषाढ़ की तिथि षष्टी, श्री वीर गर्भ में आये हैं ।
यह गर्भकल्याणक शुभ दिन हैं मन वच तन अर्घ चढ़ाये हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्दाप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय गर्भ मंगलाय प्राप्ताय अर्घं ।

शुभ पौष वदी ग्यारस जन्मे, चन्दाप्रभु चन्द्रनगर माँहीं ।
है जेठ वदी चौदश शुभ दिन, जिनशान्ति जन्म गजपुर ठाँहीं ।
कुण्डलपुर में श्री महावीर, सित चैत्र त्रयोदश दिन प्रगटे ।
पद पूजों अर्घ चढ़ाय यहां, जिससे भवभव के अघ विघटे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्री चन्द्राप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घं ।

बदि पूस एकादशि तपधारा, श्री चन्द प्रभू वन में जाके ।
चौदशि बदि जेठ की शान्तिनाथ, तप धरा चक्र पद ठुकराके ।।
महावीर लिया तप मगसिर की, दशमी अँधियारी दिन भाई ।
शुभ तप कल्याणक जिनवर के, मैं जजों चरण मंगलदाई ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्राप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय तप मंगल प्राप्ताय अर्घं ।

फागुन की बदि सप्तमी को, चन्द्राप्रभु केवल बोध लहा ।
शुभ पौष शुक्ल दशमी दिन को, श्री शान्तिनाथ घातिया दहा ।।
वैसाख सुदी दशमी के दिन, महावीर हुये केवल ज्ञानी ।
शुभ ज्ञान कल्याणक पद पूजों, ले अर्घ जजूं भव दुख हानी ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्राप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय केवलज्ञान मंगलाय अर्घं ।

है वदी सप्तमी फाल्गुण की, चन्द्राप्रभु शिव पद प्राप्त किया ।
श्री शान्तिनाथ जी जेठ बदी, चौदस वसु कर्म समाप्त किया ।।
है कार्तिक मावस श्याम घटा, पावापुर से महावीर प्रभो ।
निर्वाण पधारे मैं पूजूं, पाऊं तुम सम ही नाथ विभो ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्राप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय महामोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घं ।

(जयमाल)

दोहा शान्तिनाथ चन्द्राप्रभो, महावीर भगवान ।
भक्ति हृदय में धारिके, करूं सुगुण गण गान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(पद्धरी छन्द)

जय मात लक्ष्मणा के सपूत। चन्दाप्रभु स्वामी गुण अकूत।
चन्द्रमा चिन्ह शोभा अपार। जय श्वेत वरण तन दिपै सार।
जय भव तन भोग विराग चित्त। तप धरौ जाय बन हो विरक्त।
घातिया करम चक चूर आप। पायौ सुबोध केवल प्रताप।
भव जीवन को शिव पथ लगाय। सम्मेदाचल पर गये आय।
जहां ललित कूट सुन्दर सु थान। पायौ वहाँ से शिव पद महान।
गुरु समंतभद्र तुम ध्यान कींन। प्रगटी प्रतिमा शिव पिंड चीण।
जिन धर्म ध्वजा जग लहलहाय। मैं नमों चरण बसु अंगनाय।

* तर्ज बहर *

शान्तिनाथ पद पूजिये, शान्ति हेतु भव लोय।
शान्तिनाथ पद पूजिये ॥
नगर हस्तिनापुर महा, ऐरादेवी मात।
पिता नृपति अश्वसेन गृह, प्रगट भये शुभ गात ॥
शान्तिनाथ पद पूजिये।
कामदेव चक्री भये, छहौ खण्ड का राज।
नव निधि चौदह रतन के, धारी श्री जिनराज ॥
शान्तिनाथ पद पूजिये। शान्ति हेतु०
सब विभूति को त्यागि के, वन जा कीनों ध्यान।
घाति घातिया ध्यान बल, पायौ केवल ज्ञान ॥
शान्तिनाथ पद पूजिये। शान्ति हेतु०
पुनः गये सम्मेदगिर, कुन्द प्रभु शुभ कूट।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योग निरोध स्वध्यान बल, बसु कर्मों से छूट ॥
शान्तिनाथ पद पूजिये । शान्ति हेतु०
सिद्ध निरंजन जगपती, ध्यान करै जो कोय ।
मिटे असाता छिणक में, बहु सुख साता होय ॥
शान्तिनाथ पद पूजिये । शान्ति हेतु०

* छन्द त्रोटक *

महावीर जिनराज नमस्ते । त्रसला नन्दन वीर नमस्ते ।
बाल ब्रह्मचारी सु नमस्ते । कल्मष हारी धीर नमस्ते ।
वीर धीर अति वीर नमस्ते । सन्मति गुण गम्भीर नमस्ते ।
मिथ्यामत परिहार नमस्ते । दयाधर्म परिचार नमस्ते ।
शिवमारग दर्शाय नमस्ते । भवि जीवन सुखदाय नमस्ते ।
भवभय भंजनकार नमस्ते । संकट मोचन हार नमस्ते ।
अधम उधारन हार नमस्ते । सुख अनन्त दातार नमस्ते ।
गुण अपार सुखकार नमस्ते । भगवत् भव दधि पार नमस्ते ।

(घत्ता)

जिनवर गुण गाथा जग विख्याता, सुर गुरु कथि नहिं पार लहें ।
'भगवत्' बुधि थोरी शरण सु तोरी, भक्ति सु फल भव पार चहें ।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु शान्तिनाथ महावीर जिनेन्द्राय महार्घं ।

(सार्दूल विक्रीडित छन्द)

जो पूजै जिनराज नित्य चित सों, बहु भक्ति उर धारिके ।
वह पावै बहु रिद्ध सिद्ध निश दिन, आपत्ति सब टारि के ॥
पावै पद सु नरेन्द्र इन्द्र सुखदा, पावै अतुल सम्पदा ।
अन्तिम होय अनन्त शिव सुख धनी, करि नाश भव आपदा ॥

॥ इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमदाचार्य शान्तिसागर जी पूजा

—०—

(छन्द–मदावलिप्त कपोल)

परम पूज्य कलिकाल केवली सम मुनि ध्यानी ।
निष्प्रह, निर्भय, निर्विकार, निश्चल शुभ ज्ञानी ॥
षट त्रिंशति गुण धरें, पूज्य आचार्य शिरोमणि ।
जिन सिद्धान्त प्रकाश करनको प्रखर किरणमणि ॥
भारत दक्षिण दिशा, तहा तुम जन्म लियौ है ।
धारि दिगम्बर भेष, स्वपर कल्याण कियौ है ॥
शान्ति सुधा के सिन्धु, शान्तिसागर गुरु नामी ।
आह्वानन मैं करूं, अत्र आवौ गुण धामी ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य शान्तिसागर महामुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य शान्तिसागर महामुनीन्द्र अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः ठः मम हृदयं स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य शान्तिसागर महामुनीन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधीकरणम् पुष्पांजलि क्षेपणम् ।

[तर्ज—जोगीरासा]

प्रासुक निर्मल गंगाजल ले, कनक कटोरी धारूं ।
जन्म जरामृत्यु नाश करनको, गुरु चरणन पर वारूं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिश्वबंद्य चारित्र चक्रधर, धर्म राज्य अधिनाई।
श्री आचार्य शान्तिसागर पद, वन्दौ मन बचकाई॥
ॐ ह्रीं श्री आचार्य शान्तिसागर महामुनीन्द्र जलं।
मलियागिर घनसार, और केशर करपूर मिलाऊं।
भवाताप के दूर करन को, श्री गुरु चरण चढ़ाऊं॥
विश्व वंद्य चारित्र चक्रधर, धर्मराज्य अधिनाई।
श्रीआचार्यशान्तिसागर पद,वन्दों मन वच काई। चंदनं।
मोती सम उज्वल शुभ तन्दुल, शुद्ध अखंडित लीने।
अक्षय पद के हेत गुरुपद, पुंज मनोहर दीने॥
विश्ववंद्य चारित्र०॥ श्री आचार्य०॥ अक्षत।
बेला और गुलाब चमेली, पुष्प अनेक प्रकारा।
काम व्यथा विध्वंस करन को, गुरुपद आगे धारा॥
विश्व वंद्य चारित्र०। श्री आचार्य० पुष्पं।
घृत पूजत मिष्ठान्न युक्त, नैवेद्य बनाई सारी।
क्षुधा रोग मेंटन को गुरुपद, भेंट धरी सुखकारी॥
विश्व वंद्य चारित्र०॥ श्री आचार्य०॥ नैवेद्यं।
गौ घृत धारि कपूर वर्तिकर, दीपक सुभग जलाऊं।
मोह मिथ्यात अंध नाशन को, श्री गुरु चरण चढ़ाऊं॥
विश्व वंद्य चारित्र०। श्री आचार्य०। दीपं।
धूपायन कंचन को लेकर, खेऊं धूप दशाङ्गी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुष्ट कर्म जल धूम उठै बहु, नष्ट होय भव भृङ्गी ॥
विश्व बंद्य चारित्र० । श्री आचार्य० ॥ धूपं ।
फल उत्कृष्ट मधुर सुखकारी, भरि थारी में लाया ।
महा मोक्ष फल प्राप्त करनको, गुरु पद पुंज चढ़ाया ॥
विश्व बंद्य चारित्र० । श्री आचार्य० ॥ फलं ।
जल फल आठौ द्रव्य मिला कर, अर्घ बनाया भारी ।
शिव सुख हेत सुगुरु चरणों पर, बार २ बलिहारी ॥
विश्व बंद्य चारित्र चक्रधर, धर्म राज्य अधिनाई ।
श्री आचार्य शान्तिसागर पद, बन्दों मन बच काई ।अर्घं।

* दोहा *

सम्यक दर्शन ज्ञान व्रत, तप औ वीर्याचार ।
पंचाचार सुगुण सहित, बन्दों गुरु पद सार ॥

ॐ ह्रीं पंचाचार सुगुणधारो श्री शान्तिसागराचार्य महामुनेन्द्राय अर्घं ।

दोहा—अधिनायक चतु संघ के, षट् त्रिंशत गुण ईश ।
शांति सिन्धु आचार्य पद, नमों नवा कर शीश ॥

ॐ ह्रीं षट् त्रिंशत सुगुणधारक श्री शान्तिसागराचार्य महामुनेन्द्राय अर्घं ।

दोहा—रत्नत्रय गुण धारते, नग्न दिगम्बर भेष ।
हित मित सतवादी सुधी, हरो सुगुरु मम क्लेश ॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय सुगुणधारक श्री शान्तिसागराचार्य महामुनेन्द्राय अर्घं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[दोहा]

मुनि नायक आचार्य वर, शांति सिन्धु गुणमाल।
अल्प बुद्धि वहु भक्तियुत, वर्णौं गुण जयमाल ॥

(त्रिभंगी छन्द)

जय शांति सुधाकर, धर्म दयाधर, गुणधर, अघहर सुखकारी ।
जय वृष उपदेशी, जगत हितैषी, दिगपटभेषी दुखहारी ॥
जय २ गुणनागर, जगत उजागर, हो नर नागर सुखदाता।
जो शरणा आवै, पूजै ध्यावै, वह भवि पावै शिव साता ॥

॥ पद्धरी छन्द ॥

जय शांति सुधाकर विमल रूप।
चारित्र चक्रवर्ती अनूप ॥
योगीन्द्र चूणामणि जग विख्यात।
जय विश्व वैद्य जगपाल तात ।१।
दक्षिण दिश जिला सु बेलगाँम।
शुभ भोजगांव में पिता धाम ।
गुरु पिता भीम गौड़ा सु नाम।
जिनमती मात शुभ गुणन धाम ।२।
तिन गृहे जन्म गुरु लियौ आय।
शुभ शांति नाम गौड़ा कहाय ।
जय बाल ब्रह्मचारी दयाल ।
लघु वय में चारित धरौ हाल ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरु घोर तपस्वी धीर वीर।
उपसर्ग विजेता गुण गम्भीर।
जय दक्षिण दिश के प्रबल भानु।
मिथ्यात मोह नाशन कृपाणु।
जब चढ़ीं सु चींटीं तुम शरीर।
निश्चल चित ध्यान धरौ गम्भीर।
धन धीर परीषह जयी आप।
प्रगटौ गुरु कौ दश दिश प्रताप।५।
अहिराज चढ़ौ जब शीश आय।
तुम ध्यान धारौ निश्चित सुभाय।
झकमार हार गया नागराज।
गुरु अचल ध्यान में रहे राज।६।
धन धन्य वीर निश्चल सुधीर।
भवि जन की गुरुवर हरौ पीर॥
कलिकाल केवली सुगुण धाम।
तुम जीति लिये रिपु क्रोध काम।७।
गुरु जिन मारग उद्योत कीन।
स्याद्वद पंथ चालन प्रवीन॥
मुनि धर्म प्रकाशन प्रखर सूर।
मिथ्यात अंध गुरु कियौ चूर।८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दक्षिण से उत्तर दिश पधार ।
भवि जीवन कौ कीन्हों उद्धार ॥
धन श्रेष्ट वर्य श्री घासीराम ।
श्री पूनमचन्द सु सुगुण धाम ।९।
सम्मेदाचल वन्दना हेत ।
गुरु संघ चलायौ गुण निकेत ॥
चंचल लक्ष्मी को सफल कीन ।
जिन धर्म प्रभावना में सुलीन ।१०।
गुरु चतु विधि संघ सहित बिहार ।
कीनों उत्तर भारत मझार ।
बंगाल और पंजाब देश ।
सौराष्ट, मध्य, उत्तर प्रदेश ।११।
रजधानीं दिल्ली चतुर्मास ।
धर्मामृत वर्षा करी खास ॥
गुरु शिष्य वीरसागर मुनीश ।
श्री नेमसिन्धु पद नमूं शीश ।१२।
श्री स्वर्ण गिरी पर संघ आय ।
चतु साधु भये परिग्रह नशाय ॥
श्री पाय सिन्धु, श्रीचन्द्र सिन्धु ।
नमि सिन्धु, और श्री कुन्थ सिन्धु ।१३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

53.05

अब सप्त ऋषीश्वर संघ मांहि ।
मानों चारण ऋषि यहो जांहि ॥
मथुरा नगरी में कर प्रवेश ।
रथ चलवायौ गुरु नग्न भेष ।१४।
अनगिनत भव्य उद्धार कीन ।
गुरु दया धर्म धारी प्रवीन ॥
सरकार किया जब यह प्रचार ।
हरिजन घुसि हैं श्री जिनागार ।१५।
तब अन्न त्याग त्रिवर्ष कीन ।
जिन धर्म ध्वजा फहराय दीन ॥
जिन धर्म स्वतन्त्र किया प्रमाण ।
गुरु तप प्रभाव सरकार मान ।१६।
हे दृढ़ ध्यानी निश्चल स्वरूप ।
तुम काढ़े भवि, भव पड़े कूप ॥
संसार सरीर असार मान ।
और नेत्र दृष्टि मन्दता जान ।१७।
प्राणी संयम पालन सु हेत ।
गुरु व्रत सल्लेखणा चित्त देत ॥
सन्यास हेतु कुन्थल गिरीश ।
यम रूप बिराजे सुगुण ईश ।१८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इक मास षट दिवस धरि सन्यास।
फिर कीन्हाँ गुरु सुरपुर निवास।।
भादव सुदि द्वितीया तिथी सार।
शुभ प्रथम पहर दिन सूर्यवार।१६।
निर्वाण वीर संमत प्रमान।
चौबीससौ इक्यासी सुजान।।
विक्रम संमत हैं दो हजार।
ऊपर वारह लीजै सम्हार।२०।
कुन्थलगिर से गुरु गये विदेह।
भवि जन वर्षावत नैंन मेह।।
आचार्य सूर्य हुआ अस्त जान।
भवि जीवों को है दुख महान।२१।
करि जोरि युगल मस्तक नवाँय।
सब जैनाजैनन में सुपाँय।
'भगवत्' सेवक गुरु चरण दास।
मेंटौ गुरुवर भव भ्रमण फाँस।२२।

* घत्ता *

आचार्य तुम्हारे गुणगण भारे,
को कथि पावै बुधि हारी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं दास तुम्हारा लिया सहारा,
गुरु चरणों पर बलिहारी ॥

॥ महार्घं ॥

[सोरठा]

शान्ति सिन्धु आचार्य, तुम सम अवरन दूसरो ।
तुम आज्ञा शिरोधार्य, "भगवत्" भवसागर तरो ॥
फरिहा नगर निवास, सेवक धर्म, समाज का ।
ऋषभदेव का दास, अतिशय क्षेत्र ऋषभनगर ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❀ श्रीमदाचार्य महावीरकीर्ति जी पूजा ❀

॥ अडिल्ल छन्द ॥

—०—

महावीर कीरत जी, श्री मुनिनाथ जी।
गुरु निर्ग्रन्थ महन्त, नमों नमि माथ जी॥
नगर फ़ीरोज़ाबाद, जन्म शुभ थान है।
बूँदादेवी मात, सकल गुण खान है॥
रतनलाल जी पिता, सुगुण सम्पन्न हैं।
गृही महेन्द्रकुमार, नाम शुभ धन्य हैं॥
पद्मावति पुरवाल, जाति विख्यात है।
वाल ब्रह्मचारी पद, शोभै गात है॥
भव भय भोग विरक्त, दिगम्बर जिनयती।
आह्वानन मैं करौं, पधारौ शुभ मती॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य महावीरकीर्तिजी महामुने
अत्र अवतर २ संवौषट् इत्याह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ठः मम हृदय स्थापनम्।
अत्र ममसन्निहितो भव २ वषट् सन्निधोकरणम्॥

॥ परिपुष्पांजलि क्षिपेत्॥

तर्ज—पंचमेरु भाषा पूजन

गंगाजल प्राशुक लै हाथ, पूजों मन वच तन मुनि नाथ,
दयानिधि हो, जय जग वन्धु दयानिधि हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परम पूज्य चारित्र चूड़ामणि,

श्री १०८ आचार्य महावीरकीर्ति जी महाराज

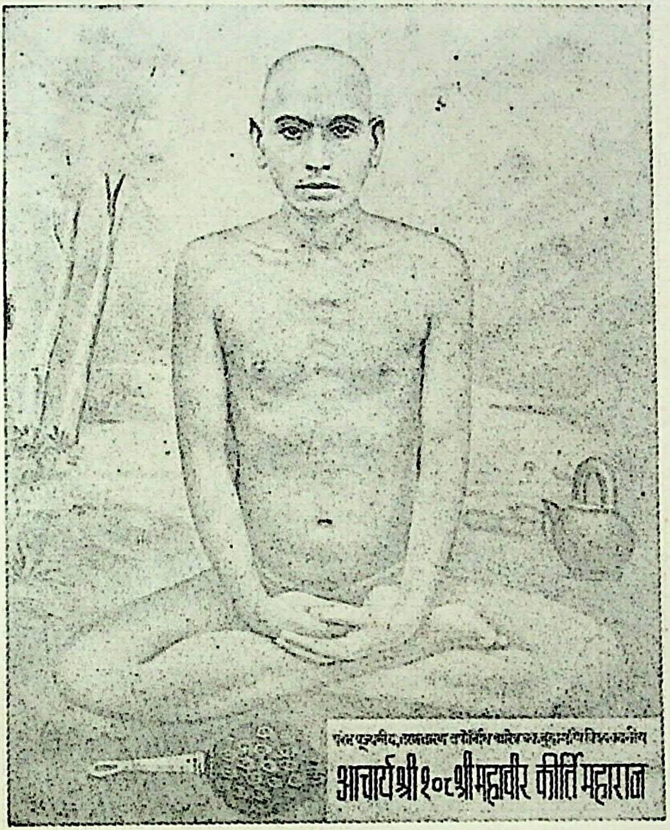

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परम पूज्य, धर्म दिवाकर

श्री १०८ आचार्य विमलसागर जी महाराज

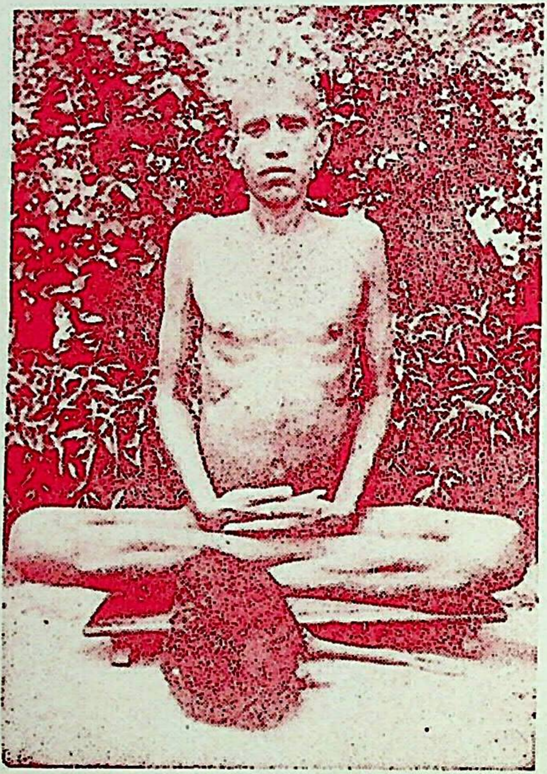

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीर-कीरत गुरुदेव, करि युग जोरि करों पद सेव।
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो।
ॐ ह्रीं श्री आचार्य महावीरकीर्तिजी महामुनेन्द्रेभ्यो: ।जलं।
केशरि मलियागिर घनसार, शुद्ध सुगन्धित द्रव्य अपार।
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दया०।
महावीर कीरत गुरुदेव, कर युग जोरि करों पद सेव,
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो। चंदनं।
अमल अखंडित तंदुल धोय, जजों श्री गुरुवर पद दोय,
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो।
महावीर की०। कर युग जोरि०। दयानिधि० ।अक्षतं।
बेला कमल कदंब गुलाब, पूजों चरण शुद्ध करि भाव,
दयानिधि हो, जय जग० ।।
महावीर की०। कर युग जोरि०। दया० ।पुष्पं।
घृत शर्करा अन्न पक्वान, भरि २ थाल करों गुरु ध्यान,
दयानिधि०। जय जग बन्धु०।
महावीर की०। कर युग जोरि०। दयानिधि० ।नैवेद्यं।
गौ घृत दीपक लै शुभ सार, जजत होत मिथ्यातम छार,
दयानिधि०। जय जग बन्धु०।
महावीर की०। कर युग जोरि०। दयानिधि०।दीपं।
धूप दशांगी अग्नि मझार, खेऊं होंय कर्म जरि छार,
दयानिधि०। जय जग बन्धु०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीर की० । कर युग जोरि० । दयानिधि० । धूपं ।
फल उत्कृष्ट मिष्ट शुभ सार, श्रीगुरु चर्ण जजूँ भरि थार,
दयानिधि० । जय जग बन्धु० ।
महावीर की० । कर युग जोरि० । दयानिधि० । फलं ।
जल फल आठौ द्रव्य मिलाय, अर्घ चढ़ाऊं हर्ष मनाय,
दयानिधि० । जय जग बन्धु० ।
महावीर कीरत गुरुदेव, कर युग जोरि करों पद सेव,
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ॥अर्घ॥

* दोहा *

श्री ऋषिराज महत्त पद, बन्दों शीश नवाय ।
सुगुणमाल जयमाल अब, कहूँ अल्प बुधि भाय ॥

(त्रिभंगी छन्द)

जय जय गुरु ज्ञानी, आतम ध्यानी, श्री जिनवाणी, परकाशी ।
जय जय तपधारी, मोह निवारी, भवि सुखकारी गुणरासी ॥
जय जय मुनि सूरा, भव भय चूरा, शिव सुख पूरा, विमलमती ।
जय जय गुरु राज, धर्म जिहाजा, भव भय भाजा, जैनयती ॥

(पद्धरी छन्द)

जय षट् कायक जीवन दयाल,
षट् द्रव्य रूप वर्णत विशाल ।
जय षट् आवश्यक करत नित्य ।
जय षट् अनायतन रहित चित्त ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय पंच समिति, व्रत, धरण धीर।
जय पंचाचार धरें गम्भीर।
जय पंच इन्द्रिय मन बस करंत।
जय पंच समिति धारक महन्त।२।
जय चारि कषाय जु त्याग दीन।
जय चतु धारा धन में सुलीन।
जय विकथा चारि रहित मुनीश।
जय चारि योग वाणी गिरीश।३।
जय आत्म रूप ध्यावत त्रिकाल।
मन वचन काय तीनों सम्हाल।
त्रय गुप्ति और त्रय रत्न धार।
गुरु करें अहिंसा धूप प्रचार।४।
गुरु आगमोक्त मारग प्रकाश।
अज्ञान और जड़वाद नाश।
शुभ सदाचार उपदेश देत।
सन्मार्ग दिखावत भव्य हेत।५।
व्रत नियम और संयम स्वरूप।
सुनि भव्य जीव धारें अनूप।
गुरु करत धर्म वर्षा पवित्र।
दर्पावत अघमय जगत चित्र।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसार कूप में पड़े जीव।
हस्तावलम्ब देते सदीव।
जय तारण तरण जिहाज आप।
शरणागत जन की हरत ताप।७।
जिन लई आपकी शरण आय।
ते शिव मारग दीने लगाय।
जै जै अघहारी गुरु दयाल।
शुभ सौम्य शान्ति मूरति विशाल।८।

* भुजंग प्रयात छन्द *

प्रभु आप हैं सर्व के हितकारी।
करें कीर्ति वर्णन है बुधि हमारी।
महाधीर गम्भीर उपसर्ग जेता।
दया शील संयम सदा सत्य वेता।९।
किये आपने मान मद लोभ चूरा।
महाभट मदन जीति प्रख्यात सूरा।
तजी क्रोध की भावना क्षमा धारी।
बनें नाथ निर्ग्रन्थ ऋषि निर्विकारी।१०।
तजा मोह मिथ्यात अज्ञान सारा।
सदाचार सद्ज्ञान संयम सम्हारा।
विषय भोग इन्द्रिय सभी चूर डारे।
प्रभू आपने भव्य भय से उबारे।११।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहिंसा धरम का बजाया नकारा।
हुआ देश में जैनवृष जै जै कारा।
शरण दास 'भगवत्' ने लीनी तुम्हारी।
लगादो किनारे से नैया हमारी ।१२।

(घत्ता)
(गीता छन्द)

जो पढ़ै यह जयमाल शुभ, मन वचन तन शुध भाव से।
अरु जजै वसु विधि द्रव्य ले, आचार्य पद उच्छाव से॥
सो होय सुखिया जीव, घर नित रहै मंगलचार है।
'भगवत्' मिटे अज्ञान जड़ता, बढ़ै सद्‌ आचार है॥

॥ महार्घं ॥

दोहा—श्री महावीर सु कीर्तिपद, जो पूजै धरि प्रेम।
पुत्र पौत्र सम्पति बढ़ै, रहै सदां घर क्षेम॥

इत्याशीर्वाद।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्रीमदाचार्य विमलसागर जी पूजा ॥

(हरि गीता छन्द)

—०—

कोशमाँ नगरी जिला एटा, जलेसर तहसील है।
श्री चरित नायक जन्म थान, सुमहा शोभा शील है॥
लाला विहारीलाल पितु, देवी कटोरी मात है।
तिन पुत्र नेमीचन्द्र बाल सु, ब्रह्मचर्य विख्यात है॥

(सोरठा)

धर्म भावना पूर, बालकपन में ही प्रभू।
शान्ति सरल सत सूर, पढ़े मुरेना धर्म मग।
योवन वय में नाथ, भोग त्यागि संयम गहौ,
नमूँ सुगुरु पद माथ, पूजन हित थापन करूं॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर महामुनेन्द्र अत्र अवतर २ संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर महामुनेन्द्र अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर महामुनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधीकरणम्॥

(अष्टक)

प्राशुक जल सारी, कल्मष हारी, कंचन झारी भरलाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्यामल धोऊं, पाप विगोऊं, भव दुख खोऊं मन भाया ॥
पूजों गुरु ज्ञानीं, आतम ध्यानीं, नग्न दिगम्बर पद धारी ।
मैं सेवक थारा, लिया सहारा, विमल सिन्धु भव भयहारी ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलसागराचार्य महामुनेन्द्राय जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं ।

विषयों में अटका, भव वन भटका, शान्ति न क्षण भरको पाई ।
ले शीतल चन्दन, दाह निकंदन, गुरु पद वन्दन मन लाई ॥
वसु कर्म सताया, गुरु ढिंग आया, मिलै शांति शिव सुखकारी ।
मैं सेवक थारा, लिया सहारा, विमल सिन्धु भव भयहारी ॥

। चन्दनं ।

उज्वल सुअखंडित, शुभ गुण मंडित, मुक्ताफल समदुति धारें ।
अक्षत मन भावन, कर्म नशावन, अक्षय पद को विस्तारें ॥
लाया भरि थारी, हर्ष अपारी, गुरु पद पुंज धरूं भारी ।
मैं सेवक थारा, लिया सहारा, विमल सिन्धु भव भयहारी ॥

। अक्षतं ।

चम्पा सु चमेली, गंध नवेली, सुमन सुमेली सुखदाता ।
बहु फूल मनोहर, थाली में भरि, श्रीगुरु वर के ढिंग लाता ॥
मम मदन निवारौ, काम विडारौ 'बाल' ब्रह्म पद के धारी ।
मैं सेवक थारा, लिया सहारा, विमल सिन्धु भव भयहारी ॥

। पुष्पं ।

धरि जन्म अपारा, अन्न विगारा, क्षुधा न अब तक मिट पाई ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खाया बहु खाना, रसयुत नाना, तृप्ति न मो मन में आई ॥
व्यंजन सुचढ़ाऊँ भूख मिटाऊं, जो भव भव मैं दुखकारी ।
मैं सेवक थारा, लिया सहारा, विमल सिन्धु भव भयहारी ॥
। नैवेद्यं ।

अज्ञान अंधेरा, आतम घेरा, भूला मैं निज पद अपना ।
पर को अपनाया, खूब लुभाया, निज समझा जग अपना ॥
घृत दीपक लाया, गुरु ढिग आया, मिटै नाथ अघ अंधियारी ।
मैं सेवक थारा, लिया सहारा, विमल सिन्धु भव भयहारी ॥
। दीपं ।

बसु कर्म कहावें, नाँच नचावें, सुर, नर, पशु, नारक पद में ।
इनके बस भ्रमता, मिली न समता, आज तलक जगकी हदमें ॥
यह कर्म जराऊं, धूप चढ़ाऊं, सुगुरु चरण में हितधारी ।
मैं सेवक थारा, लिया सहारा, विमल सिन्धु भव भय हारी ॥
।धूपं।

मृदु फल सुखदाया, लेकर आया, सुगुरु चरण के बन्दन को ।
शिव फल को चाहूँ, गुरु पद ध्याऊं, नष्ट करूं भव फन्दन को ।
नारंगी, केरा, सेव घनेरा, आम अनारि सु भरि थारी ।
मैं सेवक थारा, लिया सहारा, विमल सिन्धु भव भय हारी ॥
।फलं।

॥ अडिल्ल छन्द ॥

जल चंदन शुभ अच्छत, पुष्प सम्हारि के ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नेवज दीप सु धूप, फलादि सु धारि के ॥
विमल सिन्धु आचार्य सु चरण चढ़ाव हूँ ।
अष्ट कर्म करि नष्ट, मुक्ति पद पाव हूँ ॥ अर्घं ।

दोहा–विमल सिन्धु आचार्य जी, तुम गुण विमल विशाल ।
भक्तिभाव निज बुद्धि युत, कहूं सुगुण जयमाल ॥

(त्रभंगी छन्द)

जय करुणासागर, ज्ञान उजागर, शुभ गुण आगर, विमलमती ।
जय काम विजेता, शिव पद देता, धार्मिक नेता, परम यती ॥
जय दया प्रकाशी, धर्म विकाशी, जगवासी को हितकारी ।
जय सद् आचारी, पाप प्रहारी, शुभ गुणधारी भवहारी ॥
जय विमल सिन्धु आचार्य तुम गुण कथा ।
जो पढ़ै भाव सों नासै भव की व्यथा ॥
तुम तजे भोग जग के, अथिर पाप कें ।
हम नमें चर्ण थारे सु शिर नाय कें ।१।

तुम जनम से हुआ, कोसमा ग्राम धन ।
तुम जनम से हुये, धन्य पितु मात जन ॥
तुम जनम से हुई, जाति प्रख्यात है ।
तुम जनम से सभी जीव हर्षात है ।२।

वाल पन में पढ़ी, धर्म शिक्षा महा ।
सद्गुरू योग से, बोध सम्यक लहा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ दिनों की सु, अध्यापकी नाथ है।
ज्ञान अर्जन किया, चरित के साथ है।३।
पुनि करी नाथ सम्मेदगिर बन्दना।
साईकिल से अकेले हृदयं फन्दना॥
बन्दना करि प्रभू भाव उत्तम बने।
काम के पंच भट नाथ मनसों हने।४।
ले लिया ब्रह्मव्रत, सप्तमी धारणां।
शुद्ध जल अन्न प्राशुक करें पारणां॥
अब दिनों दिन बढ़ा, ज्ञान चारित विमल।
ग्यारमी धारणां पर, किया प्रभु अमल।५।
श्री महावीर कीरत जी, गुरुराय से।
व्रत सु चुल्लक लिया, प्रभू हर्षाय के॥
भोग के रोग से, दूरि करि आपको।
निश दिना नाथ जपते, प्रभू जाप को।६।
कुछ दिनों बाद, प्रभु मन उठी भावना।
तजूँ अम्बर दिगम्बर, सु पद भावना॥
पूज्य आचार्य महावीर कीरति मिले।
गुरु हृदय भावना, कंज सारे खिले।७।
शुभ घड़ी शुभ महूरत, मुनी पद धरा।
मोह ममता औ माया, सकल मद हरा॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हाथ पींछी कमण्डल, लिया धार है।
मुनि विमल सिन्धु, पद को नमस्कार है।८।
कुछ दिनों गुरु संग में, रहे नाथ जी।
भव्य जन सदा नावें, चरण माथ जी॥
फिरे अकेले सुगुरु ने, किया है गमन।
देके उपदेश सम्बोधे, बहु भव्य जन।६।
गुरु शरण में, देवप्पादिक आईयौ।
निज सुपद सम उन्हें, भी सु अपनाईयौ॥
चन्द्रसागर है शुभ नाम, मुनि दक्षिणीं।
केकड़ीपुर के हैं, स्वर्णसागर मुनीं।१०।
सिद्धमति नाम हैं, आर्यका साथ में।
वीर तपसिन चरण को, नमूं माथ मैं॥
सिद्धिसागर हैं क्षुल्लक, सुहस मुख महा।
बाहुबलि सिन्धु जी, नाम दूजे कहा।११।
संघ युत श्री गुरु विहरते देशपुर।
वृष सदाचार उपदेश दें नगर घर।
सत्य शिव मग प्रकाशी, दया मम कथा।
आर्ष अनुकूल वाणीं सु, बोलें यथा।१२।
दूर करते हैं गुरु, शिथल आचार को।
पोषते शुद्धता औ, सदाचार को॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छेदते गुरु सुजड़. महा जड़वाद की ।
मेंटते कुःप्रथा, जैन अपवाद की ।१३।
देत उपदेश कल्याण कारी महा ।
सत्य शिव मग प्रकाशी. सुगुरु हैं महा ॥
शुद्ध चारित्र धारी, गुरू हैं विमल ।
विमलदर्शन.विमलज्ञान चारित विमल ।१४।
धीर हैं, वीर हैं, गुरु गम्भीर हैं ।
तरण तारण हरण जगत जन पीर हैं ॥
मुक्ति पथ पद प्रदर्शक, सुध्यानीं अटल ।
शुद्ध मन वच सुतन.पद जजूं गुरु विमल।१६।
प्रान्त उत्तर में है टून्डला शुभ नगर ।
नाथ चौमासा कीनां है चतु दिश डगर ॥
वहीं चतु संघ दीनां है पद सूर का ।
पंच आचार धारक सुगुण पूर का ।१६
सुगुण छत्तीस धारक सु आचार्य हैं ।
आपकी आज्ञा संघ शिरोधार्य है ॥
दास 'भगवत्' की शुभ प्रार्थना ध्यान कर ।
दीर्घ जिन विम्ब की थापना मानकर ।१७।
क्षेत्र अतिशय ऋषभनगर प्रख्यात है ।
ऋषभ प्रभु दर्शकर मन सु हर्षात है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसी प्रतिमा न भारत में कहि पाईये।
भव्य जन दर्श इक बार कर जाईये।१८।
देखिये यह मनोहर महा थान है।
यहाँ ऋषभदास बाबा किया ध्यान है॥
निकट फरिहा नगर के सु यह क्षेत्र है।
दरश करते नहीं तृप्त हों नेत्र है।१९।
जयतु जै जयतु जै धीर ध्यानीं यती।
जयतु जै जयतु जै, जैन गुरु दृढ़ व्रती॥
जयतु जै जयतु जै, धर्म मूरति प्रभो।
जयतु जै जयतु जै, ज्ञान की शुभ विभो।२०।
दास 'भगवत्' चरण की, शरण अब गही।
भावना नाथ पूरी, करौ मो सही॥
काटि जंजाल जगका, निजातम भजूँ।
नित्य गुरु विमल सागर, सुपदको जजूं।२१।

(घत्ता)

यह जयमाला विमल सिन्धु, गुरु की, जो नर पढ़ें भाव सों।
जल फल आदिक द्रव्य लेय करके, पूजै सुपद चाव सों॥
आहारादिक दान देय मन सों, धारै गुरु बच हदै।
वह नर धार्मिक सुक्ख सम्पति लहै, अन्तिम सुभव भय छिदै॥

महार्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छेदते गुरु सुजड़. महा जड़वाद की ।
मेंटते कुःप्रथा, जैन अपवाद की ।१३।
देत उपदेश कल्याण कारी महा ।
सत्य शिव मग प्रकाशी. सुगुरु हैं महा ॥
शुद्ध चारित्र धारी, गुरू हैं विमल ।
विमलदर्शन.विमलज्ञान चारित विमल ।१४।
धीर हैं, वीर हैं. गुरु गम्भीर हैं ।
तरण तारण हरण जगत जन पीर हैं ॥
मुक्ति पथ पद प्रदर्शक, सुध्यानीं अटल ।
शुद्ध मन वच सुतन.पद जजूं गुरु विमल।१६।
प्रान्त उत्तर में हैं टून्डला शुभ नगर ।
नाथ चौमासा कीनां है चतु दिश डगर ॥
वहीं चतु संघ दीनां है पद सूर का ।
पंच आचार धारक सुगुण पूर का ।१६
सुगुण छत्तीस धारक सु आचार्य हैं ।
आपकी आज्ञा संघ शिरोधार्य है ॥
दास 'भगवत्' की शुभ प्रार्थना ध्यान कर ।
दीर्घ जिन विम्ब की थापना मानकर ।१७।
क्षेत्र अतिशय ऋषभनगर प्रख्यात है ।
ऋषभ प्रभु दर्शकर मन सु हर्षात है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसी प्रतिमा न भारत में कहि पाईये।
भव्य जन दर्श इक वार कर जाईये।१८।
देखिये यह मनोहर महा थान है।
यहाँ ऋषभदास बाबा किया ध्यान है॥
निकट फरिहा नगर के सु यह क्षेत्र है।
दरश करते नहीं तृप्त हों नेत्र है।१९।
जयतु जै जयतु जै धीर ध्यानीं यती।
जयतु जै जयतु जै, जैन गुरु दृढ़ व्रती॥
जयतु जै जयतु जै, धर्म मूरति प्रभो।
जयतु जै जयतु जै, ज्ञान की शुभ विभो।२०।
दास 'भगवत्' चरण की. शरण अब गही।
भावना नाथ पूरी, करौ मो सही॥
काटि जंजाल जगका, निजातम भजूँ।
नित्य गुरु विमल सागर, सुपदको जजूं।२१।

(घत्ता)

यह जयमाला विमल सिन्धु, गुरु की, जो नर पढ़ें भाव सों।
जल फल आदिक द्रव्य लेय करके, पूजै सुपद चाव सों॥
आहारादिक दान देय मन सों, धारै गुरु बच हृदै।
वह नर धार्मिक सुक्ख सम्पति लहै, अन्तिम सुभव भय छिदै॥

महार्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* सोरठा *

विमल सिन्धु मुनिराय, तुम प्रसाद शिव मग लहै।
'भगवत्' मन बच काय, चरण शरण तुमरी लही।
सेवक फरिहा वास, दास देव आगम गुरु।
शिव पद पावन आस और न मन कुछ चाँह है॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

❀ शान्ति पाठ ❀

[हरि गीता छन्द]

—०—

शान्तिनाथ जिनेन्द्र शशि मुख, शील संयम के धनीं।
लच्छण सुभग जिन तन विराजें, आठ अरु इक सौगनीं॥
निरखत नयन सुख होत भारी, चक्रधर तीर्थेश को।
सुर असुर नर मुनिगण नमें, अज्ञान हरन जिनेश को।१।
तुम शान्तिदाता जगत को, मुझ कष्ट हर साता करौ।
श्री शान्तिनाथ जजूँ चरण, भव वास अब मेरा हरौ॥
दो शांति जगको शांति जिनजी, यही मम अरदास है।
भव दुखों से होकर दुखी, आया प्रभू तुम पास है।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुख हरन मंगल करन श्रीजिन, शांति दाता आपको ।
नित जजें पूजें भजें भविजन, मेंटिए भव ताप को ॥
जग में ज़िते हैं जीव सबको, परम साता दीजिये ।
आवे शरण में नाथ उसकी, लाज तो रख लीजिये ।३।
राजा प्रजा सब हों सुखी, सब धर्म मारग पै चलें ।
दुर्भिक्ष, चोर, ठगी, महामारी, सभी बाधा टलें ॥
सब जीव दया धरम ग्रहें, सब ईति भीति विनाश हो ।
है शान्तिनाथ प्रसाद तुम्हरे, धर्म मार्ग प्रकाश हो ।४।
नित करूं शास्त्राभ्यास, सत्संगति करूं मुनिराज की ।
वच सत्य हित मित ही कहूं, चर्चा धरम के काज की ॥
जानूं न पूजा विधि प्रभू, जानूं न अक्षर वरण मैं ।
धरि भक्ति कर युग जोरि प्रणमूं, नाथ थारे चरण मैं ।५।
तुम पद धरूं निज मन विशें, मन रहै तुम पद लीन है ।
छोड़ूं न प्रभु का साथ जब तक, होय भव दुख क्षीण है ॥
अन्याय और अधर्म से, बचता रहूं हे नाथ मैं ।
सब अवगुणों से दूर रह, तुम चरण नाऊं माथ मैं ।६।
तुम नाथ शान्ति स्वरूप, करिये शान्ति सब संसार में ।
अवलम्ब देकर पार करिये, डूबते मंझधार में ॥
अन्तिम यही है प्रार्थना, भव भ्रान्ति मेरी शान्ति हो ।
हो जाऊं तुम सम शांति जिन, मो हृदय ऐसी क्रान्ति हो ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सोरठा)

शांति शांति जिनराज, शांति करौ सब जगत में ।
'भगवत्' सेवक लाज, रखनी होगी आपको ॥

॥ शांतिधाराय परिपुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

* विसर्जन *

(छप्पय छन्द)

जाने या अनजान, रही जो चूक हमारी ।
क्षमा करौ सो नाथ, शरण मैं लई तुम्हारी ॥
जानूं नाँ आह्वान, ना जानूं पूजा विधि को ।
क्षमों क्षमों सब दोष, दीजिये प्रभु निज निधि को ॥
नहीं विसर्जन ज्ञान है, न है मुझे कुछ होश ।
अज्ञानीं हूं अति निपट, क्षमों क्षमों सब दोष ।
मंत्र हींन, धन हींन हींन, क्रिया से हीन नाथ हूँ ।
ना कोई साथी संगा, प्रभू दुखिया अनाथ हूँ ।
भक्ति करन का ज्ञान, नहीं मुझको कुछ देवा ।
मैं तो भव दुख हरन, करी प्रभु चरणन सेवा ॥
आये जो जो देव यहाँ, जाहु सभी स्वस्थान को ।
'भगवत्' पार लगावना, रखना इतने ध्यान को ॥

इति पूजन यज्ञ विधान सम्पूर्णम् ।

***

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रचयिता

द्रव्यदाता

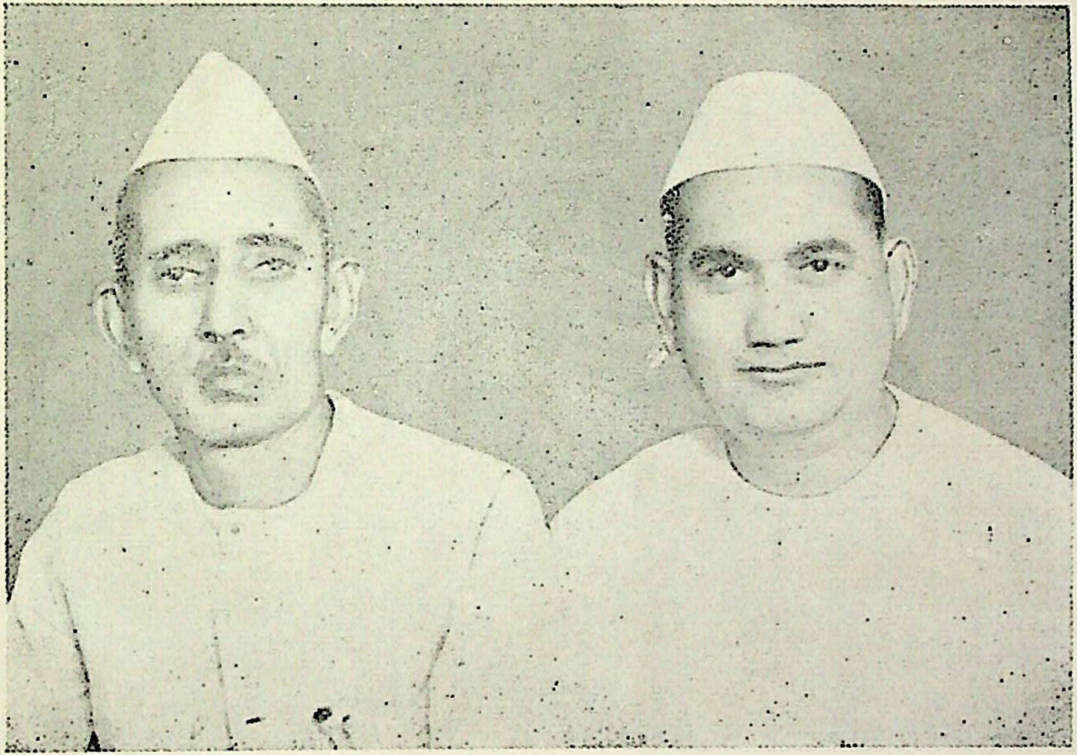

पं० भगवतस्वरूप जैन, फरिहा }   बड़वानी यात्रा स्मृति   { सेठ सुनहरीलाल जैन, आगरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धार्मिक साहित्य के लेखक

ऋषभनगर क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्त्ता, धर्मप्राण श्री भगवतस्वरूप जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। आरती श्री ऋषभदेवजी की ।।

ॐ जय ऋषभदेव देवा, सुर नर मुनिगण थारी।
स्वामीं करें चरण सेवा। ॐ जय०।
सरवारथ से चयकर स्वामी, मात गरभ आये।
पन्द्रह मास अवध नगरी सुर, रतन सुवर्षाये। ॐ जय०।
ऋषभदेव देवा सुरनर मुनिगण धारी,स्वामी करें चरन सेवा।
लाख तिरासी पूर्व भोग, भोगे जग के भारी।
नीलाँजना मृत्यु को लखकर, बने सुतपधारी। ॐ जय०।
तप बल से घातिया चूर कर, केवल पद पाया।
समोशर्ण में अन्तरीच, राजें अद्भुत माया। ॐ जय०।
दिव्यधुनी सुनि मिटी असाता, भव बाधाहारी।
सुरनरेन्द्र चक्री खग पूजें, गुण गावें भारी। ॐ जय०।
तुमने ही इस अंध जगत, शिव मारग दर्षाया।
तुम वाणी से जीव अनन्ते, शिवपद को पाया। ॐ जय०।
अशरण शरण दयाल, जगोत्तम हे संकट हारी।
भवसागर से पार लगावौ, शरण लही थारी। ॐ जय०।
करूं आरती दीप जलाकर, मोह अन्ध जारो।
बार२ है यही प्रार्थना, भवसागर तारो। ॐ जय०।
'भगवत्' दास बास है फरिहा, सदा चरण चेरा।
ऋषभनगर नित जजै प्रभू पद, मिटै सुभव फेरा। ॐ जय०।
देवदेवा,सुरनर मुनिगण थारी,स्वामीं करें चरण सेवा।ॐजय०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं असार यह भोग घिनाँशो, भोगों ने डाली गल फाँसी ।
भोगत भोग होय जिय अंधा, कठिन होय भोगों का फंदा ।१७।
मन वैराग्य हुआ जब जाना, लौकान्तिक सुर थुति की नाना ।
धन्य प्रभू तुम धन्य विचारा, तारणतरण विचार तुम्हारा ।१८।
स्वयंबुद्ध हम क्या समझावें, निमित पाय पद वन्दन आवें ।
जैजै जै जगपति जगनाथा, कर युग जोरि नमें पद माथा ।१९।
आ सुरेन्द्र शिवका पधराये, प्रभु गृह तजि अब वन को धाये ।
भूमि गोचरी लेकर चाले, पुनि विद्याधर कंधा घाले ।२०।
पुनः सुरगवासी सब देवा, शिवका ले कीनीं प्रभु सेवा ।
बनमें जाय परिग्रह त्यागी, बने दिगम्बर प्रभु वैरागी ।२१।
धन्य २ जै जै हुई वाणी, पुष्पवृष्टि नभ दुन्दभि बाणी ।
अनहद बाजे देव बजाये, सुर, नर, खग, सब शीश नवाये ।२२।
प्रभु कचलुंच मुंच सब आशा, खड्गासन करि दृष्टि सुनाशा ।
हुये ध्यान में लीन अखंडा, मेरु समान अचल जिम दंडा ।२३।
याग निरोध योग प्रभु दीना, षट महीना का मोह न कीना ।
मारीचादि योग जो धारा, भ्रष्ट भये तप कठिन करारा ।२४।
ध्यान करत षट मास व्यतीते, मुनि अहार विधि बिना फजीते ।
धन धान्यादि भेंट बहु लाये, जहाँ २ प्रभु गमन करामें ।२५।
अन्तराय नित २ हो जावै, प्रभु जाकर वन ध्यान लगावै ।
षट महीना बीते इस रूपा, गजपुर पहुँच गये भूपा ।२६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राय श्रेयांस पूर्व भव जाना, मुनि के भोजन की विधि नाना।
देखत ही प्रभु को पड़गाया, देय इक्षुरस बहु सुख पाया ।२७।
पंचाश्चर्य सुरग से होई, धन्य २ कहते सब कोई।
धन्य दान दानी यह राजा, धन्य पात्र जग का सिरताजा ।२८।
ध्यान खड्ग सों कर्म बिदारे, चार घातिया प्रभु संहारे।
प्रगटा केवल बोध महाना, कोटि सूर्य द्युति दीप्ति प्रधाना।२९।
दर्श ज्ञान है वल सु अनन्ता, सुख अनन्त राजत भगवन्ता।
सुगुण छियालीस धरें जिनेशा, दोष अठारह रहत दिनेशा ।३०।
समवशरण रचना सुर कीनीं, जग विभूति जामें रचि दीनीं।
द्वादश सभा बनायीं भारी, मुनि आर्या नर सुर औ नारी ।३१।
पशु देवी सबही यहाँ आए, जगन्नाथ को शीश नवाये।
अलग २ सब बैठे जाके, हर्ष मनावें प्रभु गुण गाके ।३२।
मध्य प्रदेश वेदिका भारी, सिंहासन पर कमल निहारी।
अन्तरीक्ष चतुरानन स्वामी, बैठे घट २ अन्तर्यामी ।३३।
वृषभसेन गणधर गुरु ज्ञानी, समझाते प्रभु खिरै जु बाणी।
मुनि श्रावक का धर्म बताया, जगको मोक्ष मार्ग दर्शाया।३४।
जो जन नाथ शरण में आया, उसे प्रभू भव पार लगाया।
अधम उधारन विरद तिहारा, मेरा बेड़ा कीजै पारा ।३५।
मैं दुखिया बहु कर्म सताया, कठिन २ करि तुम तक आया।
मेरे तो बस तुम्हीं सहारे, मुझे करो भव सिन्धु किनारे ।३६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं सेवक हूँ नाथ तुम्हारा, मुझको दीजें शीघ्र सहारा।
मैं हूं तुम चरणों का चेरा, मैंटो मेरा भव का फेरा।३७।
ना मैं सुत वनिता सुख चाहूँ, ना मैं धन ऐश्वर्य लुभाऊं।
चाहूँ यही मिटे भव फेरी, अर्ज सुनों भगवन् यह मेरी।३८।
दास आश करि शरण गही है, शरण गहे की लाज रही है।
अब विलम्ब मत कीजै स्वामी, मेंटो भव दुख अन्तर्यामी।३९।
मंगलरूप जगोत्तम देवा, शरणभूत लखि की पद सेवा।
हे जगदीश्वर जग के खेवा, देहु मुझे शिवपद की मेवा।४०।
आदि ब्रह्म आदीश्वर नामीं, ऋषभदेव शत वार नमामीं।
भगवत् सेवक शरण तुम्हारी, तुम्हीं रखोगे लाज हमारी।४१।

[दोहा]

फरिहा वास छुटाय के, करौ शिवपुरी वास।
बार २ यह प्रार्थना, करता 'भगवत्' दास॥
यह चालीसा कंठ करि, नित्य करै जो पाठ।
सुख समृद्धि नित २ बढ़ै, मिटैं कर्म जो आठ॥

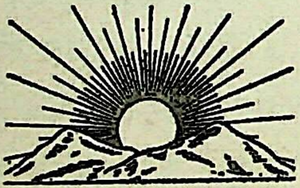

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❀ भगवत्प्रार्थना-गान ❀

(तर्ज—रतन थेट्रर)

***

श्री ऋषभदेव भगवान, शरण ली आन, चरण का चेरा।
मैं सेवक हूं प्रभु तेरा।
भटकत भटकत इस भव वन में, सुख शांति न पाई इक क्षण में।
मैं सहा महा दुख घोर, न पाया छोर, कर्म रिपु घेरा।
मैं सेवक हूँ प्रभु तेरा।१
बहु काल अनादि गमाया है, चतुगति में भ्रमण कराया है।
लख चौरासी भव धरे, जनम धरि मरे, किया बहु फेरा।
मैं सेवक हूं प्रभु तेरा।२
पर को ही मैं अपना माना, अपना निज रूप नहीं जाना।
यह मेरे माता पिता, मेरे सुत साता, नारि घर मेरा।
मैं सेवक हूं प्रभु तेरा।३
भोगत न भोग हुआ तृप्ति हिये, भोगों के लिए बहु पाप किये।
हिंसा चोरी व्यभिचार, झूँठ उच्चार, परिग्रह ढेरा।
मैं सेवक हूँ प्रभु तेरा।४
धन नहीं तो रोया मैं धन को, धन पाया तोष नहीं मन को।
धनमद में भूला सभी, न सोचा कभी, न प्रभु को हेरा।
मैं सेवक हूँ प्रभु तेरा।५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहाँ गया वहाँ ठोकर खाई, दुनियाँ स्वारथमय दिखलाई।
अब आया थारे पास, सुनों अरदास, करम ने पेरा,
मैं सेवक हूं प्रभु तेरा ।६

है दीन दयाल बिरद थारा, भव बन्धन काटौ प्रभु म्हारा
मिट जावै भव का फेर, करौ ना देर, हरौ दुख मेरा।
मैं सेवक हूं प्रभु तेरा ।७

कपि, स्वान, सिंह, शूकर तारे, अंजन से पापी उद्धारे।
अगणित जन दीने तार, करौ मोहि पार, न कीजै बेरा।
मैं सेवक हूं प्रभु तेरा ।८

मैं दीन दुखी जन संसारी, अब आय शरण लीनी थारी।
मम दूर करौ संताप, दयानिधि आप, करौ निराबेरा।
मैं सेवक हूं प्रभु तेरा ।९

मेरे तो तुम्हीं सहारे हो, आराध्य देव मन प्यारे हो।
"भगवत्" चरणों का दास, रहै नित पास, सुसांझ सबेरा।
मैं सेवक हूँ प्रभु तेरा ।१०

5305

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

...र्मिक बन्धुओं को ज्ञान दान करने का शुभावसर

[छपवाकर बाँटने योग्य धार्मिक कविता]

—o—

"जिनवाणी माहात्म्य" अर्थात् श्री सुकमाल महामुनि ...रित्र अनेक छन्दों युक्त जो कि—पूर्व भवों सहित तीन स...धियों में हैं। जिसमें एक जन्म अंध चांडाली मृत्यु समय जैनवाणी को सुन कर तीसरे भव में ही सुकोमल तन सुकमाल सेठ पद प्राप्त कर अन्त समय महान् तप धारण कर घोर उपसर्ग जीत कर सर्वार्थ सिद्धि पद प्राप्त कर लेती है। इसका सविस्तार वर्णन है। जो कि—सांगीत पर पढ़ने योग्य है। दूसरी "शील माहात्म्य" अर्थात् सुखानन्द मनोरमा के शील की परीक्षा, जो कि—ग्रामीण तथा शहरी जैना-जैन जनता के समझाने योग्य स्टेज पर नौटंकी के रूप में सांगीत पर खेलने योग्य रचना, "भगवत् लामनीं संग्रह" "भगवत् भजन संग्रह" "विष्णुकुमार अकंपनादि मुनि पूजा" ...स्त्रियोचित धार्मिक गायन ज्योंनार झूला आदि आदि।

पत्र व्यवहार का पताः———

भगवत्स्वरूप जैन 'भगवत्' मु० पो० फरिहा, मैंनपुरी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवश्य दर्शन कीजिये ! अवश्य २ दर्शन कीजिये

शान्ति निराकुलता का अद्भुत स्थान

पाँच सौ वर्ष प्राचीन

श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र ऋषभनगर (मरसलगंज) आगरा

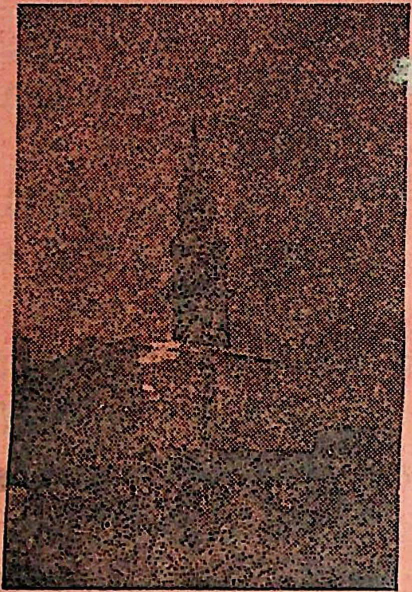

"यह महान चमत्कारी क्षेत्र है, यहां एक हजार वर्ष प्राचीन अतिशययुक्त मनोवांछित फलप्रदाता आदिजिन की प्रतिमाजी है तथा महामनोहर श्वेतवर्ण, विशालकाय पद्मासन प्रतिमा जी का दर्शन है, इतनी विशाल पद्मासन प्रतिमा जी भारत भर में अन्यत्र कहीं नहीं है, दर्शन कर अतुल पुण्य संचय कीजिये यहां का दर्शन कर आपको अपार आनन्द प्राप्त होगा। अतः एक बार अवश्य दर्शन करें। निवेदक—भगवत् जैन, सहायक—मन्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi